भारत की नजर में वैश्विक व्यवस्था

जीवंत एवं कारगर वैश्विक व्यवस्था के लिए विवेचनात्मक दृष्टि प्रपत्र

नरेंद्र अग्रवाल

के विभिन्न व्याख्यानों एवं साक्षात्कारों से

संकलन, प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन

बंदना चौधरी

प्रकाशक : बंदना चौधरी
प्रथम प्रकाशन – 26 जनवरी 2025, भारत

प्रकाशक : बंदना चौधरी
प्रथम तल, सी-6, अंबिका नगर,
शक्तिनत, भरूच, गुजरात (392001)
वेबसाइट: resurrectionofdharma.com,

निर्देशिका:

क्रम संख्या **पृष्ट संख्या**

1. पुस्तक के सम्बन्ध में 4
2. जीवंत वैश्विक व्यवस्था बनाने के लिए करने वाले आवश्यक कार्यों का अवलोकन, 6
3. एक कहानी, कहानी से उपजे कुछ विचारणीय प्रश्न: 14
4. अंर्तजगत (तथाकथित शैतान एवं साधु, संत) में समस्यायों के बारे में व्याप्त चर्चा, 17
5. आध्यात्मिक जगत में समस्यायों के बारे में व्याप्त चर्चा, 21
6. अंर्तजगत एवं आध्यात्मिक जगत में व्याप्त चर्चाओं से उपजे प्रश्न और उनके उत्तर, 27
7. बीसवीं सदी में दिखाई देने वाली समस्याओं की विवचेना 35
8. समस्याओं का समाधान एवं सम्बंधित प्रश्न उत्तर 42
9. परिशिष्ट:

परिशिष्ट-9.1: भारत - क्या, क्यों कैसे, कुछ प्रश्न-उत्तर, 73

परिशिष्ट -9.2: स्वास्थ्य के लिए कैसा, कितना एवं किस समय अन्न-जल ग्रहणीय है 77

परिशिष्ट-9.3: समाज के द्वारा शिक्षा का प्रचालन 80

परिशष्ट- 9.4: स्वास्थ्य - स्व मे स्थिति 85

परिशष्ट-9.5: अन्न, अन्न की शुद्धता, किसान, आदिवासी, बागवान का उत्तरदायित्व 88

परिशष्ट -9.6: आस्था के केंद्रों द्वारा सफाई एवं स्वच्छता का रखरखाव 92

परिशष्ट-9.7: समाज में सभी को काम/रोजगार देने की व्यवस्था 97

परिशष्ट-9.8 न्याय व्यवस्था - विकृति में समज को नयापन देने की व्यवस्था 104

परिशिष्ट-9.9: समाज में अश्लील व्यवहार एवं बलात्कारों में बृद्धि 112

परिशष्ट-9.10: ऊर्जा की उपलब्धता, 117

परिशष्ट-9.11: बीमा एवं नैगमिक सामाजिक जिम्मेदारी (C.S.R), 123

परिशष्ट-9.12: समाज में नागरिकता-कौन अपना, कौन पराया, 126

परिशिष्ट-9.13 गाय एवं नंदी की दशा हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करती है, 130
परिशिष्ट-9.14: समाज एवं राष्ट्र का मुखिया कैसा होना चाहिए -139

1

पुस्तक के सम्बन्ध में

भारत की नजर में वैश्विक व्यवस्था (जीवंत एवं कारगर वैश्विक व्यवस्था के लिए विवेचनात्मक दृष्टि प्रपत्र) पुस्तक के सम्बन्ध में निम् प्रेषित है:

1. भारत एक उपाधि है और कहते है भारत ने पूर्व में इसे अपने कार्यों द्वारा स्वयं ही अर्जित किया है। भारत को परंपरागत रूप से निम्न तरह से परिभाषित किया जाता है:

i. "भारत= भा + रत (भा= रोशनी, प्रकाश, ज्योति + रत = व्यस्त होना, संलग्न होना),
भारत वह जो प्रकाशित करने, रोशन करने, ज्योतिर्मय करने के कार्यों में रत (व्यस्त, संलग्न) है ।

ii. एवं भारत = भा+र+त (भा-भाव+र-रस+त-ताल = भावयुक्त, रसयुक्त एवं लययुक्त भारत एक ऐसा स्थान जहां भाव, रस एवं ताल जिसके जीवन में चलते रहते हों अर्थात वह जो संगीतमय हो,

अर्थात भारत वह स्थान, व्यक्तियों का समूह है जो स्वयं को एवं विश्व को प्रकाशित करने में, रोशन करने, ज्योतिर्मय करने में एवं संगीतमय रखने में रत (व्यस्त, संलग्न) है।

इस परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि यह भारत का स्वाभाविक कार्य एवं उत्तरदायित्व है की जब विश्व में न्यू वर्ल्ड ऑर्डर (नयी वैश्विक व्यवस्था) की वार्ता चल रही हो तब वह इस पर भारत का नजरिया सभी के समक्ष रखे। प्रस्तुत पुस्तक इसी कार्य को पूरा करने के लिए लिखी गयी है।

2. प्रस्तुत पुस्तक श्री नरेंद्र अग्रवाल के वैश्विक व्यवस्था एवं भारतीय व्यवस्था पर वर्ष- 2018 में दिए गए बहुत से साझात्कारों (जिसमे बहुत से यूट्यूब चैनल: thedivincrate पर उपलब्ध है)

पर आधारित है। इस पुस्तक में जहाँ भी उदाहरणों या स्थितिजन्य प्रस्तुति की आवश्यकता समझी गई है वह भारत से ही है। हमारा ध्येय एक: कार्मिक समाज - धार्मिक (धर्म युक्त-धर्म निरपेक्ष) समाज, स्वस्थ समाज- सुखी समाज के पुनर्निर्माण का है, ऐसा कहा जा सकता है।

3. इसके अलावा, इस दस्तावेज़ को पढ़ते समय वेबसाइट से इसे मुफ्त में डाउनलोड करके निम्नलिखित पुस्तकों का संदर्भ लेना उचित होगा: resurrectionofdharma.com,
i.. "Something on religion and related issues-need for its assimilation, ((What, Why and how of assimilation of religion and restructuring of economics, Judiciary and administration and its urgency) - Bandana Chaudhary
ii. Mita-Life Style Agenda -मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा (सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक-राजनीतिक एजेंडा) नरेंद्र अग्रवाल,
iii. Divincracy (Divine-Democracy) - (Revisit of Hind Swaraj) By Narendra Agarwal
iv. Patanjali-परांजलि (गीतांजलि का पुनरावलोकन) - डॉ. कल्पना सेंगर
v. Dharyate iti Dharma - धार्यते इति धर्म (ताओ ते चिंग का पुनरावलोकन) डॉ. कल्पना सेंगर,
काम की बात (जल, जमीन, जंगल पर) -बन्दना चौधरी
vii. Alternate Economy by Bandana Chaudhary,

4. भारत अपने नाम को सार्थक करे इसके लिये आवश्यक होगा कि हम संवाद, सहमति एवं सहयोग की एक सतत यात्रा पुनर्स्थापित करें, एवं वर्तमान में दृष्टिगत तमाम समस्याएं का समाधान करें ।
समस्याओं के समाधान के लिए जरुरी है की वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक नेतृत्व आपस में मिले एवं मिलकर यह कार्य करें और यदि मौजूदा नेतृत्व ऐसा नहीं करता तो भारत में इन कार्यों के लिये धार्मिक, आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में हमें नए नेतृत्व का गठन करना होगा। हाँ हमें समस्याएं के समाधान के मध्य यह ध्यान रखना अति

आवश्यक होगा कि परिवर्तन के दौर में कोई अफरा-तफरी ना हो और यह संक्रमण काल आराम से निकल जाये।
भगवान भारत को आशीर्वाद, ***

बंदना चौधरी

2

जीवंत वैश्विक व्यवस्था बनाने के लिए करने वाले आवश्यक कार्यों का अवलोकन:

इस सन्दर्भ में समाज के आदरणीय एवं पूज्यनीय महानुभावों ने आशीर्वाद स्वरुप जो कहा वह निम्न है:

1). प्रकृति में कुछ भी संयोग, घटना, दुर्घटना या प्रयोग नहीं है, सब एक क्रम में चल रहा है और यदि हम प्रकृति के इस क्रम के साथ चलते है तो हम कम से कम तनाव में होते है, और बहाव का साथ देंगे तो आनंद में भी रहेंगे।

विपरीत में खडे होने के कारण-यह जो संरचना दुनिया में खडी करते है उसके कारण बहाव में बहने आले प्रकृतिस्थ लोगों को परेशानी खड़ी होनी शुरू होती है-और यहीं से टकराव की शुरुवात होती है। ऐसा देखा जाता है कि इस टकराव के कारण या तो कुछ नही सें जो विकास खड़ा किया गया वह तहस-नहस हो जाता है या इस टकराव के कारण विकास में कुछ फेर-बदल होते है-और यदि फेरबदल की श्रृंखला चली तो कालांतर में यही अच्छी व्यवस्था में परिवर्तित हो जाती है, जैसे अफरा- तफरी→ विकास एवं टकराव → बेहतर व्यवस्था।

इस युग में धीरे-धीरे यह विकास → और विकास के साथ टकराव के बाद बेहतर विकास की स्थितियाँ धीरे-धीरे कम होती जा रही है, इस कारण आज जो विकास हो रहा है वह जल्दी ही विनाश की ओर अग्रसर हो सकता है।

यदि हम प्रकृति के बहाव के विपरीत खडे होने, चलने या अपने आप को प्रदर्शित करने के प्रयास में रहते है तो सर्वप्रथम हम स्वयं तनाव में आते है, विरोध में खडे होने के कारण ज्यादा मेहनत से थकान, थकान से खीझ, चिड़चिड़ापन, गुस्सा आना स्वाभाविक है।विरोध में लंबे समय खड़े रहने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता, साधन, संसाधनों की आवश्यकता एवं नशे की आवश्यकता होती है।

आज ऐसे व्यक्ति खनिज दोहन के लिए, व्यापार के लिए रास्ता बनाने को बडे-बडे जंगल में महीनों तक आग लगाए रखने में, अलग-अलग देशों में आंतरिक आंदोलन भडकाने, असंतोष भडकाने के साथ वहां वायरस से बीमारी फैलाने से भी बाज नही आते। यह उंगलियों पर गिनने वालों का कोई ईमान धर्म नहीं बचा-ऐसा लगता है। जहाँ यह रहते है, वहाँ भी भिखारी है, बेघरवार है, वहाँ भी बीमारियां और गुलामी जैसा माहौल है।

इसके अतिरिक्त इनका एक दयालु वाला भी चेहरा है जिसके तहत यह प्रकृति बचाने, नशा विरोध, अहिंसा के लिए लोग खडे करते है, उन्हे प्रोत्साहित करते है, उन्हें ख्याति दिलवाते है, उन्हें पुरस्कृत करवाते है, उनके नाम पर पुरस्कार दिलवाते है, अपनी महत्वाकांक्षा के लिए यह तथाकथित अहिंसा के पुजारी, बचपन बचाओ के नेताओं, प्रकृति बचाने के लिए खड़े हुए बच्चे-बच्चियों को मानव से महामानव बनाते है, और इसे प्रचारित करवाते हैं।

ऐसे में संवादहीनता से संवाद की ओर आना होगा और संवाद से सहमति एवं सहमति से सहयोग की दिशा में आगे बढना होगा, तभी हम सुरक्षित है, अन्यथा-जो प्रकृति में प्रकृति के विरोध में खडे है वह पूरी पृथ्वी पर एक छत्र राज्य करने की लालसा से दो विश्व युद्धों और फिर उसके बाद

के शीत युद्ध और आर्थिक युद्ध एवं नाकाबंदी के बाद काफी आक्रामक, एवं इस आक्रामकता में बहशीपन एवं पागलपन की ओर अग्रसर है, और सब बर्बाद कर सकते है।

ऐसी स्थिति में हमारे पास क्या रास्ता है, हम खडे हो, शक्ति अर्जित करे, इन महत्वाकांक्षी सहित सभी हिस्सेदारों से संवाद करे और समन्वित बढ़ोत्तरी, विकास एवं खुशहाली का माहौल बनाए, नहीं तो बर्बादी पक्की है।

2). अच्छे दिन आयेंगे ही- पूरी पृथ्वी पर इंसान हो सकता है-अलग रंग, कद-काठी, रंग-रोगन, शक्कल-अक्कल, खानपान, वेशभूषा, भाषा, विज्ञान, कला अपनाए लेकिन आंतरिक रूप से इंसान एक ही है) और यह हम सबको मिलकर लाना होगा, कैसे होगा–क्या होगा?, क्या-क्या करना होगा?, कब करना होगा?, कहाँ करना होगा? कौन क्या करेगा? यह सब मिलकर तय करना होगा, जिसके लिए जरूरी होगा हम सब अपने पर एवं एक दूसरे पर भरोसा करें-एवं खुले मन से-खुले दिल से एक संवाद शुरू करें, सभी (सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक) विषयों पर, संवाद के सारांश पर सहमति जताये एवं उसे परिणाम तक ले जाने के लिए परस्पर सहयोग करें एवं पूर्ण होने पर उसकी समीक्षा करे, कोई और सुधार की जरूरत हो तो सुधार करें और एक ऐसी सुव्यवस्था बनाएँ जिसमें जो वह संवाद, सहमति एवं सहयोगात्मक कार्य एवं उसकी समीक्षा से प्राप्त किया वह सुचारू रूप से हम सब के लिए एवं आने वाली भविष्य की संतानों के लिए चल सकें।

प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक स्थल पर एक केंद्र का प्रचालन शुरू करें जहाँ लोग अपनी समस्या, सामाजिक समस्या या सांसारिक समस्याओं पर विचार विमर्श करें, परेशानी में एक-दूसरे या अनजान का भी सहयोग कर सके, और आपदा की स्थिति में सुरक्षा, संरक्षण, सहायता पा सके। यह केंद्र बच्चों को, महिलाओं को एवं पुरुषों को उनके अपने क्षेत्र में सलाह-सहयोग दे-उनकी बात सुन सके-जिससे कम से कम रोजमर्रा के घरेलू एवं आपसी झगड़े निपट सके और किसानों, विद्यार्थियों की आत्महत्या की घटनाएं तो रुक सके।

हर क्षेत्र में ऐसे केंद्र-बुद्धिमत्ता सूचना, सलाह, समन्वय एवं सहयोग स्थल के रूप में कार्य कर सकें-की आवश्यकता है-जो समाज को खडे करने होंगे, राजकीय सहयोग के साथ लेकिन बिना राजकीय नियंत्रण के; जिससे समाज में जीने के कार्य और कला समायोजित रहें।

3). कहावत है - "अंधेर नगरी, चौपट राजा-टके सेर भाजी, टके सेर खाजा (टके सेर = एक पैसे/रुपये किलो)"-कि जहाँ न्याय नहीं होता वहाँ मिठाई एवं सब्जी एक ही भाव में मिलती है, और ऐसा राज्य चौपट/बर्बाद हो जाता है। आज भी मौजूदा न्याय व्यवस्था को देखकर कहावत सही प्रतीत होती है।

पूरी स्थिति ठीक है तो कहा जाता है कि इस समाज में, इस देश में, चीजें अच्छी चल रही है -यहाँ न्याय है, और यदि चीजें ठीक नहीं चल रही है तो कहा जाता है कि यहाँ कोई न्याय ही नहीं है, सब और अराजकता है, जिसका मन आये, वह लूट ले, सज्जनों की सुनवाई नहीं, बदमाशों को कोई डर नहीं है, ऐसे में आज यदि देखे तो समाज एवं देश की पूरी की पूरी स्थिति, में प्राथमिक रूप से न्याय व्यवस्था का ठीक ना होना कहा जा सकता है।

अभी की व्यवस्था में न्याय की कीमत, सिरदर्दी एवं समय, अधिकांशतः अन्याय सहन करने से ज्यादा हो गयी है, इसलिए लोग शिकायत नहीं करते, और ऐसा प्रतीत होता है कि सब ठीक ठीक ही तो चल रहा है। कही न कही हर एक व्यक्ति के मन में व्याप्त असुरक्षा, व्यवस्था को सुरक्षा दे रही है। इसके अतिरिक्त कहते है कि यदि शासन निरंकुश हो जाये तो जनता अंकुश में रहती है, इसलिए क्रूर शासकों के समय या भारत में गुलामी के दौर में जब खुले में फांसी और हर तीन-चार माह में एक दो फांसी दे दी जाती थी तब यही न्याय व्यवस्था काम चला ले जाती थी।

आज की मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था में-बच्चा-बूढा, छोटा-बड़ा, ज्ञानी-अज्ञानी, शैतान-संत, चोर-पुलिस, जज-अभियुक्त, सब एक बराबर, सबका एक बोट-टके सेर भाजी-टके सेर खाजा, यह कैसे अच्छा हो सकता है और कैसे अच्छा कहा जा सकता है?

अंग्रेजों द्वारा दी हुई मौजूदा न्याय व्यवस्था ने स्वतंत्रता के सत्तर वर्षों में स्थिति को और भी गंभीर ही बनाया है, जरूरत है वैकल्पिक न्याय व्यवस्था की जैसे जूरी व्यवस्था, पंच-सरपंच की व्यवस्था, पचहत्तर वर्ष से ऊपर के सन्यासी द्वारा न्याय की व्यवस्था इत्यादि, जिससे न्याय में निष्पक्षता के साथ-साथ समसामयिकता एवं सार्वभौमिकता बनी रहे।

भारत का संविधान स्वयं कभी आम जनता के मध्य नहीं चुना गया - इसलिये आज भारत में सही मायने में लोकतंत्र की जगह प्रतिनिधि लोकतंत्र चल रहा है, इस लोकतंत्र में न तो इहि-लोक संवरता है न परलोक। आज का Democracy लोकतंत्र पता ही नहीं चलता कि मृत्यु लोक का तंत्र है या शैतान लोक का तंत्र है या पृथ्वी लोक का, यह अंग्रेजी में Demo-व्यक्ति की जगह है DEMON - शैतान एवं हिन्दी में-लोकातंत्र की जगह कालो-तंत्र व्यवस्था है, जिस कारण वर्तमान लोकतंत्र में संसद भी न्याय व्यवस्था से छेड़छाड़ करने की स्थिति में नहीं है, “ऐसे में सिर्फ एक ही विकल्प बचता है-जनमत संग्रह” इस पर व्यापक एवं खुलकर चर्चा हो और मौजूदा न्याय व्यवस्था (अंग्रेजों द्वारा दी हुई) को जनमत संग्रह द्वारा ठीक किया जाये?

4). व्यवस्थाये भ्रष्ट हो गई है और यह भ्रष्ट व्यवस्थाये भी अंदर तक सड़-गल गयी है और यह ऐसा ही लम्बे समय से चल रहा है-इसके परिणाम स्वरूप जनता भी इन्हें स्वीकार चुकी है और कहीं ना कहीं जनता अपने को भी भ्रष्ट कर चुकी हैं।

*भारत एवं अन्य देशों में वास्तव में भ्रष्टाचार था नहीं, गुलामी के दौरान भारत में व्यवस्था के अंदर इसका कृत्रिम गर्भाधान कराया गया और सबसे पहले बीट कांस्टेबल को इस काम पर लगाया गया और उससे कहा गया कि तुम अपने क्षेत्र में शासकीय लगान/कर के अतिरिक्त सुरक्षा देने के नाम पर लोगों से, व्यापारियों से, पुलिस के लिये पैसा एकत्रित करो। फिर यह पैसा पुलिस एवं प्रशासन के अन्य सरकारी महकमों में बटवायाँ गया और इन सभी सरकारी कर्मचारियों को वेतन से अतिरिक्त खर्च की आदत डलवायी गयी। पुलिस के बीट कांस्टेबल के

द्वारा इस अतिरिक्त उगाही को, स्थानांतरण, पदोन्नति के द्वारा प्रबंधित एवं नियंत्रित किया गया।

एक बार अतिरिक्त खर्च कि आदत कर्मचारियों के घर के सदस्यों को लग गयी तब उनसे अधिकारियों द्वारा कुछ भी कार्य कराना आसान हो गया और इस तरह शासन की पकड़ अपने कर्मचारियों पर उनकी नैतिकता के ऊपर हो गयी और अंग्रेजों को (या कहे किसी भी शासक को) अपनी मर्जी से कर्मचारियों से अनैतिक कार्य कराना भी आसान हो गया। इस खुली लूट को शासकीय न्याय व्यवस्था से रक्षित, प्रतिरक्षित एवं पोषित करवाया गया (एक तो कोई पुलिस के भ्रष्टाचार के खिलाफ पुलिस में ही शिकायत करेगा नहीं, इसके बाद यदि किसी ने शिकायत कर भी दी तो न्यायालय अपनी कार्यशैली के द्वारा इसे लम्बा खींचेगा एवं फिर बहुत समय बाद पर्याप्त साक्ष्य ना होने की बिना पर आरोपित कर्मचारियों को बाइज्जत बरी करने के व्दारा)।

आज भी यदि देखे तो कार्यशैली लगभग यही है। आज यह व्यवस्था में उस अमरबेल की लता/जड़ कि तरह हो गयी कि यदि कोई सख्त शासक प्रशासक आया भी तो कुछ समय ऐसा लगेगा कि सब ठीक हो गया है, लेकिन जैसे ही प्रशासक बदलेगा, सत्ता परिवर्तित होगी यह अमरबेल जैसी भ्रष्टाचार की लता फिर फलने फूलने लगती है। इस भ्रष्टाचार को कम करने के लिये न्याय व्यवस्था जो भ्रष्टाचार को रक्षित प्रतिरक्षित पोषित करती है को बदलना होगा।

5). सत्ता में राजनैतिक पार्टियों के परिवर्तन से बहुत ज्यादा फर्क पड़ता नहीं। देश में इतने चुनाव एवं इतने नेता हो गये कि काम करने वाले किसकी सुने और किसकी ना सुने? सब कुछ व्यापारिक हो गया है, समाचार भी। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय जो बेहतर समाज के लिए दान एवं सहयोग पर आधारित होने चाहिए, वह आज सबसे खर्चीले और खून-चूसू हो गये हैं।

अन्याय बढ़ता जा रहा है, गरीबी बढ़ती जा रही है, गरीबी-अमीरी में अंतर बढ़ता जा रहा है, देश की मुद्रा का अवमूल्यन होता जा रहा है, भिखारियों की संख्या भी इतनी बढ़ गयी कि भीख भी मिलना मुश्किल हो गया-अच्छे कामों के लिए सहयोग तो दूर की बात है?

6).आज हम किसी दूसरे शहर में घूमने या किसी काम से जाये-जहाँ हमें कोई व्यक्तिगत तौर पर जानता न हो-ऐसे में यदि हमारा पैसा एवं सामान-ल ु ट जाये, चोरी चला जाये, छूट जाये तो हमें समझ ही नहीं आता कि हम मदद के लिये कहाँ जाये,
न्यायालय, पुलिस, जिलाधिकारी, विधायक, सांसद, मंदिर, मस्ज़िद,
चर्च, गुरुद्वारा कहाँ जाये? जो हमें खाना दे दें और घर वापिस जाने का किराया दे दें (जो हम उसे घर पहुँच कर धन्यवाद सहित वापिस भी कर दें)।

आज स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष बाद भी हम देश भर में एक भी जगह ऐसी खड़ी नहीं कर पायें? ऐसे में सिर्फ एक ही विकल्प बचता है कि इस पर व्यापक एवं खुलकर चर्चा हो और ऐसे केंद्र बनाये जायें जो इस इंटरनेट के युग में इस सूचना की भरमार के बीच में सही जानकारी दे दे, परेशानी में हमारा सही मार्गदर्शन कर दे हमें खाना खिला दे और हमारी मदद कर दे।

7). जिन पंच तत्वों से जीव एवं प्रकृति बनती है एवं चलती है-जल, वायु, धरती (भौतिक पदार्थ) एवं आकाश (खाली स्थान) उन सभी के अनुपात का संतुलन बिगडा है-इस असंतुलन के फलस्वरूप प्रकृति का मन एवं मनुष्य का मन रुग्ण हुआ है जो आपसी संबंधो पर असर डालती है और जीवन मे झगडे बढाती है तथा सुख कम करती है। हमारी आस्था डगमगायी है और हमारे आस्था के केंद्रों की हालत बिगड़ी है, हमारे आस्था के केंद्र सिर्फ सामान्य कर्मकांड के स्थान या कर्मकांड के साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य के व्यापार के केंद्र भर रह गये है और वह भी समाज के न होकर कहीं निजी, कहीं यह सीमित (ट्रस्ट या भ्रष्ट) समिति के और कही यह शासकीय हो गये है।

मन से शरीर को गति मिलती है, मानसिक प्रदूषण से शारीरिक दुर्बलता आती है, अगर मौजूदा प्रदूषण को देखें तो भारत एवं विश्व में यह धर्म के क्षेत्र में अधिकाधिक (मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा सबने लाउडस्पीकर लगा लिये हैं), शासन के क्षेत्र में उसके बाद, दृश्य, श्रव्य एवं लिखित समाचारों एवं प्रसार माध्यमों में वाद-विवाद के रूप में, सामाजिक क्षेत्र में देखे तो वाहन प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण, कबाड़ी एवं घूम घूम कर शोर मचाते हुए सामान बेचने वालों के रूप में एवं परिवारिक एवं व्यक्तिगत रूप से देखे तो संबंधों एवं जीवन शैली में प्रदूषण एवं भ्रष्टता, हमारे अपने भ्रष्ट आचरण के रूप में दिखाई देती है।

8). समाज में 'हम से मैं' महत्वपूर्ण हो गया है और अर्थव्यवस्था जो जमीन एवं जमीन के ऊपर पर निर्भर थी वह जमीन एवं जमीन के नीचे या अंतरिक्ष पर निर्भर हो गई है।

विकास करने के नाम पर बढ़ोतरी बाधित हुई है। सारा ध्यान जी.डी.पी. पर देने के कारण प्रसन्नता बाधित हुई है, जी.डी.पी. पर ध्यान केंद्रित रखने से धनी का धन, बीमार की बीमारी, बदमाश की बदमाशी एवं गरीब की गरीबी बढ़ी है, दो विपरीतो में (जिनके पास है एवं जिनके पास नहीं हैं - जैसे अमीरी-गरीबी) अंतर बढ़ा है।

देश मे, समाज में, परिवार मे व्यक्ति की प्रसन्नता इस आशय से मापी जा सकती है कि वह बीमारी, अशिक्षा, लड़ाई-झगड़ा, व्यवस्था से जूझने में अपना पैसा/सामर्थ, व्यय करता है या प्रेम, सौहार्द, सेहत एवं स्वच्छता, ज्ञान एवं विज्ञान, अनुसंधान एवं अन्वेषण में, ऊर्जा, मनोरंजन, सुरक्षा, दान-दक्षिणा में निवेश कर रहा है। हम सब की बर्बादी इस आशय से मापी जा सकती है कि हम नशा, लड़ाई-झगड़े, भोग-विलास, में कितना व्यय या कहें कितना अपव्यय कर रहे हैं। मानव जाति के सर्वांगीण सुखमय जीवन के लिए आवश्यक है कि हम अपने विकास या बढ़ोतरी को मापने का पैमाना जी.डी.पी.-से सकल प्रसन्नता अनुपात (जी.एच.आर/आई Gross Happiness ratio/index) रखें।

सोने की लंका जला दी जाती है एवं सोने की चिड़ियाँ लूट ली जाती है, जरुरत है जीवंतता की-जरुरत है जल-जमींन-जंगल में स्वस्थ जीव जन्तुओ की एवं इनके मध्य पूरी धरती (अर्थ) पर टिकी एक समन्वित व्यवस्था की एक-अर्थ (धरती, पैसा, उद्देश्य) व्यवस्था-अर्थव्यवस्था की।

9). रिलीजन (हिंदू, बौद्ध, ईसाई, जैन, मुस्लिम, रजनीश वाद) एवं रिलीजन जैसे विभिन्न वाद जैसे-पूंजीवाद, साम्यवाद, एवं राजनैतिक दलों का समाजवाद इत्यादि ने लोगों को मानसिक गुलाम बनाया है एवं अपने आकर्षण करने वाले प्रवचनो द्वारा इस गुलामी को व्यक्तियों की उनके स्वयं के हित में सहयोगी बताया है। यह मानसिक गुलामी, शारीरिक या भौगोलिक गुलामी से किसी भी मायने में कम नहीं आँकी जा सकती है? अगर मेरा मन तुम्हारे अनुसार या हमारा मन किसी एक रिलीजन या वाद के अनुरूप चलता है, या भारत में जैसे अभी भी अंग्रेजों के नियम चल रहे हो तब हमारी, तुम्हारी, या भारत की स्वतंत्रता कितनी है? क्या इसमें जीवन की शाश्वतता एवं सनातनता को अपनाने की सामर्थ है? इस विषय पर गहरे संवाद की जरूरत है-जिससे हम शारीरिक एवं मानसिक रूप से गुलामी से मुक्त हो सकें और स्वावलंबन या परस्पर निर्भरता की ओर अग्रसर हो सकें।

10). भारत के लिए खासतौर पर यह ध्यान देने की बात है कि भारत की गतिविधि का केंद्र क्या होता है? बिहार में कहते है, भारत की शान-त्रेता युग में विहार-नेपाल-उत्तर प्रदेश के रास्ते दक्षिण में श्रीलंका तक जाती है, वही दूसरे युग में उत्तर प्रदेश, गुजरात के रास्ते उत्तर भारत की ओर जाती है, वही आज के युग में भारत की शान तभी तक रही जब तक बिहार आबाद रहा, उत्तरी भारत सुरक्षित रहा-कहते है-दिल्ली तो हमेशा झगडे की जड़ रही है, आने वाले समय के लिए भारत की गतिविधि (राजधानी) का केंद्र का चुनाव करने के लिए ज्योतिष शास्त्र का सहयोग अच्छा रहेगा।

इन मूल प्रश्नों एवं देश दुनिया की अन्य समस्याएं जैसे-धन का विभाजन, श्रम का विभाजन, रोजगार की उपलब्धता, मशीनों का सम्यक प्रयोग, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की मुफ्त एवं सर्व-

सुलभता, स्वच्छता, खेल, मनोरंजन, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा एवं सबसे महत्वपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं भौगोलिक सुरक्षा के समाधान के संदर्भ में बुजुर्गों एवं महात्माओं ने जो कहा वह सभी के अवलोकन, आवश्यक सुझाव एवं सहयोग हेतु इस अभ्युत्थान दृष्टि प्रपत्र के रूप में प्रस्तुत है। ***

3

<u>एक कहानी, कहानी से उपजे कुछ विचारणीय प्रश्न</u>

कुछ भले लोग अपनी आय का दस प्रतिशत अपने एक ऐसे साथी को देते थे-जो समाज में सामूहिक कार्यों के लिए कार्यरत हो गया था। जब भले लोग बहुत वर्ष काम करने के बाद स्वदेश लौटे तो उन्हें अपने साथी से मिलने की इच्छा हुई और यह देखने की भी कि आखिर उनके द्वारा भेजे हुए पैसे का क्या हुआ। इस इच्छा से इनमें से एक सदस्य अपने साथी (जो अब उस समाज में जहाँ है वह बाबा जी के नाम से जाना जाने लगा था) के पास पहुँचा। परंपरागत मिलन के बाद बाबाजी ने दोस्त से कहा कि कुछ दिन यहां रुको और देखकर जाओ।

दोस्त ने, काफी कुछ देखा कि लोग यहाँ सम्मान के साथ आते हैं,आने के बाद वहाँ वह बेखबर होकर विचरण करते हैं,इस क्षेत्र में कोई डर नहीं है-लेकिन एक बात जो उसे अजीब लगी की एक पूरी की पूरी भीड़ सवेरे शाम खूब खाना खाती है, हँसती खेलती रहती है और कोई भी काम नहीं करती। करीब एक सप्ताह देखने के बाद दोस्त ने उस भीड़ जो चालीस-पचास व्यक्तियों की थी, से पूछा कि आप लोग कोई काम क्यों नहीं करते?

इस बात पर वह सारे जोर से हँस दिये और बिना जवाब दिये आगे बढ़ गये। इस व्यवहार से दुखी होकर दोस्त ने बाबा जी से एकांत में पूछा?

प्रश्न :- बाबा जी आपने कैसे बदतमीज लोग पाल रखे हैं? एक पूरी की पूरी भीड़ सवेरे शाम खूब खाना खाती है, हँसती खेलती रहती है और कोई भी काम नहीं करती और पूछने पर बदतमीजी में हँसते अलग हैं, क्या हम इसके लिए पैसा भेजते हैं, अगर ऐसा है तो हमें सोचना पड़ेगा?

उत्तर: बाबा जी ने कहा तुम्हारे पैसे देना या ना देना के बारे में बाद में चर्चा करेंगे, लेकिन तुम्हें बता दे कि सिर्फ इतने ही लोग नहीं हैं आश्रम पर, जो मुफ्त में खाना खाते हैं, यहां बहुत से वृद्ध लोग, बहुत बच्चे, बहुत महिलाएं, बहुत सी गाय, भैंस जो दूध नहीं देती, बहुत से गधे-घोड़े जो काम नहीं कर सकते यहाँ भोजन ग्रहण करते हैं और आश्रय पाते हैं, और इस स्थान को एक खास स्थान बनाते हैं।

अब तुम्हें बता दे की जिन चालीस पचास लोगों की बात कर रहे हो, यह सब बहुत काम करते थे, बड़ी मुश्किल से इनसे काम छुड़ाया है-बड़ी मेहनत के बाद यह राजी हुए कि खाना खाएंगे और आराम से रहेंगे, कुछ नहीं करेंगे। सारे के सारे चालीस पचास लोग-चोरी, डकैती, लूटपाट, मारपीट का कार्य करते थे, इसलिए जब इनसे कोई पूछता है कि आप लोग कोई काम क्यों नहीं करते -तब यह सिर्फ हँस कर टाल देते हैं क्योंकि यह सोचते हैं कि-यह काम करते तो तुम पूछने लायक स्थिति में नहीं होते।

अब आगे सुनो इनके यहाँ आने से गाँव और आस-पास के बहुत से क्षेत्र मे चोरी, डकैती, लूटपाट, मारापीटी, छेडछाड़ बंद हो गयी। इनके यहाँ रहने भर से यहाँ की व्यवस्था की सुदृढ़ता में नया आयाम जुड़ा-अब यहाँ सामान्य, प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था पर बहुत ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ती। ग्रामवासी एवं आसपास के लोग यहाँ साधन एवं धन देने लगे हैं, और कहते हैं कि यह वह धन ही है जो हमारा चोरों, डकैतों, बदमाशों से सुरक्षा करने में खर्च हो जाता था। तब भी नौकरी पर रखे गये सुरक्षाकर्मी एवं पुलिस, से सुरक्षा नहीं मिलती थी, और अब अपने आप मिलने लगी है।

अगर इन सब को पकड़कर कैद खाने में रखते, तब भी इन्हें मुफ्त में खाना खिलाते और इसके साथ पुलिसवालों को खाना भी खिलाते, वेतन भी देते हैं जो इनकी एवं इनसे कैद-खाने में सुरक्षा का इंतजाम देखते।

इसके अतिरिक्त यह स्थान उन सबको स्थान देता है, जिनका कोई नहीं है या जिन्हें सब छोड़ देते हैं, स्थानीय समाज के अनुसार यह स्थान अव्यवस्थाओं में व्यवस्था का उदाहरण है-और हमारे स्थान की शान है और इस तरह इस स्थान पर कोई दिक्कत आती है या कोई आवश्यकता आती है तो समाज उसे तुरंत पूरा करता है, मेरे बचपन के दोस्त यह तुम्हारा मन कि तुम सभी सहयोग दो और कितना दो।

उपरोक्त को ध्यान में रखे तो संवाद के निम्न विषय हो सकते है:

1. जिस समाज में ऐसे जागृत एवं सामूहिक सुख में सुखी रहने वाले और उन्हें सहयोग देने वाले नहीं रहते, उस समाज का क्या होता है?

2. क्या समाज को अपने क्षेत्र में ऐसे स्थानों को विकसित करने में, उन्हें प्रारंभ करने में सहयोग देना चाहिए, या इसे सुदूर स्थित सरकार के भरोसे नौकरी पर रखे गये नौकरों और अधिकारी पर छोड़ा जा सकता है, सरकार और सरकारी नौकरी के भरोसे छोड़ने के क्या परिणाम होंगे?

3. यदि सरकार व्यवस्था नहीं बना पा रही है तो क्या सत्ता परिवर्तन से कुछ काम बनेगा या व्यवस्था में परिवर्तन के बारे में सोचना होगा? क्या यदि एक स्थान पर सोने की चिड़िया है और दूसरे स्थान पर पीतल की चिड़िया भी नहीं है, एक स्थान पर सोने की लंका है और दूसरी ओर सीमेंट का शहर भी नहीं है तो क्या ऐसे स्थान लूट लिये नहीं जायेगे, जला नहीं दिये जायेगे?

4. कहते हैं कि प्रकृति में सभी चीजें ऋणात्मक से शुरू होती है फिर बहुत सारे व्यवधानो एवं परिस्थितियों से गुजरते हुए वह धनात्मक हो जाती है। कहते हैं अव्यवस्थाओं से व्यवस्थाओं का जन्म होता है और फिर वह प्रयासों द्वारा अच्छी व्यवस्था बनती है या फिर से अव्यवस्था में ढकेल दी जाती है। आध्यात्मिक जगत में कहते हैं यात्रा के निम्न चरण है:-अचेतन- अवचेतन-चेतनता, शैतान-शांति-संतत्व। अव्यवस्था-व्यवस्था-अच्छी व्यवस्था, नफरत-सहानुभूति-दया-दवा-सहयोग-अपनापन। ऐसे में जो समाज अनुसंधान, खोज में संलग्न रहते हैं और ऐसे व्यक्तियों को जो इस कार्य में लगे रहते हो को सहयोग करते यह प्रक्रिया विकसित होती रहती है, और सभ्यता की सभी सीढ़ियों को पार करता हुआ शिखर तक पहुँच जाता है-जहाँ स्वतंत्रता है, स्वावलंबन है, सहभागिता है, समन्वय है और जहाँ उपयोग एवं दुरुपयोग में एक सम्यकता है, और पूरी व्यवस्था में समरसता भी, क्या ऐसी ही व्यवस्था की हमारी आकांक्षा एवं हमारे प्रयास नहीं होने चाहिए? ***

4

अंर्तजगत (तथाकथित शैतान एवं साधु, संत) में समस्याओं के बारे में व्याप्त चर्चा

अंर्तजगत में (अंडरवर्ल्ड-दो प्रखर विरोधी घटक-साधु-संत, सन्यासी और तथाकथित शैतान, अधर्मी) मौजूदा समस्याओं और उनके समाधानों के बारे में निम्न खुसफुसाहट नजर आती है:

1. जो भगवान को मानते हैं वह कहते हैं-आज जो समय चल रहा है यह संक्रमण काल है। पाप का घड़ा भर गया है और यह बस फूटने ही वाला है-इसके उपरांत सतयुग (सच्चाई का युग) आयेगा, जिसमें जनसंख्या, मानव की एवं सभी जलचर, थलचर एवं नभचरो की सीमित एवं नियंत्रित रहती है, प्रकृति प्रसन्न रहती है एवं संसाधन असीमित होते हैं, ऐसी चर्चा आप धर्मों के प्रवचनों में आम सुन सकते हैं।

ऐसे प्रवचनों में हम आराम से सुन सकते हैं–कि पाप का घड़ा फूट जाता है, और पुण्य के घड़े में पौधा लगता है, जिनमें सद्‌भाव, सदाचार होगा, जो सत्कर्म में संलग्न होंगे, जिन्हें प्रकृति से प्यार होगा और प्रभु के प्रति समर्पण होगा वही बच पायेगे और सतयुग में प्रवेश कर पाएंगे-अतः अंर्तजगत के वह सदस्य जो परमात्मा को जानते हैं या जानने की दिशा में अग्रसर है ऐसे गुरु, आचार्य, महात्मा - आमजन से निवेदन करते हुए देखे जा सकते हैं कि अपने कर्म ठीक

रखो, कर्मशील बनो एवं धर्म के अनुसार आचरण करो एवं धर्मशील बनो, कर्मयुक्त एवं धर्मयुक्त बनो एवं रहो, पहले आंतरिक रूप से शक्तिशाली बनो, फिर बाह्य रूप से।

2. दूसरी ओर अंर्तजगत के वह सदस्य-जो अपनी शक्ति पर भरोसा रखते हैं, वह कहते हैं परमात्मा है-लेकिन वह उसी के साथ हैं जिनमें सामर्थ्य है, शक्ति है, जिनके पास माया है (पैसा - साधन, संसाधन) और जिनका माया के रूपों (मीडिया, मनी, मार्केट, बैंक और बाजार) पर नियंत्रण है। अंर्तजगत के यह सदस्य साधु संतों को बेकारों, बेवकूफोें की जमात कहते हैं-ऐसे अंर्तजगत के सदस्यों में आम है कि यह धरती इतनी जनसंख्या का बोझ नहीं उठा सकती है, इस गाजर मूली की तरह बढ़ती जनसंख्या ने गंदगी मचा रखी है, इतनी बकवास मचा रखी है कि आराम से जीना दूभर हो गया है। ऐसे में यह जरूरी है कि इस जनसंख्या मे एक बहुत बड़ी संख्या को खत्म कर दिया जाए, जिससे प्रकृति में जलचर, थलचर, नभचर सीमित रहे और संसाधन असीमित।

ऐसे अंर्तजगत मे लोग कहते है कि यदि इंसान, मुर्गी, अंडा, बकरा, मछली न खाये तब पूरी धरती पर यही सब इकठ्ठा हो जाएगा। प्रकृति में जीव ही जीव का भोजन है (जीव-जीवस्य भोजनम्) लेकिन मनुष्यों ने अपने आप को इससे उपर उठा लिया-आज मनुष्यो को खाने वाला-कोई बचा नहीं, इसलिए मनुष्यों की जनसंख्या इतनी बढ गयी है। इस मनुष्य प्रजाति में यदि बुध्दी होती हो वह जनसंख्या नियंत्रित रखता, लेकिन इसमें से अधिकांश लोग पागल है-उनके धर्म-धर्म प्रवर्तक सब पागल, वह अपनी जनसंख्या बढाए जा रहे है, और यदि धरती को बचाना है तो इन्हे-और इन जैसे पागलों को खत्म कर दिया जाए, क्योंकि यह जाती-प्रजाती सुधरने वाली नहीं है। यह सोचना मुश्किल लगता है?

ऐसी चर्चा आप समाचार माध्यमों में, सामाजिक प्रचार तंत्र (सोशल मीडिया) एवं फिल्मों में आराम से सुन सकते हैं, देख सकते हैं। शक्तिशालियों के मध्य ऐसी चर्चाओं से आप आम

निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह जिनके पास पैसा होगा, जो हमारे तंत्र से जुड़े होंगे, जिन्होंने जीवन में कुछ हासिल किया होगा, जो सक्षम है, सामर्थ्यवान है वही बचने के अधिकारी हैं, बाकी सब को कीड़े मकोड़े, मच्छरों, मछलियों या मुर्गियों की तरह मर जाना चाहिए या मार दिया जाना चाहिये।

अंर्तजगत के इन शक्तिशाली सदस्यों में आम है कि-भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान, चक्रवात से जनसंख्या पर कोई खास असर नहीं होता और परमाणु बम से हमें भी खतरा हो सकता है- इसलिए ऐसी विधियाँ खोजना और उनके कारगर होने के बारे में चर्चा, प्रयोग, अनुसंधान जरूरी है-जिससे बहुसंख्य जनता मारी जाये।

इन प्रयोग में कुछ है जैसे-क्या होगा यदि महानगरों का तापमान पचास डिग्री के पार चला जाए, क्या होगा-यदि खाने में कीटनाशकों और पानी में प्रदूषण बढ़ जाये, क्या होगा यदि कुछ देशों में वायरस और बैक्टीरिया के द्वारा बीमारी फैलाई जाये-क्या होगा यदि जंगलों में आग लगा दी जाये और उसे लंबे समय तक लगा रहने दिया जाये, क्या होगा-यदि कुछ महानगर लंबे अंतराल तक धुएँ की चपेट में रहे-क्या इसके लिए जंगलों की संख्या कम करना जरूरी है, क्या उपयोगवाद, उपभोगवाद और तथाकथित विकास के प्रलोभनकारी नारे से काम चलेगा? क्या डी.एन.ए. का रिकॉर्ड रखकर या अनेक समुदायों को आपस में व्दितीय विश्व युध्द में हुए नस्लीय मृत्यु ग्रहों की जैसी स्थिति के लिए भड़का कर नये विश्व युद्ध से पैसे भी कमाये जाये एवं मजा भी लिया जाये। क्या साधु-संतों के शोर को दबाने के लिए मीडिया का शोर बढ़ाना पड़ेगा-इत्यादि।

3. ऐसे में जब अंर्तजगत के दो परस्पर विरोधी घटक एक जैसी बाते करने लगें तब मामला गंभीर हो जाता है। बड़ी विडंबना है कि अंर्तजगत (अंडरवर्ल्ड) के दो प्रखर विरोधी घटक एक ओर तथाकथित साधु संत, सन्यासी, ब्रह्मचारी और महात्मा एवं दूसरी ओर तथाकथित शक्तिशाली, धनाढ्य, राजा-महाराजा, रानी-महारानी और इनके पाले हुए पंडित, मौलवी, पादरी-एक से परिणाम की ओर इशारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में क्या यह जरूरी नहीं होगा कि यह दोनों घटक आपस में संवाद करें, मंथन करें, और एक दूसरे पर भरोसा करते हुए इस तरह से कार्य करें कि प्रकृति बची रहे; धरती बची रहे, और जो सार है वह बच जाये, निरंतरता बनी रहे।

4. उपरोक्त चर्चा को धर्म की शाखाओं (रीजनल-रिलीजन) एवं संप्रदायों की किवदंतियों से भी देखा जा सकता है, जैसे यह कि चौदह सौ वर्ष बाद दो दूत आयेगे जो दुनिया में शांति स्थापित करेंगे, या यह कि यह संक्रमण काल है, या यह कि यह धर्म पच्चीस सौ वर्ष चलेगा, या यह कि दो हजार वर्ष बाद कयामत आएगी, या यह कि अंतिम पीढ़ी है, और इन (मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध, ईसाई और यहूदी धर्म) सब के हिसाब से वह समय लगभग आ गया है।

इन सबके कारण यह और भी जरूरी हो जाता है कि: सभी धर्मों और सम्प्रदायों के बीच बृहत चर्चा हो, आपस में सिर फोड़े जायें, दिमाग लगाया जाये, दिल मिलाया जाए, जिससे-भविष्य में आने वाली संतानों को बेहतर भविष्य एवं धर्म मिल सके।

व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक स्तर पर यह चर्चा जरूरी है कि बढ़ती हुई बीमारियों, बढ़ते हुए मौसम के बदलाव, बाढ़, सूखे, बढ़ते हुए कीटनाशकों के प्रयोग, बढ़ते हुए प्रदूषण, नशाखोरी, वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी को इस नजरिए से भी देखे की क्या यह सोची समझी चाल के तहत तो नहीं किया जा रहा है। इससे बचने के क्या उपाय हो सकते हैं? इसमें हमारी क्या भूमिका हो सकती है और होनी चाहिए? क्या इन चर्चाओं के लिए सामाजिक स्तर पर (जैसे गाँवों में चौपाल) ज्ञान केंद्र की स्थापना होनी चाहिए, और क्या यह ज्ञान केंद्र धार्मिक या आस्था के केंद्रों पर खोले जा सकते हैं?

आज के युग में एकांगी प्रयासों के साथ यदि वैश्विक स्तर पर प्रयास नहीं किया गया तब यह चर्चा और इसके परिणाम बेमानी हो जायेगें क्योंकि कोई भी नया अविष्कार, कोई भी नई चर्चा

देश की सीमा में सीमित नहीं रखी जा सकती और ना ही रखा जाना चाहिए। ऐसे में यह चर्चा वैश्विक स्तर पर होना जरूरी है।***

5

<u>आध्यात्मिक जगत में समस्याओं के बारे में व्याप्त चर्चा</u>

आध्यात्मिक जगत में दो कहानी आती है:-

(अ). एक जमाना था, जब सब कुछ अच्छा चल रहा था सब आनंद में था-कोई चिंता नहीं, कोई परेशानी नहीं, कोई उत्तेजना नहीं, कोई नशा नहीं, कोई ऊंच-नीच नहीं, कोई भेदभाव नहीं, इच्छानुसार रास्ता चुनों, सामर्थ्य अनुसार कार्य करो और आवश्यकता अनुसार खाना खाओ। ना ही ज्ञान की, ना ही बल की, न ही व्यापार की, और न ही तकनीक और सेवाओं का कोई अतिरिक्त महत्व, न कम न ज्यादा, सब बराबर । ऐसे जीवन में लोगों ने भगवान से कहा-क्या जीवन है? ना कोई उत्तेजना, न कोई नशा, न कोई श्रेष्टता और नेष्टता में भेद, यह भी कोई जीवन है, कोई अतिरिक्त रस ही नहीं है, जिससे जीने का मजा आये ।

पंडितों, पढ़े लिखों ने कहा, हम इतना चिंतन करते हैं, हमें ज्यादा मिलना चाहिए, क्षत्रियों ने कहा हम चाहे तो सब से छीन ले, हमारी सुरक्षा में ही सब सुरक्षित है, हमें ज्यादा मिलना चाहिए, व्यापारियों ने कहा सारा वितरण हम करते हैं सारी सामग्री हमारे पास रहती है-हमें तो

स्वाभाविक ज्यादा मिलना ही चाहिए, शुद्रो- सेवाकारो ने कहा कि किसी की कार्य सिद्धि हमारे बिना संभव ही नहीं, इसलिए किसको कितना मिलता है–यह अलग बात है लेकिन हमारा हिस्सा कम नहीं होना चाहिए।

ऐसे निवेदन सुनकर परमात्मा ने कहा ठीक है आप सब बारी-बारी से प्रमुखता को प्राप्त हो जाओ और संसार को चलाओ-हाँ इतना याद रखो जब स्थिति भयावह हो जायेगी तब समझो एक की बारी पूर्ण हुयी-एक युग खत्म हुआ, फिर अगले की बारी आयेगी-और जब तुम तीनों की बारी पूर्ण हो जायेगी-तब फिर से ऐसी ही स्थिति को प्राप्त हो जाओगे।

इसके अतिरिक्त इतना याद रखो कि सेवाकार हर अवधि में महत्वपूर्ण रहेंगे। तुम अपनी बारी में (ज्ञानी, शूरवीर, व्यापारी) अत्याचार करोगे तो कमजोर और असमर्थ हो जाओगे और तब सेवाकारो का समय शुरू हो जायेगा और वह अपने को श्रेष्ठ साबित करने लगेंगे और उसी के अनुसार ज्यादा हिस्से की मांग करने लगेंगे।

समय-समय पर मेरे भेजे हुए महात्मा, पैगंबर एवं दूत आते रहेंगे जो स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, इसके अतिरिक्त सभी युगों में आदिवासी, साधु-संत (जिनका कोई वर्ग नहीं है) वह रहेंगे। जब आदिवासियों, साधु-संतों एवं समाज में वृद्धों, बच्चों, स्त्रियों का सम्मान कम हुआ तब बड़े परिवर्तन होंगे।

1. इसके बाद कहते हैं एक युग आया (त्रेता) जिस में पंडितों, पढ़े लिखों के अनुसार समाज चला, फिर इस युग में स्थिति बिगड़ी, पढ़े लिखे, पंडितों के ज्यादतियां बढी और उनके समूह का नेतृत्व मुख्यत: रावण, कुंभकर्ण ने किया, एवं उनका साथ मेघनाथ ने एवं अन्य ताकतवर लोगों ने दिया। रावण के दस सिरों द्वारा प्रदर्शित दसों दिशाओं की शक्तियों ने उनका साथ दिया तथा दूसरे विपरीत समूह का नेतृत्व राम एवं सीता ने किया एवं उनका साथ लक्ष्मण, आदिवासियों, वानरो, साधु संतों ने दिया, यह एक तकनीकी युद्ध भी रहा।

कहते है यह युग परमात्मा के समयानुसार ब्रह्म मुहूर्त से दोपहर तक (अर्थात प्रात: चार बजे से दोपहर बारह बजे तक) रहा। इस युग में दोनों विरोधी समूह ने काफी नीतियों का पालन किया। युद्ध में भी सामान्यतः: युद्ध के प्राकृतिक नियमों का पालन हुआ। साधु संतों का सम्मान कम हुआ, लेकिन स्त्रियों का सम्मान तब भी काफी सीमा तक बरकरार रहा। युद्ध के बाद राम राज्य आया जो अच्छा कहा जाता है।

2. फिर दूसरा युग (द्वापर) आया जिसमें शूरवीरों के हिसाब से समाज चला, जब इस युग में शूरवीरों, क्षत्रियों की ज्यादतियां बडी तो महाभारत हुआ। जिसमें एक समूह का नेतृत्व धृतराष्ट्र, शकुनि ने किया, एवं उनका साथ दुर्योधन, धृतराष्ट्र के निन्यानवे पुत्रों, कर्ण, गुरुओं और आचार्यों ने दिया। इसके विपरीत समूह का नेतृत्व कृष्ण एवं द्रोपदी ने किया, तथा इनका साथ युधिष्टर, उनके भाईओं, साधु-संतो ने दिया, यह मूलतः: धर्म युद्ध था।
कहते है यह युग परमात्मा के हिसाब से दोपहर से संध्या काल तक रहा-अर्थात दोपहर बारह बजे से सायं आठ बजे तक। इस युग में पंडित, आचार्य द्वितीयक स्थिति में आ गये। इस युग में साधु संतों के साथ-साथ स्त्रियों एवं आदिवासियों पर भी अत्याचार शुरू हुए-और युद्ध के समाप्त होते-होते मान्य प्राकृतिक नियमों को छोडा जाने लगा, सत्य को शोर में दबाने की कोशिश हुई। युद्ध के बाद धर्मराज्य के स्थापना का प्रयास हुआ और फिर युग परिवर्तन।

3. इसके बाद समय आया कलयुग का-जिसमें व्यापारियों के हिसाब से समाज चला और चल रहा है, और जहाँ व्यापारी वर्ग कमजोर होता है वहाँ सरकार के सेवक महान हो जाते हैं। अंर्त एवं बाह्य जगत दोनों में आज के युग को कलयुग कहते हैं, इसको कुछ काला-अंधकार का युग कहते हैं, कुछ (कल, पुर्जे) मशीन का युग कहते हैं और कुछ कालिका या काली का युग कहते हैं-और कहते हैं कि इस युग में काले रंग की प्रधानता रहती है-जैसे न्याय के घर में काला रंग, शिक्षा के क्षेत्र में अंतिम उपाधि काले रंग के कपड़े में और महत्वपूर्ण कार्य जैसे छपाई, पढ़ाई, रात के अंधकार में या कालेपन में होती है-और कुछ कहते हैं यह युग कल-या

तो भूतकाल या भविष्य काल का ज्यादा ख्याल रखता है, कुछ कहते है यह काल-समय या मृत्यु का है और महाकाल का-शिव का है-काली का है।

आज के माहौल को देखते हुए आध्यात्मिक जगत में चर्चा है कि स्थिति भयावह हो गई है अब युग परिवर्तन का समय आ गया है। वहाँ चर्चा है कि समाज-विश्वास, भरोसे और भावनाओं से चलता है और यह तभी तक बनी रहती है जब तक शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय सभी को प्राप्त हो-बिना किसी मांग के, बिना किसी कारोबार के। जिस समय इसका व्यापार शुरू होता है समाज में सदभावना, कृतज्ञता का भाव खत्म होने लगता है, विश्वास, भरोसा टूटने लगता है।

समाज में हम सभी कभी न कभी ऐसी स्थिति में आ ही सकते हैं, जब हम अकेले पड़ जाए, बीमार पड़ जाये, और हमारा सब हमसे छिन जाये–या वह पहुंच से दूर हो जाये और हमारे साथ अन्याय हो जाये ऐसे में यदि-शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय कारोबारी हुआ-तब हम उससे दूर रह जायेगे और हो सकता है ऐसे में हम टूट जाए, छूट जाए, कट जाए, मिट जाये या मर ही जाये, यह स्थिति कभी भी अच्छी नहीं कही जा सकती। ऐसी स्थिति यदि है-तो यह बदलनी अनिवार्य है-समाज में, देश में और दुनिया में।

कहते है कलियुग का समय रात्रि से ब्रह्म मुहूर्त तक है (अर्थात रात्री आठ बजे से प्रात: चार बजे तक) इस युग में त्रेता एवं द्वापर से विरासत में मिली नीती-अनीती, न्याय-अन्याय, सम्मान-अपमान, के साथ सभी मूल वस्तुओं (जैसे हवा, पानी, धरती, आकाश, हवा-माध्यम) के साथ-साथ मूल आवश्यकताओं का भी (शिक्षा स्वास्थ्य एवं न्याय) व्यापार शुरू हो गया, रात्रि के कारण नशा बड़ा है एवं चोरी चकारी बडी है।

पुरानी मान्यताओं के हिसाब से स्थिति भयावह हो चली है, क्योंकि दृश्य जगत में सरकार के सेवक महान होते जा रहे है, व्यापारी की पकड़ कम होने के कारण वह अत्याचारी होने लगा है और ऐसे व्यापार-जैसे नशे का, अश्लीलता का, मीडिया का, हथियारों का जो ठीक नही माने जाते है के साथ-साथ-वायरस से बीमारी फैलाने का काम जंगलों में आग लगाकर, जीव जंतुओं, पशु-

पक्षियों को मारने का काम, भावनाएं भड़का कर आपस में लड़ाने का काम भी व्यापारी वर्ग करने लगा है। कहते है कलयुग में ब्राह्मण, पंडित एवं क्षत्रिय द्वितीयक स्थिति में आ गये।

इस स्थिति में प्रकृति का संतुलन ही नही बिगडा है, बल्कि पृथ्वी पर जीवन नारकीय के साथ मुश्किल होता जा रहा है। कह सकते है इस कलयुग में स्थिति भयावह हो गई है, ऐसे में देखना यह है कि व्यापारी वर्ग का नेतृत्व (रावण- कुंभकर्ण या धृतराष्ट्र, शकुनि जैसा) कौन करता है- बँको के माफिया, तेल, कोयला या न्यूक्लियर ऊर्जा के माफिया, हथियारों के निर्माता या मीडिया के मालिक या समुद्र एवं अंतरिक्ष पर पकड़ रखने वाले-और दूसरे समूह का नेतृत्व क्या कुछ देशों के राष्ट्राध्यक्ष करते है या कोई और। कुरान के हिसाब से चौदह सौ वर्षो बाद धरती पर दो दूत आयेंगे और धरती पर शांति स्थापित करेंगे।

पिछले दोनों युगों में मुख्यत: दो ही दूत (या स्वयं भगवान) राम-सीता या कृष्ण-द्रौपदी अपने सहयोगियों के साथ आयें और विशालकाय दिखने वाले अधर्म के साम्राज्यों का अंत किया, अत: लगता है, कलियुग में भी दो ही दूत अपने सहयोगियों के साथ आएंगे और धरती पर शांति स्थापित करेंगे-युद्ध ना हो ऐसी कोशिश होनी चाहिए-और यदि दोनों पक्ष चर्चा के द्वारा, एक मंथन के द्वारा स्थिति ठीक करते है तो यह युद्ध के बाद की शांति से बेहतर होगी।

(आ). कहते है भगवान के दो अनन्य भक्त शुक्राचार्य एवं बृहस्पति की यात्रा भी ब्राह्मण, शूरवीर, व्यापारियों एवं सेवा कारों की यात्रा के साथ-साथ चलती है। कभी बृहस्पति के भक्तों की सत्ता चलती है तो कभी शुक्राचार्य के भक्तों की। कहते है शुक्राचार्य एवं बृहस्पति के अनुयायियों में भी चारो वर्ग है और वह अपनी एवं अपने गुरु की श्रेष्ठता अलग-अलग ढंग से करते है।

दोनों ही पूजा पाठ करते है, दोनों का अपना जीवन दृष्टिकोण है-क्या सही-क्या गलत कहना मुश्किल, और कम से कम आम आदमी के लिए यह कहना या आकलन लगाना बहुत मुश्किल है कि किसको माने, या किसको छोडे, इसलिए सामान्यत: आम इंसान इस झंझट में नहीं रहना चाहता और वह स्थिति-परिस्थिती में दोनों का ही सम्मान करता है।

भगवान के लिए यह प्रकृति माया है, समय बिताने का जरिया है जैसी बहुत सी बातें कही जाती है, और कहते है भगवान के लिए यह साँप-सीढी का खेल जैसा है, कोई बहुत मेहनत करके शिखर पर पहुंचने ही वाला होता है-उसे साँप डस लेता है और नीचे गिरा देते है। भगवान जी साँप-सीढ़ी के खेल में पासा फेंकते रहते है और नीचे दाँव चलते रहते है।
जो मेहनत से खेलता है, जो मन लगाकर खेलता है, या बेईमानी, बहादुरी, भगवान पर भरोसा रखकर खेलता है, सबके अपने अलग-अलग परिणाम है और वह पात्रों को मिलते रहते है।

जब खेल में खेल के अतिरिक्त बातें होने लगती है, नियमों का उल्लंघन होने लगता है, तब जो प्रकृति के हिसाब से चल रहा होता है, भगवान उसको जिता देते-और फिर एक नया खेल शुरू होता है, एक नये युग मे।

त्रेतायुग और द्वापर युग बीत गया-अब इस कलयुग में युग की शुरुवात प्रकृतिस्थ लोगों के संरक्षण में शुरू हुई। फिर समय के साथ यह सब आलसी, आराम पसंद एवं अहंकारी हुए-और इसी समय-द्वापर युग में हाशिये पर आये लोगों ने मेहनत शुरु की-काम किया, प्राथनाये की-तब आज देखते है शुक्रवार को महत्व (जो शुक्राचार्य का दिन है) देने वाले दुनिया में अधिकांश क्षेत्रों में आगे है- लेकिन अब शुक्राचार्य के अनुयायियों ने स्थिति को बेहतर रखने के बजाय इसे अहंकार का क्षेत्र मान लिया है- और उनके इस व्यवहार से सामान्य जन के अतिरिक्त संपूर्ण जलचरों, थलचरों एवं नभचरों में डर एवं असुरक्षा व्याप्त हो गई है।

खनिज दोहन से धरती में जगह-जगह छेद हो गये है, और वही जंगल जलाने एवं वृक्षों के कट जाने से धरती को बुखार हो गया है (धरती का तापमान बढ़ गया है) और सभी ने मिलकर भगवान से इस स्थिति से मुक्ति दिलाने की बात कही है, प्रार्थना की है।
आध्यात्मिक जगत में यह कौतूहल है कि क्या भगवान लोगों की बुद्धि भ्रष्ट करते है, परिवर्तित करते है-या शुक्राचार्य को मानने वाले तमाम धर्मों को आपस में चर्चा करने को प्रेरित करते है, या एक बृहत चर्चा जिसमें शुक्राचार्य के अनुयायी, बृहस्पति के अनुयायी शामिल हो कर एक मंथन

करते है, एक समझौता कराते है, दोनों में सुधार लाते है, कयामत लाते है, जिससे दोनो सुखी हो जाये, जिससे सार-सार एक तरफ बचा रहे एवं असार दूसरी तरफ या प्रलय या फिर युद्ध ही कराते है, स्थिति भयावह है, प्रार्थनायें परिश्रम जरूरी है-और परिणाम तो हमेशा सामूहिक ही होता है, भगवत्त प्रदत्त।***

6

<u>अंर्तजगत एवं आध्यात्मिक जगत में व्याप्त चर्चाओं से उपजे प्रश्न और उनके उत्तर</u>

प्रश्न : हमने धर्म की बात की, हमने सत्य असत्य की बात की और इनका व्यवहार, इनका आचरण करने वाले अंर्तजगत के लोगों के बारे में बातें की, आखिर यह है क्या?

उत्तर - सत्य वह जिसे बाँटा ना जा सके, जिसे काटा ना जा सके, वह स्थिर रहता है-और प्रकृति में सत्य के साथ चलने वालों के पास सदगुण आते हैं-सद्गुणों से सत आचरण सदाचार आता है-और ऐसे सत्य-पुरुष स्थित होते हैं विचलित नहीं होते और स्थितप्रज्ञ भी कहे जाते हैं-

"जिन कटिया सो सत नाही"- जो कट जाये, नकार दिया जाये, देश काल में परिवर्तित हो जाये, स्थिति परिस्थिति में बदल जाये वह सत्य नहीं है, जैसे अहिंसा-हिंसा की परिभाषा।

जो सत्य नहीं वह भ्रम है-माया जाल है, तिलिस्म है, जो बदल जाये, वही असत्य कहा जाता है, सामान्यतः दुनिया में जो दिखता है उसमें सत्य के थोड़े अंश से लेकर पूरे अंश होते ही हैं और इस तरह असत्य भी सत्य के सहारे चलता है, सत्य के सहारे ही फलता-फूलता है। यही धर्म और अधर्म है-और इसका आचरण करने वाले ही धर्मात्मा या अधर्मी, या संत महात्मा या शैतान, दुरात्मा कहे जाते हैं।

अंर्तजगत-बीज रूप है, एवं बाह्य जगत वृक्ष रूप है जो अंर्तजगत के प्राणी है वह बीज रूप ही में कार्य करते हैं ऐसे वैज्ञानिकों के कार्य ही आगे आकर वृक्ष का कारण बनते हैं-आगे आने वाली स्थिति को पर्दे पर उतारते हैं।

यह अंर्तजगत के लोग बहुत ही सूक्ष्म तल पर कार्य करते हैं, मन के मनोविज्ञान पर, पदार्थों के मूल अर्थों पर, ऊर्जा की अभिव्यक्ति पर, सत्य-असत्य के मिश्रण पर, भूत भविष्य के सम्मिश्रण से वर्तमान को बनाने पर फिर चाहे वह अपने शरीर की प्रयोगशाला में कार्य करें या शरीर के बाहर बहुत सारे आडंबर जोड़कर बाह्य प्रयोगशाला में करें।

(1) जो शरीर के अंदर की प्रयोगशाला पर काम करते हैं वह कहते हैं स्वभाव का रूप होता है और रूप से स्वरूप बनाया जा सकता है, एक पसीने की बूंद से भी पसीना बहाने वाला प्राणी बनाया जा सकता है-लेकिन वह प्रकृति विरुद्ध कार्य नहीं करते-अपने पर नियंत्रण रखते हैं-और नियमों का पालन करते हैं।

(2) दूसरी तरफ बाह्य प्रयोगशाला में कार्य करने वाले धीरे-धीरे करके आज इस स्तर पर पहुंचे हैं कि आई.बी.एफ. (कृत्रिम गर्भाधान) कराया जा सकता है-क्लोनिंग की जा सकती है और इनका कहना है कि आने वाले बीस पच्चीस वर्ष में त्वचा से तन बना ले, क्वांटम कंप्यूटर की मदद से

शरीर की आंतरिक संरचना को नियोजित (simulate) करके बायो तकनीक के माध्यम से पूरा शरीर बनाया जा सकता है।

शरीर में कैसे बीमारी पैदा करनी है और कैसे उन्हें ठीक करना है यह सब क्वांटम कंप्यूटर (सुपर कंप्यूटर का काफी विकसित रूप) एवं अपनी बायो तकनीकी की प्रयोगशाला में करके देख सकते है। प्रयोगशाला में मनोवैज्ञानिक प्रयोग करें कि वास्तविक जगत में किस स्थिति में लोग कैसा व्यवहार करेंगे और उस व्यवहार से क्या स्थिति निर्मित होगी और फिर उस स्थिति में क्या-क्या किया जा सकता है-ऐसी पूरी की पूरी कड़ी (Chain) है और उसका क्या करना है-इस पर निर्णय लिया जा सकताहै।

ऐसे में अंर्तजगत एवं बाहृय जगत के वह प्राणी जो प्रकृतिस्थ बने रहते हैं संत महात्मा एवं सज्जन कहलाते हैं वह जो इनसे धन, सामग्री, दूसरों को परेशान करने की ताकत, उनको नियंत्रण करने की ताकत इकट्ठा करने लगते हैं वह बेईमान, शैतान या दुर्जन कहलाता है एवं इनके द्वारा आचरित व्यवहार धर्म एवं अधर्म की श्रेणी में आ जाता है। दोनों कहते है-निर्णय का स्वरूप होता है लेकिन संत-महात्मा निर्णय-प्रकृति पर छोडे रहते हैं, एवं ताकतवर स्वयं निर्णय लेकर रूप बनाने की कोशिश करता है-जो यदि प्रकृति विरुद्ध है तो नकार दिया जाता है-और यदि प्रकृति परस्त है तो सवाँर दिया जाता है।

प्रश्न: आपने जो बताया वह समझ में तो आ रहा है लेकिन थोड़ी कठिनाई हो रही, क्या आप क्लिष्टता को आसन कर सकते है, जिससे हमें समझने में आसानी हो?

उत्तर: प्रकृति का यह धर्म है कि वह बिना भेदभाव के सभी को हवा, पानी, अग्नि, भौतिक पदार्थों को, रहने के लिए जमीन एवं खड़े होने के लिए आसमान और जीवन चलता रहे इसके लिए दिन-रात बनाये। इसमें बीमार पड़ना, दूसरे के अनुभव को ग्रहण करना, आपसी वाद-विवाद में किसी एक पर भरोसा करके उससे मध्यस्थता कराना, न्याय कराना, सामान्य विचारों समाचारों का आदान-प्रदान करना, एक-दूसरे की इज्जत करते हुए, भरोसे पर और प्रकृति में परीक्षित एवं

चखें हुए (अनुभीत) अनुभव के विश्वास पर चलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, इस विश्वास पर यदि कोई जुआ खेले तो-उसे पता होता है कि-इसमें जीत हार कुछ भी हो सकती है और इस तरह जुआ खेलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया समझी जाएगी-लेकिन यदि इस जुए में कोई पासा बीच में बदल दे, ताश के पत्तों में बदमाशी कर ले, तब यह अधर्म हो जाता है-और इसे करने वाला अधर्मी।

इसी तरह बीमार पड़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और बीमार पड़ने पर वह किसी वैद्य या डॉक्टर के पास जाये उससे इलाज करायें, डॉक्टर को पैसे दे यह भी स्वाभाविक प्रक्रिया ही समझी जाती है, इसके अतिरिक्त डॉक्टर - वैद रोज सवेरे भगवान के सामने पूजा करें कि भगवान हमारा कार्य चलता रहे, जिसका मतलब होता है अस्वस्थ हमारे पास आते रहे-हमसे इलाज करते रहे-हमें पैसा देते रहे-और हमारा खर्चा चलाते रहे, यह भी स्वाभाविक प्रार्थना ही है, लेकिन यदि डॉक्टर, दवाई बेचने वाला, दवाई बनाने वाला, लोगों को बाधायें खड़ी करने लगे, गलत सलाह देने लगे जिससे वह बीमार पड़े-और बीमार पड़े ही रहे, या फिर जनता के मध्य ऐसे किटाणु छोड़ दे जिससे-लोग बीमार पड़े परेशान हो, फिर उसी बीमारी का प्रचार करें उसका भय दिखायें, उसमें समाचार माध्यमों का इस्तेमाल करें, डॉक्टरों के बीच में इसकी चर्चा कराये और ऐसा माहौल बनाये जिससे लोग बीमार पड़े या ना पड़े बचाव के कदम के रूप में भी समाज एवं सरकार खूब सारी दवाये खरीद ले-यह प्रक्रिया अधर्म की है और ऐसा करने वाले अधर्मी या शैतान कहे जा सकते हैं पिछले सौ वर्षों में ऐसी कुछ बीमारियां जैसे स्पेनिश फ्लु, सार्स, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, जीका, इबोला, करोना वायरस हमारे मध्य छोड़ी गयी एवं डायबिटीज, दिल की बीमारी, कैंसर का हद से ज्यादा प्रचार किया गया, जो शैतानी की हद को दर्शाता है।

इसी तरह जैसे कोई अंडरवर्ल्ड का आदमी किसी को मारने की किसी से सुपारी ले यह अंडरवर्ल्ड की स्वाभाविक प्रक्रिया मानी जाती है लेकिन यदि अंडरवर्ल्ड का आदमी ऐसा माहौल बनाने लगे कि लोग उसे रोज किसी ना किसी को मारने के लिए सुपारी दे जाये तब यह प्रक्रिया अंडरवर्ल्ड के मान्य नियमों के खिलाफ जाती है और यह बदमाशी या शैतानी कही जाती है।

आज जब इस तरह का माहौल स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय एवं संचार के क्षेत्र में बन गया हो तो हम स्थिति की गंभीरता का अंदाजा आसानी से लगा सकते हैं कि अब जीवन दूभर हो गया है। यह सब अधर्म में आता है- और इसे करने वाले आप्राकृति हो गये हैं।

इसको यदि और भी सीधे शब्दों में कहें तो यह कि कोई–कफन का, ताबूत का, श्मशान घाट में लकड़ी बेचने का काम करें यह जरूरी भी है और स्वाभाविक भी, इसके साथ ऐसा व्यवहार करने वाले भगवान से अपना व्यापार चलाने उसे बढ़ाने की प्रार्थना करें यह अजीब है लेकिन यह भी जायज है लेकिन यदि ऐसे व्यापारी लोगों को मारने का या उन्हें मरवाने का प्रयोजन करने लगे– तब क्या कहेंगे, यही कि इनकी मति मारी गयी है।

ऐसा माना जाता है कि जो भी अपने मान्य नियमों से भटक जाये, उनका अतिक्रमण कर जाये, उसका समाप्त होना निश्चित है। इस तरह अधर्म का, अधर्मी का समाप्त होना तो तय है-देखना यह है कि कब होता है, कौन करता है, यह भी इतना महत्वपूर्ण शायद नहीं है-क्योंकि शैतान भी, अधर्मी भी एक संस्था का, एक व्यवस्था का प्रतिनिधि या अग्रणी ही होगा पूरी संस्था नहीं और इसको जो समाप्त करेगा वह भी एक संस्था का प्रतिनिधी ही होगा।

महत्वपूर्ण है प्रकृति चलती रहे, सामंजस्य बना रहे, समरसता बनी रहे जिसके लिए शायद एक मंथन (Churning) सबसे उपयुक्त रहें।

प्रश्न :- हमारे बीच आध्यात्मिक जगत की चर्चा होती है यह अध्यात्म क्या है ?

उत्तर : अध्ययन-आत्मा का, वहाँ जहाँ आत्मा का अध्ययन होता है चिंतन होता है ऐसा जगत-ऐसी दुनिया को आध्यात्मिक जगत कहा जाता है। यहाँ सूक्ष्म शरीर का अध्ययन किया जाता है, जैसे हम एक श्वास लेते हैं, तब बाहरी प्रकृति हमारे शरीर के भीतर प्रवेश करती है, और जब हम श्वास छोड़ते हैं तब हम हमारी (प्रकृति) भावनाओं-इच्छाओं-चिंता, परेशानिओं एवं अनुभवों को

बाह्य वातावरण में छोड़ते हैं, श्वासों की गति और इससे भी सूक्ष्म भावनाओं, संवेदनाओं, प्राणों के आवागमन का अध्ययन हीं अध्यात्म है। इस अध्ययन के द्वारा वह व्यक्ति जो इसमें लीन है, संलग्न है-प्रकृति के सूक्ष्म रहस्यों, भूत-भविष्य को जानते हैं-पहचानते हैं-और स्वयं प्रकृति के हिसाब से चलते हैं-और कोई छेड़छाड़ नहीं करते।

प्रश्न : इस क्रम में आप हमें बताएं स्वाध्याय क्या है ?

उत्तर : स्वाध्याय-स्वयं का अध्ययन-स्वयं में सामान्यतः भौतिक शरीर जो अन्न जल से बनता है और चलता है-तथा प्राणमय शरीर-जो श्वासों से चलता है का अध्ययन किया जाता है एवं विशेषतः जीवन के सार-सारांश पर विचार दूसरों के अनुभव को पढ़ना उन्हें ग्रहण करना एवं अपना स्वयं का अनुभव एकत्रित करना शामिल है जो स्वाध्याय कहीं जा सकता है।

प्रश्न : आपने अंर्तजगत एवं आध्यात्मिक जगत में व्याप्त चर्चाओं के द्वारा कहना चाहा है कि आज की स्थिति गंभीर है आप इसको सार में समझाये कि वाकई में स्थिति क्या है, क्यों वह गंभीर कही जा सकती है-और क्या उपाय है इस स्थिति से बेहतर स्थिति में आने के?

उत्तर :- 1) कहते है एक युग था रावण का-वह बहुत ज्ञानी था, उसकी लंका सोने की थी-धन का रखवाला कुबेर उसका कैदी था, सभी बदमाश, सभी शैतान एवं सभी देवता-वरुण, अग्नि, वायु धनवन्तरि, विश्वकर्मा यहाँ तक की यमराज भी उनके यहाँ नमस्कार करते थे, धरती त्राहि-त्राहि करती थी, आकाश उसकी गर्जनाओं से दहल जाता था, आकाश-पताल एवं धरती (अंतरिक्ष-एवं समुद्र के नीचे, पृथ्वी के अंदर) में उसका साम्राज्य था, मनुष्यों की बात क्या साधु-संत से भी जिसके पास पैसा नहीं होता है-उन्हें भी वह परेशान कर लेता था और सारे राक्षस उसके यहाँ पहरा देते थे।

उसके खिलाफ आदमी नहीं, वानर खड़े हुये और-उसकी सोने की लंका को लूटा नहीं, ना ही अपने साम्राज्य में मिलाया वरन जलाया फिर उसे हरा कर उसी के वंश के सहृदय व्यक्ति को उसके द्वारा शासित-राज्य पर बैठाया।

आज की मौजूदा अंर्तराष्ट्रीय स्थिति देखे तो कुछ ही हाथों में वायु (समाचार माध्यम) जल (समुंद्र), अग्नि (बिजली-जल, वायु, तेल एवं कोयला से, एवं अत्याधिक ऊर्जा-आण्विक, हाइड्रोज़न एवं डायनामाइट से) धरती (अधिकांश देशों में परोक्ष या अपरोक्ष शासन, सारे खनिज पदार्थ एवं धातुएं), अकाश (अंतरिक्ष में सैटेलाइट) - कुबेर (सारे बैंक एवं मुद्रा-डॉलर, येन, यूरो, पौंड एवं इनके द्वारा दुनिया की अन्य मुद्राओं पर परोक्ष या अपरोक्ष नियंत्रण), पाताल, आकाश एवं पृथ्वी (अंतरिक्ष पर आर्कटिक पर समुंदर के नीचे एवं पृथ्वी के अंदर-शोध करना, खनिज एवं तेल निकालना-एवं उसकी पहरेदारी), परमाणु, हाइड्रोजन जैस बम द्वारा पृथ्वी हिल जाती है एवं आकाश दहल जाता है। नशा, समाचार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्यायिक व्यवस्था द्वारा आम मनुष्य क्या, पशु-पक्षी क्या, जानवर क्या, समुंद्री जीव जंतु क्या-साधु संत भी प्रभावित है-परेशान है। ज्ञान का खजाना, लोगों की कमजोरी का रिकॉर्ड, उनके हथेलियों के निशान इनके पास है। भुखमरी से आम आदमी-जंगलों में आग से जंगली जानवर, इंटरनेट की चुंबकीय तरंगों से, हवाई जहाजों से पक्षी, एवं सबमरीन से समुद्री जीव जंतु सभी परेशान है-बस रावण की तरह, कुंभकरण की तरह, मेघनाथ की तरह दो - तीन चेहरे सामान्य जन को सामने नहीं दिखायी देते अन्यथा हालत वैसे ही जैसे रावण के समय दर्शाये हैं।

आज के युग में इन तथाकथित महानुभावों के पास अपने आप को वास्तव में वैश्विक धरातल पर एक छत्र राज्य करने की एवं अपने आप को धरती का राजा बनाने की योजना है। इस कार्य के लिए यह एक मुद्रा, सीमा रहित देश, एक भाषा, एक धर्म, एक भगवान जैसे तथाकथित मनमोहना-लुभावने नारे के मध्य अपना कार्य कर रहे है, जिसके लिए इंटरनेट से बिना नकदी के लेनदेन, सभी इंसानों के प्राथमिक रूप से डी.एन.ए. का रिकार्ड रखने की प्रक्रिया-इसके बाद इन सभी को देखने के लिए सभी के शरीर पर एक इलेक्ट्रॉनिक चिप जो सेटेलाइट से चलने की प्रक्रिया को विभिन्न देशों में विभिन्न तरह से प्रोत्साहित कर रहे है। कुछ विरोधी दिखने वाले या भविष्य में विरोध में खडे होने वाले राष्ट्रो को वायरस छोडकर या वहाँ मीडिया एवं मनी से आंदोलन व अफरा-तफरी मचवा कर उन्हे सीमित या उनकी घेरा बंदी करने का प्रयास भी जारी है। लेकिन इस सबके बावजूद इनके पास ऐसी कोई जगह नही जो इन्हे चाहे, इनसे नफरत ना करे, इन्हे समाप्त करने के लिए भगवान से प्रार्थना ना करे।

ऐसे में उपायों के बारे में सोच कर ही अच्छे-भलों को डर लगता है-साधु संत सो जाते हैं-या राम-राम, यीशु-यीशु, अल्लाह-अल्लाह, गाने लगते हैं, युद्ध की विभीषिका के बारे में कुछ राष्ट्राध्यक्ष जो इनसे दूरी बनाए हुए भी बचे हुए हैं को पसीना आ जाता है-और कुछ पलायनवादी होने की कोशिश करते हैं।

समाधान आम जनता के पास ही हो सकता है-यदि वह कोई है और उसके लिए जनता को अपने आप से अपने समूह से संवाद करना होगा-सहमति बनानी होगी और इनके विरोध में एक नियोजित तरीके से खड़े होना पड़ेगा-और इस प्रयास से हो सकता है कि तथाकथित शक्तिशाली भी आम जनता के प्रतिनिधि से संवाद करें और एक मंथन (churning) हो जिससे दुनिया में जो सार है वह बच जाये और जो जहर है वह अलग हो जाये प्रयास जरूरी है, यह भी बचे रहे, साधु संत भी बचे रहे, ऐसे प्रयासों को गति देने की जरूरत है, जिससे एक सनातनी वैश्विक व्यवस्था का पुर्न:संचार हो।

2). व्यक्ति की जीवन में सात सुख कहे जाते हैं-पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख पास में माया, तीसरा सुख पत्नी कुलवंती, चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी पाँचवा सुख-हो घेनु घर वासा, छठा सुख हो सज्जन कर वासा, सांतवां सुख हो मृत्यु सुखकारी। इसके विपरीत कहा जाता है कि यदि शरीर रोगी हो, पास में पैसा न हो, पत्नी कर्कशा हो, पुत्र कहना ना मानते हों, घर मे आमदनी का जरिया ना हो, पास पड़ोस में अच्छे लोग न रहते हो एवं मौत आने मे परेशानी हो। आज यदि पूरी दुनिया में देखें तो पहला छठा एवं सातवा सुख तो लुप्तप्राय हो गया है, बाकी सुख भी टुकडो में नजर आते है-तब जब पूरी दुनिया में ऐसे व्यक्ति मिलना मुश्किल है, तो कहा जा सकता है कि स्थिति भयावह है। इस स्थिति से उबरने ने के लिये व्यक्तिगत एवं व्यवस्थागत स्तर पर कार्य करने होंगे, व्यक्तिगत उत्थान के लिए तो प्रयास दिखाई देते है, लेकिन व्यवस्थागत-परिवर्तन, बदलाव या पुर्नोत्थान के लिये प्रयासो को बल देने की सामूहिक संकल्प एवं प्रयासों की जरूरत है।***

प्रश्न :- कहते है राम राज्य सबसे बेहतर था-इसके क्या कारण है?

उत्तर :- 1) सभी बातें जो ज्ञात जगत में चर्चा में है उसके अतिरिक्त अध्यात्मिक जगत में एक बात और आती है कि राम राज्य के समय राम सेतु बनने के बाद पृथ्वी अपनी कक्षा में संतुलन में आ गयी, उसके पहले और उसी तरह आज भी भूकम्पों का आना, ज्वालामुखियों का फटना, तूफानों, चक्रवातों का ज्यादा होना एवं आना लगा रहता है। वह कहते है पृथ्वी के चार ध्रुव (पोल) है-उत्तरी दक्षिणी, एवं एक बरमूडा त्रिकोण पर एवं चौथा भारत-श्रीलंका के मध्य रामसेतु वाली जगह। वह कहते है-राम चंद्र जी ने (जिनकी सेना के लोगों ने सोने की लंका भी जला दी थी-तब युद्ध के लिये इतना इंतजार करके पुल बनाने की क्या आवश्यकता थी), धरती को अपनी कक्षा में संतुलन में लाने के लिए ही राम सेतु बनाया और राम सेतु बनने के बाद जब पृथ्वी संतुलन में आ गयी-तब सभी लोगों की मस्तिष्क, दिमाग भी संतुलन में आ गये-जिससे समाज ठीक चलने लगा, तूफानों, चक्रवातो, भूकंपो की संख्या कम हो गयी एवं राम सेतु बनने के बाद इसके विपरीत दिशा में स्थित बर्मुडा त्रिकोण में खिंचाव खत्म हो गया और इस खिचाव की वजह से विपरीत दिशा में आने वाले उत्प्लावन बल में कमी आयी और इससे स्वर्ग तक भेजने की रावण की योजना जो बर्बादी लाती का अंत हुआ।

2) राम-राज्य-प्यार-आदर-सहयोग के रास्ते पर खडा हुआ-बजाये भय, मजबूरी के। राम राज्य एक सभ्यता नहीं बना, वह समता के आधार पर बना और समाज कहलाया।

3) आध्यात्मिक जगत के महात्मा कहते है-यदि सेतु समुंद्रम परियोजना होगी तो आधी दुनिया वैसे ही तबाह हो जायेगी-पता भी नहीं चलेगा और यदि राम सेतु को फिर से ठीक कर दिया तो आज फिर से राम राज्य या यों कहे पवित्र राज्य स्थापित हो जायेगा-इस दिशा में प्रयास जरुरी है।

4) आध्यात्मिक जगत में कहते है, की सबसे पहले त्रेता युग आया फिर द्वापर और फिर कलियुग, चूँकी राम राज्य सबसे पहला था इसलिए उसमें विकृतियाँ कम थी, यहाँ तक की रावण भी बहुत सारी नीतियों का पालन करता था, जो युद्ध के मैदान में भी यथावत रही, इसके बाद द्वापर युग में समाज विकृतियों की ओर बड़ा एवं युद्ध में बहुत सारी सीमाएं लाँघी गयी। आज

इस कलयुग में पिछले दो युगों की कृतियाँ एवं विकृतियाँ विरासत में मिली है एवं सभी अपनी चरम सीमा पर है। उपरोक्त कारणो से बहुत लोग रामराज की इच्छा रखते है और कुछ सत् युग की बात करते है, या कयामत के बाद अल्लाह या भगवान के राज की चर्चा करते है। ***

7

<u>बीसवीं सदी में दिखाई देने वाली समस्याओं की विवचेना</u>

प्रश्न : व्यवस्थाये भ्रष्ट हो गई है और यह भ्रष्ट व्यवस्थाये भी अंदर तक सड़-गल गयी है और यह ऐसा ही लम्बे समय से चल रहा है-इसके परिणाम स्वरूप जनता भी इन्हें स्वीकार चुकी है और कहीं ना कहीं जनता अपने को भी भ्रष्ट कर चुकी हैं।

जनता आरोप प्रत्यारोप करने वाले भाषणों से एवं ग्रंथों से उदाहरण लेकर तोते की तरह बोलने वाले पांडित्यपूर्ण प्रवचनों को सुनते-सुनते भी थक चुकी है-कि जनता ऐसा करे, समाज ऐसा करे, सरकार को ऐसा करना चाहिए, लेकिन रोजगार की समस्या बढ़ती जा रही है, बीमारों एवं बीमारियों की संख्या बढ़ती जा रही है, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, न्याय व्यवस्था असफलता की कगार पर खड़ा है, शासन-प्रशासन नौकरों के भरोसे चल रहा है-हालांकि कहने को लोकतंत्र है।

वोट देते समय लोकतंत्र जनता का, जनता के लिये, जनता द्वारा शासन कहा जाता है इसके बाद इसमें कुछ स्तंभ और जुड़ जाते हैं, और फिर लोकतंत्र नजर आता है, "सरकारी कर्मचारियों का सरकारी कर्मचारियों के लिये सरकारी कर्मचारी द्वारा शासन"या "धनिक वर्ग का धनिक वर्ग के

लिये, धनिक वर्ग द्वारा शासन "जिसमें जनता के चुने हुये नेता, विधायक एवं सांसद एक अतिरिक्त एवं अनावश्यक अड़चन ही है ऐसा नजर आता है-एवं प्रचारित भी किया जाता है, जनता ने विधायक एवं सांसद को वोट दिया तो काम के लिए क्यों अधिकारियों के पास जाये?

सत्ता में राजनैतिक पार्टियों के परिवर्तन से बहुत ज्यादा फर्क पड़ता नहीं। देश में इतने चुनाव एवं इतने नेता हो गये कि काम करने वाले किसकी सुने और किसकी ना सुने? जनता का इस लोकतांत्रिक व्यवस्था से एवं नेताओं के वादों में इतना भरोसा टूट गया है कि जनता वोट डालते समय ही नेताओं से पैसे या सामान मांग लेती है लिहाजा देश में एक संजीदा प्रत्याशी के विधानसभा जैसे चुनाव में दस से बीस करोड़ रुपये खर्च हो जाते हैं, सब कुछ व्यापारिक हो गया है, समाचार भी।

लोगों की कमाई का साठ सत्तर प्रतिशत पैसा शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय और परिवहन में खर्च हो जाता है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय जो बेहतर समाज के लिए सहज उपलब्ध होने चाहिए, वह आज सबसे खर्चीले और खून चूसू हो गये हैं।

बैंकों के क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड में गरीबों का पैसा लूटा जाता है एवं अमीरों को फायदा दिया जाता है, वही निजी सूदखोर के व्यवहार का बखान भी दुख देता है।

बहन, बेटियां सुरक्षित है नहीं, वायु जल एवं जमीन के प्रदूषण से हाल बेहाल है- आदिवासियों को मुख्यधारा मे ले आये हैं और जल-जंगल-जमीन एवं जंगली जानवर का हाल बेहाल कर दिया, पर्यावरण की वाट लग गयी है।

जाति-जाती नहीं है और परेशानियाँ ज्यों की त्यों ऊपर से धार्मिक झगड़े फसाद अलग से, न्याय मिलता नहीं, अन्याय बढ़ता जा रहा है, गरीबी बढ़ती जा रही है, गरीबी-अमीरी में अंतर बढ़ता जा रहा है, देश की मुद्रा का अवमूल्यन होता जा रहा है, भिखारियों की संख्या भी इतनी बढ़ गयी कि भीख भी मिलना मुश्किल हो गया-अच्छे कामों के लिए सहयोग तो दूर की बात है।

आज हम किसी दूसरे शहर में घूमने या किसी काम से जाये-जहाँ हमें कोई व्यक्तिगत तौर पर जानता न हो-ऐसे में यदि हमारा पैसा एवं सामान लुट जाये, चोरी चला जाये, छूट जाये तो हमें समझ ही नहीं आता कि हम मदद के लिये कहाँ जाये?

न्यायालय, पुलिस, जिलाधिकारी, विधायक, सांसद, मंदिर, मस्ज़िद, चर्च, गुरुद्वारा जो हमें कम से कम खाना दे और घर वापिस जाने का किराया दे दें (जो हम उसे घर पहुँच कर धन्यवाद सहित वापिस भी कर दें), आज स्वतंत्रता के सत्तर वर्ष बाद भी हम देश भर में एक भी जगह ऐसी खड़ी नहीं कर पायें।

ऐसे में क्या रास्ता है, ऐसे ही रहने का, घुट-घुट के मरने का या कुछ और भी? क्या हम मूल, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय एवं सुरक्षा का भी ठीक-ठाक बंदोबस्त कर पायेगे? जिस संविधान के नाम पर आम जनता के मध्य चुनाव कराये जाते हो-वह संविधान स्वयं कभी आम जनता के मध्य नहीं चुना गया-और इस तरह लोकतंत्र की जगह प्रतिनिधि लोकतंत्र चल रहा है ? ऐसे में समाज के प्रबुद्ध वर्ग का क्या कहना है?

उत्तर : कहते है की कोई समाचार नहीं, मतलब सब कुछ ठीक चल रहा है-लेकिन आज जब चौबीसो घंटो के सैकड़ो चैनल लगातार सामाचार दे रहें हो, ऊपर से समाचार पत्रों के पृष्ठ बढ़ते जा रहे हो तब आपकी बात से सहमत हुआ जा सकता है कि समस्या गंभीर है या यह समाचार माध्यम ही समस्या पैदा कर रहे है और उसे गंभीर भी बना रहे है, या दोनों ही ठीक है।

इसके लिए व्यापक प्रयास जरुरी है जो सिर्फ केंद्र या राज्यों में, जिला प्रशासन में राजनैतिक पार्टियों के सत्ता में बदलने से नहीं होगा-बहुत कुछ व्यवस्थागत परिवर्तन करने होंगे-क्योकि स्वतंत्रता को सत्तर वर्ष हो गये लेकिन व्यवस्था वही अंग्रेजो द्वारा एक गुलाम देश को कैसे शासित करना है चल रही है, जहाँ समझा जाता है कि सब चोर है, इसलिये नियम कड़े होने चाहिए, और यह कोर्ट साबित करेगा कि आप ईमानदार है या चोर-जिसके लिये वकीलों की फीस लगेगी और तब भी निश्चित नहीं है न्याय कब मिलेगा?

लोकतंत्र की व्यवस्था एक लॉलीपॉप की तरह बनायी गयी-जो जनता को चुसने के लिए दी जाती है। लोकतंत्र की इंग्लैंड में (जो आज पूरी दुनिया मे है) ढाँचा/संरचना ही ऐसी बनाई गयी कि राज्य (देश) के तीन स्तंभ (१). माध्यम (हवा) माहौल बनाने के लिए-दूसरे की आवाज दबाने के लिए, उत्साह एवं हताशा फैलाने के लिए, अफरा-तफरी मचाने के लिए, राज्य को ऊंचाँ एवं जनता को नीचा दिखाने एवं दिखाते रहने के लिए (मीडिया-माध्यम, कभी भी, न्याय-व्यवस्था, प्रशासन, सेना एवं राष्ट्रपति का मजाक नहीं उड़ाता, वह सिर्फ नेता का मजाक उड़ाती है, चाहे वह प्रधानमंत्री ही क्यो न हो-इस तरह से वह जनता का मजाक उड़ाती है, मीडिया को पुलिस, अस्पताल रोज सूचनाएं देते है-जिसमे समाज मे भय व्याप्त रहे-इसे बदलना जरूरी है)। (२). प्रशासनिक तंत्र - अधिकारी, कर्मचारी, पुलिस (३) न्याय व्यवस्था-हमेशा-सीधे-सीधे जनता की पकड़ से बहुत उंचे रहे और वह राज्य परिवार (राष्ट्रपति/राष्ट्राध्यक्ष) के नियंत्रण मे रहे-इस तरह से लोह त्रिकोण (Iron Triangle) बनाया गया। इसके साथ पूरी की पूरी सेना (जल, थल एवं वायु) तो राष्ट्राध्यक्ष को रिपोर्ट करती ही है।

जनता के मध्य व्याप्त लौह त्रिकोण, इंग्लैंड में राजघराने, रईसों और रिलीजन के प्रमुखों के मध्य बने लौह त्रिकोण की ही उपज है। यह ऊपरी लौह त्रिकोण एवं निचला लौह त्रिकोणपूरी दुनिया में व्याप्त हो गया है और अब कहर ढाने लगा है। ऐसा दिखता है इसमें मूलभूत सुधार या बदलाव की आवश्यकता है-जिससे-यह वाकईमें लोकतंत्र बने-जनता का, जनता के लिए, जनता के व्दारा। स्थिति राज्य परिवारों के समय से बहुत ज्यादानहीं बदली पहले रजवाडे होते थे उनके अधिकार शासन चलाते थे, आज जनता वोट देकर राजाचुनती है वह चीफ मिनिस्टर कहलाता है उसके सिपहसालार मंत्री एवं बाकी वैसे ही अधिकारी गण शासन चलाते है, विधायकोंसांसदों के पास सिवाय अधिकारियों की पीछे या मंत्रियों की हाँ मेंहाँ मिलाने के अलावा कोई चारा नहीं है। प्रधानमंत्री बादशहा या महराज की तरह जनता का कुछ नहीं बदला यह बदलने कीजरूरत है न केवल भारत में बran संपूर्ण विश्व में और सनातनी (Perpetual) वैश्विक व्यवस्था बनाने की जरूरत है-जो लोकतंत्र (Democracy)का अगला रूप एवं अच्छा रुप (Divincracy) सनातनी तंत्र हो।

निम्न निवेदित है:

1. स्थिति कि गंभीरता ज्यादा है–जिसको भुलाने के लिए सरकार और विश्व की कुछ बड़ी एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ शराब, धूम्रपान, दवाइयाँ, पोर्नोग्राफी को एक ओर से प्रलोभन देती है, इनसे कमाई करती है, और वही दूसरी ओर इस कमाई का कुछ हिस्सा इनके विरोध और नैतिकता के प्रचार-प्रसार में खर्च करती है-जिससे जनता में असंतोस बढ़े एवं जनता इसे भूलने के लिए फिर से नशे में संलग्न हो जाये एवं इसी चक्र में उलझी रहे।

2. लोकतंत्र में सरकार बनाने के लिए ज्यादा वोट चाहिए, तब हमारी जाति, धर्म की ज्यादा जनसंख्या होगी और वोटरों की उम्र कम होगी (भारत में वोट डालने की उम्र अठारह वर्ष,शादी करने की इक्कीस वर्ष एवं शराब पीने की पच्चीस वर्ष) की सोच ने समाज की उलझनों को और बढ़ाया है।

3. सरकारों द्वारा अपने आपको लोक हितकरी (welfare state) प्रदर्शित करने से समाज के सभी वर्गों में उत्तरदायित्व की भावना की कमी हुई है (basically concept of welfare state had given farewell to responsibility)। सरकार की योजनायें जैसे अति गरीब, अति पिछड़ा, गरीबी रेखा के नीचे कि जनता को दो रुपये किलो गेहूँ, एक रुपये किलो चावल, दस रुपये किलो चीनी, सस्ता किरोसिन इत्यादि देकर इन्ही तबकों को नकारा, नपुंसक, दया का पात्र एवं बेचारा बनाया है वही इन पदार्थों की काला-बाज़ारी, किरोसिन की पेट्रोल डीज़ल में मिलावट एवं सामान्य भ्रष्टाचार को बढ़ाया है।

4. सरकारों की जनहित योजनाओं के कारण सभी राजनैतिक दलों ने एक से बढ़कर एक घोषणाऐं की और उन्हे लागू करके अपनी सरकारे बनायी-कुछ देशों में तो बहुत सामान मुफ्त भी मिलने लगा, जिससे समाज कई वर्गों में विभक्त हुआ है, शुरुवात में ज्यादा करों द्वारा इस राशि की भरपाई हुई, बाद में ज्यादा लोगों द्वारा मुफ्तखोरी की आदत दाल लेने के कारण कई राष्ट्र कंगाल हो गये, बरबाद हो गये, बिखर गये और आज गुलामी की दिशा में अग्रसर है। इस सस्तेपन, मुफ्त-खोरी ने समाज को बिगाड़ने, बर्बाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है-और यह प्रक्रिया

कई नस्लों को, समाज को, राष्ट्रो को यह उस दिशा में ले जा रहा है-जो एक मानसिक दावपेंच द्वारा किसी समाज/देश को गुलाम बनाने, बनाए रखने की साजिश को अंजाम दे सकता है।

5. सरकारों का सारा ध्यान जी.डी.पी (सकल घरेलु उत्पाद) पर है-जिसने सिर्फ अमीर की अमीरी एवं गरीबों की गरीबी एवं दोनों के बीच का अंतर बढ़ाया है, सरकारों का ध्यान इस ओर है ही नहीं कि जनता प्रसन्न है या नहीं, जनता का सकल प्रसंन्नता अनुपात क्या है? सरकारें व्यापारी हो गई और जब भी सरकारें व्यापारी होती है-जनता एवं समाज भिखारी की तरह हो जाता है।

6. कही जगह तो सरकार एक कदम आगे भी जाती है-वह शराब की दुकान खोलती है, जुआं भी खिलाती, लॉटरी का टिकट भी बेचती है, शेयर बाजार भी चलाती है, या चलने देती है। सरकार के साथ साथ जब धार्मिक क्षेत्र भी व्यवसाय में उतर जाता है (शिक्षा, स्वास्थ्य, सामान्य कर्मकाण्ड, पूजा पाठ प्रार्थना के व्यवसाय में) तब रोक प्रतिरोध के सारे रास्ते ख़त्म से हो जाते है, सामंतशाही बढ़ती है और आम जनता में भुखमरी, बेगारी, शारीरिक एवं मानसिक बीमारी बढ़ने लगती है।

7. जिन पंच तत्वों से जीव एवं प्रकृति बनती है एवं चलती है–जल, वायु, धरती (भौतिक पदार्थ) एवं आकाश (खाली स्थान) उन सभी के अनुपात का संतुलन बिगडा है–जो प्रकृति में प्रदूषण के रूप में एवं प्राणी जगत में कफ, वात (वायु-गॅस) एवं पित्त (अम्लता) के रूप में असंतुलन पैदा करती है। इस असंतुलन के फलस्वरूप प्रकृति का मन एवं मनुष्य का मन रुग्ण हुआ है जो सुरक्षा, न्याय स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आपसी संबंधों पर असर डालती है और जीवन मे झगडे बढाती है और सुख कम करती है। हमारी आस्था डगमगायी है और हमारे आस्था के केंद्रों की हालत बिगड़ी है, हमारे आस्था के केंद्र सिर्फ सामान्य कर्मकांड के स्थान या कर्मकांड के साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य के व्यापार के केंद्र भर रह गये है और वह भी समाज के न होकर कहीं निजी, कहीं यह सीमित (ट्रस्ट या भ्रष्ट) समिति के और कहीं यह शासकीय हो गये है।

8. काफी पहले व्यक्ति, परिवार एवं समाज महत्वपूर्ण होता था, सभी को स्वतंत्रता थी एवं सभी का सम्मान था, अर्थ व्यवस्था के मूल में व्यक्तिगत प्रयास एवं सामूहिक कार्य जैसे खेती एवं वन्य संपदा होती थी। फिर इसके बाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता कम हुई, समाज महत्वपूर्ण हुआ और अर्थव्यवस्था का मूल–खेत-खलियान, वन-वनोपज हुआ-लेकिन पिछली कुछ शताब्दियों में यह बदलकर व्यक्ति महत्वपूर्ण, समाज कमजोर एवं अर्थव्यवस्था का मूल खेत-खलियान–खदान खनिज (कारखाना) हो गई है (वन्य एवं वन्य संपदा अर्थव्यवस्था के मूल से हट गयी), इसको, थोडे मे कहे तो हमारी समस्याओं का बडा कारण है–समाज में "हम से मै महत्वपूर्ण हो गया है और अर्थव्यवस्था जो जमीन एवं जमीन के ऊपर निर्भर थी वह जमीन एवं जमीन के नीचे या अंतरिक्ष पर निर्भर हो गई है"।

9. सोने की लंका जला दी जाती है एवं सोने की चिड़ियाँ लूट ली जाती है, जरुरत है जीवंतता की-जरुरत है जल-जमींन-जंगल में स्वस्थ जीव जन्तुओ की एवं इनके मध्य पूरी धरती (अर्थ) पर टिकी एक समन्वित व्यवस्था की एक-अर्थ (धरती, पैसा, उद्देश्य) व्यवस्था-अर्थव्यवस्था की।

10. मानस मे आये इन महत्वपूर्ण बदलावों से व्यक्तिगत एवं सामाजिक संबंधो का ताना-वाना छिन्न-भिन्न हुआ है–और उत्तरोतर मनुष्य से मशीनें, मनुष्य से माया (मनी-पैसा)–महत्वपूर्ण हुई है, स्वतंत्रता बाधित हुई है, समाज एवं शासन में सहयोग की बजाये उपयोग पर जोर बढ़ा है, जन-प्रतिनिधिओ के बजाये शासकीय नौकरों का सम्मान बढा है, ज्ञान-विज्ञान, रक्षा-सुरक्षा, सेवा, मान-सम्मान को दरकिनार कर सिर्फ व्यापार बढा है।

इस अंर्तविरोधी–अप्राकृतिक एवं आत्मघाती बदलावों ने न केवल हमारे सुखों को कम किया है बल्कि हमारे अस्तित्व पर भी प्रश्न चिन्ह खड़ा करना शुरू कर दिया है और हमें इस मोड पर खडा कर दिया है कि या तो हम अपने विनाश के लिये तैयार रहें या हम अपनी मांदो से, अपने घोंसले से, अपने घरों से निकले और आज की समस्याओ पर संवाद करे सहमति बनाये एवं सहयोगात्मक कार्य शुरू करें ।***

8

समस्याओं का समाधान एवं सम्बंधित प्रश्न उत्तर

समस्याओं के समाधानों के सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है

प्रश्न: हमने समस्याओं का जिक्र किया था और आपने कहा कि हाँ, समस्याये है और समाधान भी उपलब्ध है-लेकिन जैसा आपने कहा कि समाधान को आज की व्यवस्था के कारण मूर्त रूप देने के पहले संवाद करना अच्छा होगा। हमारा कहना है कि इस संवाद-सहमती की प्रक्रिया में बहुत समय लग सकता है-तब क्या कोई ऐसा तरीका नहीं जिसमे संवाद भी चलता रहे और हमे कुछ राहत मिलने लगे?

उत्तर: उपरोक्त समस्याओं पर जब समाज के बुद्धिमान बुजुर्गों से जिक्र किया तो उन्होंने एकमत से कहा कि हालांकि यह सारी समस्याएं एक व्यापक संवाद, सहमति, सहयोग चाहती है लेकिन तब भी इतना कहेंगे कि समाधान हमारे आस पास ही है, समाधान-हवा, पानी, अग्नि (सूर्य) में है, समाधान-जल, जमीन-जंगल के इर्द गिर्द बनाई हुई व्यवस्था में ही है।

बुव्दिमान बुजुर्गो ने कहा तुम सफलता, विफलता, असफलता, कच्चाफल, कडवा फल एवं मीठे फल के चक्कर में न पड़ते हुये बस तीन चीजे याद रखो प्रार्थना, परिश्रम, एवं प्रसाद/उत्सव (Pray, Play, Party) प्रार्थना एकांत में, खेल खिलाडियों के साथ एवं प्रसाद सहभागियों के साथ (Pray in private, Play with player and Party with partners) और यह बिना शोर शराबे (बिना लाउड-स्पीकरों के)-बिना दूसरों को तकलीफ दिये। सामूहिक रूप से तुम सब उत्सव मनाओ, आनंद मनाओ और कोई आ जाये तो उसे भी अपने उत्सव मे शामिल करो उसको भी प्रसाद दो, खाना दो यदि वह रूकना चाहे तो रूकने का स्थान दो, फिर वह कोई भी हो जलचर, थलचर, नभचर सिर्फ इंसान ही नहीं (सुरक्षा की जाँच का अपना अलग विषय है)।
कहते है जैसा अन्न-वैसा मन, जैसा पानी-वैसी वाणी, तब जब यहाँ आस्था के केंद्रों पर अन्न एवं जल (पानी) प्रसाद रूप में शुद्ध एवं पवित्र मिलेगा तो लोगों की वाणी भी ठीक होगी एवं विचार (मन) भी ठीक होंगे, फिर जब विचार एवं वाणी ठीक होने लगेगी तब कर्म भी ठीक होने लगेंगे और हो सकता है व्यवस्था इतने से ही ठीक हो जाये।

यह पूछे जाने पर कि क्या यह उत्सव थोडा ज्यादा नहीं हो जायेगा, कि जो आये सभी को प्रसाद दो, उन्हे-रहने का स्थान दो। इस पर बुजुर्गों का कहना था कि उत्सव-आनंद-पार्टी में भी कंजूसी, फिर तो अच्छा है कि तुम परेशान ही रहो, समस्याओं से ग्रसित ही रहो, समाधान क्यों ढूंढते हो?

इस पर जब बुजुर्गो से पूछा कि उत्सव कितने दिन मनाना होगा इस पर बुजुर्गों का कहना था जितने दिन प्रसन्न रहना चाहते हो उतने दिन उत्सव मनाओ। जब प्रसन्न रहते रहते बोर हो जाओ-परेशान होने का मन करे, लोगो से लडाई झगडा करने, मारपीट करने का मन करे तब

उत्सव मनाना बंद कर दो, हाँ यह ठीक वैसा ही है, जैसे-खुशबू रहेगी तो खुशनसीबी होगी, बदवू होगी तो बदनसीबी, उत्सव होगा तो आनंद, उपद्रव होगा तो अशांति होगी।

इस पर जब पूछा कि लगातार उत्सव मनाने से बहुत सारे प्रबंध और भी करने होंगे, जैसे जो रूकना चाहे उसके लिए आवास, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं इस सबकी साफ-सफाई, तब क्या यह एक वैकल्किप व्यवस्था जैसी नही हो जायेगी तब इसके लिए धन कहाँ से आयेगा? यहाँ इतने लंबे समय जो रूकेगा वह काम भी माँगेगा तब उसके लिए काम कहाँ से लायेंगे?

<u>इस पर बुद्धिमान बुजुर्गों ने निम्न कहा:</u>

1. इस पर बुद्धिमान बुजुर्गों का कहना था कि जाहिर है यह एक वैकल्पिक व्यवस्था होगी आज के परिपेक्ष्य में, लेकिन यही एक व्यवस्था है जो कि अच्छी कही जा सकती है। जहाँ तक धन का सवाल है तो व्यक्ति की आय में साढ़े बारह प्रतिशत अन्यो के साथ (माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी एवं सरकार) के साथ समाज (धर्म) का भी होता है। जब यह पैसा जो समाज (धर्म) का हिस्सा है, समाज के पास आयेगा तब धन की कमी नहीं आयेगी। इसके अतिरिक्त जब रोज उत्सव चलेगा-तो बहुत सारे बुजुर्ग एवं बच्चें यहाँ आयेगे, तब अनाथाश्रम, वृध्दावस्था आश्रम का खर्च बचेगा फिर लोगों को काम देगे तो उस काम से भी तो आय होगी।

2. इस वैकल्पिक व्यवस्था में नया निर्माण कार्य भी होगा, इसमें नगरों ग्रामों का ऐसा निमार्ण रहेगा जहाँ साईकिल जैसी मशीनों से कार्य चल जाये। अर्थात अर्थव्यवस्था-“खुद पैदा करो खुद पकाओं एवं खुद खाओ”, के सिद्धांत पर “समूह की, समूह के द्वारा, समूह के लिए होगी”-जो बाढ़, अकाल, पेट्रोल-डीज़ल की सप्लाई बाधित रहने से, बैक्टिरिया-वायरस के फैलने सें शहरो में कर्फ्यू लगने से भी प्रभावित नहीं होगी, काफी हद तक आत्म निर्भर एवं थोड़ी बहुत परस्पर निर्भर रहेगी।

3. यहाँ जो बुज़ुर्ग होंगे वह अपने साथ पूरे जीवन का अनुभव लियें होंगे तब वह समाज को सामान्य सलाह मश्विरा देने का काम कर सकते है और यह आस्था का केंद्र एक बुद्धिमत्ता एवं

संसाधन केंद्र का रूप ले सकता है। जब यह केंद्र बुद्धिमत्ता एवं संसाधन का केंद्र होगा तो यह भूले भटको कि मदद कर सकता है, आपदा प्रबंधन का काम भी देख सकता है।

4. इसके अतिरिक्त जब यह केंद्र खाद्य एवं आवास-स्वास्थ्य की सुरक्षा देगा तो समाज में भिक्षावृत्ति बंद हो सकती है, शरणार्थियों की समस्या भी समाप्त हो जायेगी (भिक्षावृत्ति का एक दुष्परिणाम यह भी हुआ है कि आप किसी से औपचारिकता वश या सामान्य जानकारी के लिये भी किसी के पास जाते है तो सामने वाला उसे भिखारी की तरह ही देखता है), और जिस दिन समाज में भिक्षावृत्ति एवं शरणार्थियों की समस्या अपने आप बंद होगी तभी हम यह कहने लायक होंगे कि हम एक बेहतर समाज है।

5. आज समाज में कोई स्थान ऐसा नही है जहाँ यदि किसी परिवार में झगड़ा हो जाये तो परिवार का कोई भी स्त्री, पुरुष, वृद्ध या बच्चा बच्ची इज्ज़त के साथ एक रात्रि भी व्यतीत कर सके-जहाँ समाज भी आश्वस्त रह सके कि वह-स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बच्चा ठीक जगह रहा-बिना पैसे के भी, आस्था के स्थान पर बने बुद्धिमता एवं संसाधन केंद्र यह जगह दे सकते है।

समाज में ऐसा भी कोई स्थान नहीं है जो वैश्याओं एवं अन्य जो प्रतांड़ित है के पुनर्वास को क्रियान्वित कर सके, आस्था का केंद्र यह आयाम भी दे सकता है-आखिर वह भी तो किसी न किसी की बहन, बेटी, संतान होगी।

6. रोजगार देना सरकार का कार्य नहीं है वास्तव में सरकार का कार्य बाहय सुरक्षा, सिर्फ संवैधानिक न्याय, विदेशी संबंध एवं समाजो के बीच समन्वय बनाये रखने का है। इसके अतिरिक्त सारे कार्य, व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय से लेकर अन्य सभी कार्य समाज के दायरे में आते है।

इस पर जब पूछा कि ऐसी व्यवस्था का कोई उदाहरण है, तब बुज़ुर्गों ने कहा कि: पूर्व में ऐसी व्यवस्था रही है ऐसा हमारी श्रुति एवं स्मृति में व्याप्त है, साधु संतो एवं शैतानो को भी ऐसी

व्यवस्था का ज्ञान है और इसके अतिरिक्त यदि व्यवस्था तर्कसंगत लगती है तो कुछ नया करने से भी क्यों पीछे हटना।

7. व्यवस्थायें ठीक करने की सामान्यत: दो प्रमुख विधाएँ दुनिया में चलती है। एक विधा कहती है-कि शरीर के जिस अंग, समाज के जिस तबके में दिक्कत हो उसे ठीक कर दो-शरीर एवं समाज ठीक हो जायेगा। शरीर के एक-एक अंग को, समाज के एक एक व्यक्ति को, ठीक कर दो तो शरीर ठीक हो जायेगा, समाज ठीक हो जायेगा। इस तरह की प्रक्रिया आज सारे चिकित्सक, सारे पांडित्य पूर्ण ज्ञान से भरे हुए प्रचारक प्रयोग में लाते है। दूसरी विधा कहती है, यदि व्यवस्था ठीक रहेगी तो, व्यक्ति ठीक रहेगा ही, व्यक्ति ठीक रहेगा तो अंग प्रत्यंग ठीक रहेंगे ही। ऐसे विज्ञानी योग पर, व्यवस्था पर एवं इसके अनुसंधान व क्रियान्वयन पर ध्यान देते है। इसके अतिरिक्त कुछ और भी है जो कहते है, अंग प्रत्यंग, व्यक्ति, समाज एवं व्यवस्था दोनों का ध्यान, दोनों का ठीक होना जरुरी है। वह कहते है की यही मूल है यही मर्म है और यही धर्म है।

8. लोकतंत्र को सबसे खराब व्यवस्था कहा जाता है-लेकिन तब भी इतिहास की ज्ञात व्यवस्थाओ में लोकतंत्र ही सबसे ठीक है-यह लोकतंत्र पिछले आठ सौ वर्षों से ऐसा ही है यह अभी भी बच्चें की तरह ही है एवं विकसित नहीं हुआ, यह लोकतंत्र स्वतंत्रा की बात तो करता है-लेकिन गुलामी बढ़ाता है-नौकरों कि संख्या बढ़ाता है, जनता की भागीदारी एवं उनकी सृजनात्मकता को ख़त्म करता है। हालांकि लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन तो कहा जाता है लेकिन इसमें जनता ही जनता पर शासन करती है, जनता ही जनता पर चढ़ी रहती है, कभी एक समूह दूसरे को कभी दूसरा समूह पहले को और कभी कभी नया समूह आता है, तब वह दोनों को डराता है या दोनों मिलकर नये को हराते है।

लोकतंत्र में एक और एक मिलकर कभी दो नहीं होते, एक और एक ग्यारह तो दूर की बात है, ज्यादा से ज्यादा एक गुना एक बराबर एक, या कम से कम एक भाग एक हो पाता है (स्थिति जैसे है वैसे ही रहती है-स्टेटस को) और यही प्रशासन में अधिकारियों को सिखायी, पढाई जाती है

की, यथा स्थिती (स्टेट्स को) बना कर रखो, कुछ ज्ञानी कहतें है लोकतंत्र में कुछ अच्छा महज दुर्घटनावश ही होता है।

लोकतंत्र में दया, प्रेम, सहानुभूति, ज्ञानी-विज्ञानी का कोई अतिरिक्त स्थान नहीं है अतः इस में सुधार की जरूरत है, एक अच्छे एवं नये लोकतंत्र की आवश्यकता है-और यदि उपरोक्त दृष्टि पर ध्यान देंगे तो वर्तमान परिस्थिति से वर्तमान लोकतंत्र से बेहतर लोकतंत्र के बदलाव की प्रक्रिया आसान होगी-सुखकर होगी-बिना शोर शराबे के बिना खून खराबे के।

इस पर जब पूछा कि ऐसा करना तो बहुत दिक्कत का काम है, क्या नेता एवं शासकीय अधिकारी ऐसा होने देंगे? क्या लोकतंत्र इसकी इजाजत देता है? तब बुजूर्गो ने कहा कि समाधान चाहते हो और डरते भी हो तो कैसे होगा अरे समस्या की जड़ ही यह मौजूदा व्यवस्था है, और इसको ठीक करना जरूरी है-तुम प्रार्थना, परिश्रम एवं उत्सव शुरू करो संवाद शुरू करो, सब ठीक हो जायेगा। हो सकता है इन सभी के लिये एक-दो बार देश में जनमत संग्रह कराना पड़े (आज देश में जनमत संग्रह इसलिए भी जरुरी हो जाता है क्योकि आज जो भी महत्वपूर्ण राजनैतिक दल है वह स्वतंत्रता के पूर्व में बने थे या इन्ही दलों से निकले है, अतः इनकी मानसिकता आज भी कुछ हद तक वही है, या कह सकते है कि यह भारत को भारत नहीं कुछ और बनाना चाहते है।

प्रश्न: जब भगवान के मंदिर या आस्था के केंद्र में लोग रहेंगे तब उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा, व्यायाम एवं मनोरंजन का क्या होगा ?

उत्तर :- हाँ-इनका भी प्रबंध करो उत्सव चलता रहे तो जरूरी है कि मंदिर के साथ पाकशाला (भोजन), धर्मशाला (रहने का स्थान) के साथ-साथ स्वास्थ्य शाला, व्यायाम शाला, संगीत शाला, नृत्य शाला, अस्त्र-शस्त्र शाला भी रहे एवं चले।

प्रश्न: काफी व्यक्ति नशा भी करते है ऐसे में आप इन आस्था के केंद्रों में खेलकूद, मनोरंजन एवं नशे के लिए क्या व्यवस्था देखतें हैं?

उत्तर: इस संदर्भ में निम्न निवेदित है:

i. खेल एवं मनोरंजन को व्यापार बनाकर सबको मजबूर किया जाना जायज नहीं है, खेल एवं मनोरंजन में उसी तरह भाग लेने के लिये प्रेरित किया जाना जैसे युध्द में सैनिक भाग लेते है एवं बाकी को सिर्फ मूक दर्शक बनकर देखने सुनने के लिये छोड़ देना उचित नहीं है? खेल एवं मनोरंजन जब समाज की जिम्मेदारी है, इसमें सभी की भागीदारी बढ़ने से कॉम्प्यूटर, टेलीविजन एवं मोबाईल के मनोरंजन से मनोरंजित होने की मजबूरी भी कम होगी।

भारत में भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी, कत्थक कली नृत्य, संगीत कि बहुत विधाएं, वाद्द्य यंत्रों कि श्रृखला, खेलों में कबड्डी, दौड़, कुश्ती, सुरक्षा, युद्धकला की प्रतियोगितायें-धार्मिक क्षेत्र में ही विकसित एवं पली बढ़ी थी, तब बच्चे कहते थे बोर हो गये-चलो मंदिर चलते है वहाँ मनोरंजन हो जायेगा, वहाँ खेलने का मौका मिलेगा। इसको सभी आस्था के केन्द्रों पर स्थापित किया जा सकता है। कहते हैं दिन में कुछ देर नृत्य करने से, अच्छी तरह गाना गाने से-बीमारी एवं (डॉक्टर) दूर रहते हैं। स्वस्थ खेलो, मनोरंजन की सर्व-सुलभता एवं निर्बाधता- समज में तेजी से बढ़ रही अश्लीलता को भी काम करेगी।

ii. नशे के क्षेत्र में महान व्यक्तियों को कहते सुना है कि जीवन चलता रहे उसके लिए एक नशा जरूरी है। ऐसे में यदि नशा–खाने का, बीडी का, गांजा का, भांग का, रहे तो (चूँकि यह वानस्पतिक एवं ताजे है अत: ज्यादा नुकसान देय नहीं होते) बेहतर नहीं होगा बजाये उसके जो नशा, सडा-गला के तैयार किया जाये जैसे-बियर, शराब-या परिष्कृत करके (कोकीन, हशीश, एल.एस.डी.) बनाया जाए? कहावत है “गाँजा शांति लाता है एवं दारू/शराब क्रांति कराती है” । इसके अतिरिक्त जिन व्यक्तियों को इनका नशा नही होता कहा जाता है वह ज्यादा बड़े नशे के शिकार होते है, जैसे-पैसे का नशा, नाम का नशा, शक्ति का नशा, सत्ता का नशा।

पिछले दो सौ वर्षो से चाय एवं काफी एक बड़े नशे के रूप मे उभरे है और चाय-कॉफी जिसने महिलाओं को अपनी जकड मे ज्यादा लिया वही दूसरी ओर माताओ को बहुत कष्ट (चाहे गाय

माता हो या धरती माता) दिया है, जो बहुत ही चिंता का विषय है। चाय के विषय में पूरी सोच ही बदल गयी है कई जगह चाय की दुकानों के बाहर लिखा होता है-अमृत तुल्य चहा, फक्त दस रु (सिर्फ दस रूपये में) और यही चाय, उन्नीस सौ चालीस के आसपास कई शहरों में प्रदर्शनी के दौरान एक चाय चखोगें तो एक रसगुल्ला भी मुफ्त में मिलेगा के द्वारा चाय प्रचारित की जाती थी। चाय, काफी के लिए आवश्यक दूध, चायपत्ती, चीनी, दूध के लिए गाय, और गाय के लिये घास ने देश की बीस प्रतिशत अति उपजाऊ जमींन पर वृक्षों को काटकर कब्ज़ा कर लिया है।

घरों में देखा जाता है कि आदमी थक हार कर आता है-थोडा नशा करता है और नींद में सो जाता है। स्त्रियाँ चिल्लाती, गलियाँ देती है। आदमी को नींद आ जाती हैं एवं सवेरे तरों ताज़ा होकर फिर काम पर चला जाता है। औरतों को नींद नहीं आती एवं वह चिडचिडी हो जाती है एवं कई बार पागल भी हो जाती है। इसके अतिरिक्त महिलाएं सुंदरता एवं गहने का नशा करती है जो जाहिर है हर रोज, हर किसी के घर में नहीं हो सकता-लिहाजा भारत में महिला मानसिक रोगियों की संख्या पुरुषों के मुकाबले ज्यादा है।

नशे को प्रचार–नशे के विरोध से ज्यादा मिलता है, आधी-अधूरी शराब बंदी, गाँजे पर प्रतिबंध देश मे सरकारी विदेशी शराब की दुकानो का होना एवं उनका दिनभर खुले रहना, नशे के पदार्थे पर लगे कर से आये पैसे पर लार टपकना एवं सिगरेट के पैकेट पर वैधातिक चेतावनी लगाना विरोधाभासी है, और यह बंद होना बहुत जरुरी है। अनुभवी कहते है-मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया-हर फिक्र को धुंए में उड़ाता चला गया-और इसलिये शायद अनुभवी व्यक्ति सहज रह पाते है। बीड़ी के क्षेत्र में फिल्टर बीड़ी, चिलम, हुक्का एवं तम्बाकू, गांजे की छोटी-छोटी खेती की स्वतंत्रता के बारे में संवाद जरुरी है।

प्रश्न :- यह तो आज के गुरुद्वारों का विस्तृत रूप होगा?

उत्तर :- स्वाभाविक रूप से गुरुद्वारा-शुरुआत है, नानक के वचनों को आगे ले जायेंगे-गुरु ग्रंथ साहब को जानोगे तो यही सब नजर आ जायेगा। समाज में लंबे समय की विकृति है वह इसी को नकारने के कारण आयी है और जिस दिन यह पूर्णता को प्राप्त होगी, तब यह समाज सुखों का

सागर होगा, तब यह यह व्यवस्था जीती जागती दिखाई देगी, जो तिलिस्म वैश्विक व्यवस्था नहीं वरन, जीवंत वैश्विक व्यवस्था होगी।

प्रश्न: यह तो पूरा का पूरा ग्राम बन जायेगा-तब यहां पर रहने वाले और-यहां भगवान के दर्शन करने वाले क्या चाहेंगे, क्या करेंगे या क्या सहयोग दे सकते हैं जिससे सुख की वृद्धि हो उत्सव का आयाम बढ़े?

उत्तर :- यहां जो रहेंगे वह या तो अनाथ होगे या वह जिन्हें उनके परिवार ने त्याग दिया हो या जो स्वयं अपनी इच्छा से आये हो, बाकी सब तो एक-दो दिन के मेहमान की तरह ही आयेंगे और चले जायेगे। ऐसे में अनाथ बच्चों को बुजुर्गों का साथ एवं बुजुर्गों को बच्चों का ध्यान रखने का काम दोनों मिल जाएंगे और एक तरह से वृद्ध आश्रम एवं अनाथ आश्रम की आवश्यकता खत्म हो जायेगी।

यहां प्रसाद रूप में जब खाना मिलेगा तब समाज में यह पक्का तो हो ही जायेगा कि कोई भूखे न रह पाये और भोजन के सतत रूप से चलने से खाद्यान्न सुरक्षा अपने आप होने लगेगी (लंगर के चलने से खाद्यान्न भंडारण भी करना पड़ेगा, और सब्जी-फलों का प्रबंधन भी करना पड़ेगा)। इतने व्यक्तियों का खाना एक साथ बनेगा तो फल, सब्जियां एक साथ कटेंगी, सब्जियों, फलों को छीलने, काटने से जो बचेगा वह गायों, भैंसों के काम आयेगा और जो बाद में खाना बचेगा वह कुत्तों के काम आयेगा-इस तरह वह कहावत की खाने का पहला भाग गाय को और अंतिम भाग कुत्ते को दो वह भी चरितार्थ होगी-और इससे एक तरफ जानवर पलेगे और दूसरी ओर सफाई भी रहेगी, अवशेष बचेगा ही नहीं तो अवशेष के निष्कासन की समस्या कहाँ से आयेगी।

यहाँ के रहने वालों के लिए जब मनोरंजन की व्यवस्था होगी, नृत्यशाला, संगीतशाला होगी तब वह सिर्फ वही के लोगों के लिए तो नहीं होगी-उसमें समाज के बाकी सदस्य भी हिस्सा ले सकते

हैं-चूँकि यह आस्था के केंद्र पर होगा-इसलिए यह स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करायेगा-और समाज टेलीविजन या मोबाइल या सिनेमा से ही मनोरंजन प्राप्त करने के लिए बाध्य नहीं होंगे।

यहाँ रहने वालों के लिए जब सुरक्षा का इंतजाम करोगे और अस्त्रशाला एवं शस्त्रशाला होगी तो जाहिर है वह प्रदर्शनी के लिए नहीं होंगी और कार्य रूप में रहे इसके लिए वहाँ पर नियमित कार्य कलाप होंगे जिससे सिर्फ सुरक्षा ही नहीं होगी, स्वास्थ्य भी रहेगा, निर्भयता का वातावरण बनेगा और इससे समाज में साहस का संचार भी होगा।

यहाँ रहने वाले जो बुजुर्ग होंगे अपने साथ एक अनुभव लेकर आयेगे और वह समाज को शिक्षा, सलाह, मार्गदर्शन देने में समर्थ होंगे। लगभग सभी बुजुर्गों ने बच्चों का मल-मूत्र भी साफ किया होगा-और समाज उनके बच्चों की तरह ही होगा, ऐसे में वह मंदिर की और आसपास की सफाई का कार्य भी देख सकेंगे और उन्हें यह भी दिक्कत नहीं होगी कि यह छोटा कार्य है, वह सभी यह जानते हैं कि मल-मूत्र साफ करना, प्रवचन देने से ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य है। इस तरह से (म्युनिस्पिल) नगर-पालिका, नगर निगम की आवश्यकता भी नहीं रहेगी और बेहतर सफाई रहेगी।

प्रश्न: जब आस्था के केंद्र शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई, संगीत, शस्त्र, सलाह के साथ-साथ खाद्यान्न एवं धर्मशाला (होटल) का भी कार्य संभालेंगे तब यह आस्था का केंद्र कैसे रहेंगे यह तो एक पूरी-की-पूरी वैकल्पिक व्यवस्था होगी?

उत्तर :- आस्था के केंद्र का मतलब यह नहीं होता-कि जाओ पैर छुए, चरणामृत लो, प्रसाद लो और चले आओ या नमाज पढ़ो, बाइबिल का पाठ करो और आ जाओ-आस्था के केंद्र का मतलब आधारभूत होता है, और यह नैसर्गिक होता है, सभी प्राणियों में आस्था एवं प्रजनन प्रभु-प्रदत होती है-और यह सभी-आयाम आस्था का ही प्रदर्शन है।

प्रश्न :- इसके लिए पैसा कहां से आयेगा-शुरुआती एवं शाश्वत ?

उत्तर :- कोई व्यक्ति सौ रुपये कमाता है-तब उस सौ रुपये पर उसके परिवार, समाज एवं सरकार का कितना अधिकार होता है, क्योंकि मां-बाप ने उसे बड़ा किया, समाज एवं सरकार ने उसे सुरक्षा, शिक्षा एवं अन्य सामान मुहैया कराये, और जिस तरह मां-बाप ने उसे बड़ा किया ऐसे ही उसकी जिम्मेदारी है कि वह प्रकृति को आगे बढ़ाएं-और अपने बच्चों को पाले, बड़ा करें, और खुद अपने (पति-पत्नी) को भी पाले-तब ऐसे में उनके आठ हिस्से होते हैं, जिसमे कमोबेश सबका बराबर का अधिकार बनता है, इस तरह से आस्था के केंद्रों का साढ़े बारह प्रतिशत हिस्सा बनता है, और इतने पैसे से आस्था के केंद्रों को चलने में कोई परेशानी नहीं होगी-बल्कि सहभागिता के कारण धन, साधन, संसाधन एकत्रित ही होंगे। उनका कहना है कि शुरुआत तो करो आज भी गुरुद्वारे चल रहे हैं। तब यह भी चला सकोगे और यह कृतज्ञता के भाव से चलेंगे।

प्रश्न :- आपने आय का विभाजन करते हुए-दादा दादी, नाना-नानी का भी हिस्सा नहीं रखा, परदादा-परदादी की बात तो इसके आगे है, आपने कहा यह समाज का हिस्सा है, इसी तरह आपने बूढ़ी गाय एवं अन्य बुजुर्ग पालतू जानवरों को समाज का हिस्सा बताया, घर के बुजुर्गों के घर में हिस्सा ना रखना, उन्हें आस्था के केंद्रों में समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बताना, क्या यह गलत सोच एवं निंदनीय नहीं है?

उत्तर :- जैसा वर्ण व्यवस्था के प्रश्न के उत्तर में कहा कि वह व्यक्ति की कार्य रुचि के हिसाब से समाज में श्रम का पहला विभाजन था, उसी तरह उम्र के हिसाब से श्रम का दूसरा विभाजन आश्रम व्यवस्था है एवं वर्ण व्यवस्था व आश्रम व्यवस्था को मिलाकर वर्णाश्रम व्यवस्था कहते हैं।

आश्रम व्यवस्था को सूर्य में पढ़ने वाले बारह वर्षीय अंतर एवं हर आठवें बार में बड़ा अंतर जो सूर्य में आता है उसके हिसाब से भी जोड़ा गया है। कहते हैं बारह वर्ष तक बचपन लड़के-लड़कियां एक जैसे, बारह वर्ष से चौबीस वर्ष तक किशोरावस्था, इन दोनों अवस्थाओं को ब्रह्मचर्य अवस्था कहा गया है, जिसमें ज्ञान अर्जन, शिक्षण-प्रशिक्षण लेने को, गुरु ब्रम्हा को आचार्य माना गया है

इसलिए इस आश्रम को ब्रह्मचर्य आश्रम कहा जाता है, इस आश्रम में गुरु की सेवा करने को प्रमुख माना गया है, और कहा गया है कि कर्म ही पूजा है। इसके उपरांत विवाह करना, घर बसाना, गृह कार्य करना, जिसे गृहस्थ आश्रम कहा गया और इस अवस्था को चौबीस से अड़तालीस वर्ष की उम्र तक रखा गया, इसके उपरांत वानप्रस्थ जो अड़तालीस से बहत्तर वर्ष तक एवं उसके बाद संन्यास आश्रम जो बहत्तर वर्ष के बाद शुरू होता है और चलता रहता है।

इस विभाजनको एक व्यक्ति की जीवन के हिसाब से देखें-तो पाएंगे कि रामकृष्ण (एक नाम) वहचौबीस वर्षों तक ब्रह्मचर्य आश्रम में रहेंगे, इस दौरान वह छः वर्ष तक घर में रहा, छः वर्ष से बारह वर्ष की उम्र तक प्राथमिक स्कूल में गया, जो घर के पास हो और जहां लड़के लड़कियां दोनों एक साथ पढ़ते हो, उसके बाद वह माध्यमिक स्कूल एवं उच्च शिक्षा के लिए कॉलेजया सुदूर विश्वविद्यालय में जायेगा।

जब वह पढ़कर आयेगा तब उसका विवाह होगा, उसकी पत्नी आयेगी और नव दंपत्तिगृह कार्य संभालेंगे शुरुआती प्रशिक्षण के बाद उसके माता-पिता गृह कार्य से मुक्तहो गये-अब प्रश्न आता है कि वह क्या करेंगे-तब ऐसी व्यवस्था बनी की नव दंपतिगृहस्थी का गृहकार्य इनके माता-पिता गृह के बाह्य कार्य देखें और बाह्यप्रास्थी बने, क्योंकि एक घर में जब नया बच्चा जन्म लेगा-तब एक ही कार्यको दो माताएं एवं दो पिता (पिता एवं पिता के पिता) देखेंगे तो दिक्कत होगी।

जब रामकृष्ण बहत्तर वर्ष के होंगे तब-उनका पुत्र करीब पचास एवं प्रपौत्र करीब चौबीस का एवं विवाह योग्य होगा। राम कृष्ण के पोते के विवाह के उपरांत-घर के गृहकार्य पोता-पौत्र वधु देखने लगे, घर के बाहर के कार्य पुत्र एवं पुत्र वधू देखने लगे तब छोटे बच्चे के लिए घर में तीन माताएं तीन पिता दिखाई देंगे जो बहुत दिक्कत वाला है, तब ऐसे में रामकृष्ण का एवं उनकी पत्नी के लिए उचित होगा कि वह समाज के काम देखें और इस तरह एकअच्छे न्यास सन्यास को प्राप्त हो, जहां वह ब्रह्मचर्य के दौरान बच्चों की शिक्षा देखेंगे, उनको शिक्षित प्रशिक्षित करें, समाज में न्याय व्यवस्था देखें और वह सभी कार्य जो सामाजिक है और जिसके लिए सारा समाज अपने आय का साढ़े बारह प्रतिशत धन देगा जो अगर जोड़ेंगे तो पारिवारिक स्थिति में मिले हिस्से से ज्यादा ही होगा।

ऐसी अवस्था में दादा-दादी, नाना-नानी, परदादा-परदादी परिवार से उठकर समाज के सम्मानीय नागरिक हो जाते हैं और समाज के सबसे महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी भेदभाव, लालच, पूर्वाग्रह के करने में सक्षम होते हैं-ऐसे में यह कहना सर्वथा अनुचित होगा कि उन्हें छोड़ दिया गया है।

आज के समाज में बुजुर्गों के काम छीन लिए गये है इसलिए इनका असम्मान दिखायी दे रहा है। बुजुर्गों का काम छीनकर जवानों को दे दिया गया है जो अभी खुद भी सीखे नहीं है, और पूरी तरह सक्षम भी नहीं है या कहें कि अक्षम है इसलिए समाज में कार्य कौशल की कमी, अक्षमता, विषमता, असमानता दिखायी देती है जो शिक्षा एवं न्याय के क्षेत्र में सबसे ज्यादा परिलक्षित होता है।

ऐसी व्यवस्था जहाँ व्यक्ति, जानवर, बुजुर्ग होने पर बोझ ना बनें बल्कि ज्यादा सम्मान पाये एवं ज्यादा महत्वपूर्ण कार्यों को देखे, एक अच्छी व्यवस्था कही जा सकती है-यह निंदनीय नहीं - सम्मानीय व्यवस्था है।

बहुत समय से यह प्रयोग में नहीं है, समाज में गिरावट का दौर लंबा हो गया है इसलिए व्यवस्थाओं के स्वरूप विस्मृत हो गये है और अब इस व्यवस्था के बारे में सुन के अजीब लगता है, स्मृति आते ही या इस व्यवस्था को मूर्त रूप में देखने पर वर्णाश्रम व्यवस्था श्रेष्ठ लगेगी और हमारे यही प्रयास होने चाहिए कि यह व्यवस्था शुरू हो और चले।

प्रश्न: जब समाज सरकार के बराबर पैसा लेगा तब समाज एवं सरकार के कार्यों में क्या विभाजन होगा?

उत्तर: समाज माँ की तरह सारे आंतरिक कार्य देखे और सरकार पिता की तरह सारे बाह्य कार्य और आपदा की स्थिति में और वैसे भी मिलजुल कर सामंजस्य में काम करें।

प्रश्न: समाज सरकार पर हावी तो नहीं हो जायेगी?

उत्तर: सरकारें समाज पर हावी हुई है इसलिए आज जो विकृतियां दिखायी दे रही है वह हुई है, समाज सरकार पर कभी हावी नहीं हो सकता क्योंकि सरकार-समाज का बढ़ा रूप है और समाज की स्वीकृति से सरकार का निर्माण हुआ है और इसी स्वीकृति से उसे ताकत प्राप्त होती है, और होती रहेगी, जब समाज कमजोर हुआ है या किया गया है, तब-तब आपदा आयी है और गुलामी तक की नौबत आयी है। और एक बात साधु-संतों, सन्यासी का यही दृष्टि रहती है कि सामंजस्य बना रहे, समरसता बनी रहे, तब विवाद की स्थिति में ऐसे महात्माओं के वचनों को आदेश समझ कर मानते रहेंगे तब तक चीजें ठीक चलती रहेगी।

हाँ जब इनकी (साधु-संत एवं जागृत व्यक्तियों) बात मानना बंद हो जाता है इनका सम्मान कम हो जाता है या साधु संत महात्मा स्थान छोड़कर चले जाते हैं-तभी दिक्कतें बढ़ जाती है। अतः इनका सम्मान का पूरा ध्यान रखना हमारा प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए।

प्रश्न: आपने कहा कि आस्था के केंद्रों से चीजें चालित एवं प्रचलित हो तो अच्छा रहता है, लेकिन आज देखने में तो आता है कि आस्था के केंद्रो में ही आपस में झगड़ा है-ऐसे में यह सब कैसे होगा?

उत्तर: यह संक्रमण काल है, बहुत सारे धर्म आज इंटरनेट के कारण पूरी तरह से उजागर हो गये हैं एवं सभी आस्था के केंद्र अंदरुनी रूप से, बाह्य रूप से (खुद से एवं दूसरे से) वाद-विवाद एवं संवाद में संलग्न है। एक दूसरे की आस्था खत्म करने में सदियां गुजर गयी और हुई नहीं, अब एक ही रास्ता है सब एक ही हो, एकीकरण हो-सब आपस में एक हो, या मिलजुलकर अच्छा रास्ता ढूंढे और आगे बढ़े।

कहा जाता है की दुनिया में तैंतीस प्रकार (तैंतीस कोटि, कोटि =प्रकार, तरह) देवी-देवता हैं, तब क्या दिक्कत है यदि धार्मिक परंपरा के लोग अपने आस्था के केंद्र में-जीजस को, बुध्द को, महावीर को एवं नमाज पढ़ने की जगह देते है। क्या ऐसा नहीं समझ सकते, जैसे आज सामान खरीदने - बेचने के लिए बड़े बड़े केंद्र (शॉपिंग मॉल) है उसमे सब मिलता है, कल वैसे ही धार्मिक स्थल बन जाये, जहाँ सभी तरह की पूजा-अर्चना -प्रार्थना की जा सके ।

प्रश्न :- आज आस्था के नाम पर जो व्यापार चल रहे हैं बहुत से आस्था के केंद्र निजी हाथों में हो गये, कुछ ट्रस्ट के हाथों में और बहुत सारे सरकार के नियंत्रण में, ऐसे में आप जो कह रहे हैं वह कैसे होगा, उसका केंद्र क्या होगा?

उत्तर :- आस्था के केंद्रों की पुर्नस्थापना करनी होगी सारे आस्था के केंद्र (शिवाय व्यक्ति के घर में) सामाजिक होते हैं और होने चाहिए, नहीं है तो करने होंगें न निजी, ना ट्रस्ट न भ्रष्ट के और

ना ही शासकीय, तभी यह सब अच्छी तरह से चलेगा (तमाम गैर सरकारी संस्थान एन.जी.ओ. पैसे के गबन का आसान माध्यम है, इन्हें समाज द्वारा छटाई करने के बाद बंद करना होगा, या समाज के आस्था के केंद्रों में समाहित करना होगा)। आस्था के केंद्रों में या आस्था के केंद्रों के नाम धन का (राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय) क्रमिक आवागमन बंद करना होगा। मंदिर/मस्जिद/चर्च/गुरुद्वारा में आकर गुप्त दान देना जायज है।

प्रश्न :- आपने कहा कि व्यक्ति की आय में साढ़े बारह प्रतिशत समाज (धर्म आस्था) का होता है-आपको क्या लगता है कि आस्था के केंद्र को यह पैसा मिल पायेगा और अगर मिलता है तब क्या आप भी बैंक खोलेंगे, अनुसंधान के लिए पैसा देंगे?

उत्तर :- सरकार आज सिर्फ तीन प्रतिशत लोगों से ही कर वसूल पा रही है, जिसके कारण उसे दूसरे कर भी लगाने पड़ते हैं तब भी सरकार में धन की कमी बनी रहती है, एवं बनी-बनाई, चलती हुई संस्थान बेचने पड़ते हैं और तब भी घाटे का बजट एवं रुपये का अवमूल्यन लगातार हो रहा है।

आस्था के केंद्र सामाजिक है, और जब भी आस्था के केंद्रों की पुनर्स्थापना शुरू होगी, आस्था के केंद्रों को पहले पैसा आयेगा-क्योंकि वह पैसा स्वयं जनता इकट्ठा करेगी और जितना आस्था के केंद्रों को आयेगा उतना ही सरकार को जायेगा, वास्तव में यह कई गुना बढ़ जायेगा। ऐसे में जरूरी होगा कि मुद्रा, मुद्रा के रूप में ना रखी जाये (क्योंकि उसका अवमूल्यन होता रहता है, उसका कृत्रिम या दादागिरी से उन्मूलन करना पड़ता है) बल्कि पदार्थों, सभी तरह की धातुओं, खाद्दानों के रूप में रखी जाये। न सिर्फ सोने की जो शायद लूटना आसान हो। ऐसे में बैंक वैसे ही होंगे जैसे-कुरान में है, बिना ब्याज के और स्वाभाविक रूप से इसमें साढ़े बारह प्रतिशत शिक्षा-अनुसंधान के लिए रखा जा सकता है।

प्रश्न :- आपने कहा आस्था के केंद्र शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, खाद्य सुरक्षा, सफाई, मनोरंजन एवं नगर प्रबंधन जैसे कार्य संभालेंगे, लेकिन आस्था के केंद्रों पर तो आज पंडितों, पुरोहितों, मौलवियों एवं पादरियों का एक छत्र राज्य जैसा है, वह दूसरों को अपने से निम्न समझते हैं, कई स्थानों पर तो वह सेवाकारो को प्रवेश के लिए भी प्रतिबंध की बात करते हैं, कोई भी शुभ कार्य हो या परिवारों में कोई दुखद घटना हो जाये, उन्होंने अपनी उपस्थिति में धार्मिक ग्रंथों के पूजा पाठ पर आरक्षण बना रखा है-अगर समाज में ऐसी स्थिति है एवं आस्था के केंद्रों का यह हाल है तो आप जो कर रहे हैं-वह कैसे संभव होगा-पंडितों, मौलवियों, पादरियों अपने अधिकारों को पेटेंट और इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट से ज्यादा ताकतवर मानते हैं- वह इसे वंशानुगत कहते हैं, जन्म द्वारा निर्धारित मानते हैं और कहते हैं कि मर कर भी जो ना जाती है, वह जाति है, ऐसी परिभाषा वर्ण व्यवस्था की करते हैं-आप का क्या कहना है?

उत्तर :- यह जरूरी है और सबसे कठिन कार्य है इस पूरी की पूरी व्यवस्था में। पंडित, मौलवी, पादरी कहेंगे की यह व्यवस्था अच्छी है-और यह चलनी चाहिए-लेकिन मार्ग में सबसे ज्यादा बाधक ऐसे अधकचरे ज्ञानी ही है। पंडित, मौलवी, एवं पादरी ही होते हैं-जो पाठ तो करते हैं ज्ञान का कि भगवान के घर सब बराबर है-लेकिन व्यवहार मूर्खों जैसा करते हैं कि सबसे ज्यादा ज्ञानी सारी दुनिया में यही है (इसलिए आज पंडितों, मौलवियों एवं पादरियों की दशा ठीक नहीं है)। क्योंकि इन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी, प्राकृत, पाली, हिब्रू में बाइबल, कुरान, गीता, महाभारत पढ़ ली है, याद कर ली है (और दुनिया में सूर्य के अधीन नया कुछ संभव नहीं है और ना ही हो सकता है), यह कहते सब कुछ है, बस तोते की तरह, अधिकांश आँखें बंद करके जगत को देखते हैं और इसी कारण खुद भी परेशान रहते है और दूसरों को परेशान करते हैं।

इनको जगाना या इनको आस्था के केंद्र से भगाना व इन्हें अच्छी तरह पढ़ाना एवं इनकी कर्मकांड कराने वाले की सामाजिक परीक्षा लेना आवश्यक है, एक ऐसी व्यवस्था भी जरूरी है कि स्त्री पुरुषों दोनों के लिए दरवाजे खुले हो आस्था के केंद्रों की पूजा-अर्चना, प्रार्थना, नमाज का काम संभालने के लिए।

आदिवासी-आदि-शुरुआत, प्रारंभ से जो ऐसे ही वास करते हैं-उनमें कभी भी समाज का वर्गीकरण नहीं हुआ। सभी व्यक्ति लगभग-सभी काम करने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित किये जाते हैं और आदिवासियों के मध्य जातिगत कोई समस्या नहीं है। आदिवासियों के अतिरिक्त साधु, संत भी जाति से ऊपर है (जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान, मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान)।

आज के युग में देखे तो एक कार बनाने के लिए टायर, ट्यूब कहीं बनते हैं, स्टील कहीं बनता है, प्लास्टिक एवं आंतरिक सज्जा का सामान कहीं बनता है, ढांचा कहीं बनता है, इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल का सामान कहीं और बनता है-और इन सब के सहयोग से कार बनती है। यह सब निर्माण की इकाइयाँ और इन में काम करने वाले अपने कार्यों में धीरे-धीरे पारंगत होते जाते हैं-और समय-समय पर अनुसंधान एवं विकास द्वारा किसी नयी कार के लिए भी यह टायर, ट्यूब, इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल, प्लास्टिक देने में सक्षम होते हैं। कालांतर में ऐसे निर्माण की इकाइयाँ, इनमें काम करने वाले कामगार ना केवल कुशलता को प्राप्त करते हैं बल्कि अपने परिवार एवं अपने संपर्क में आये हुये व्यक्तियों को भी इसमें पारंगत करने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

आज के जगत में ऐसा अनुभव किया है कि कार्य के विभाजन से प्रत्येक इकाई का कार्य कुशलता, कार्य क्षमता एवं कार्य दक्षता बढ़ती है, एवं अंतिम उत्पाद भी अच्छा होता है। समाज का वर्गीकरण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, व्यापारी एवं सेवाकार ज्ञात जगत का पहला वर्गीकरण था और इसी सोच को दर्शाता है कि वर्गीकरण से व्यक्ति एवं सामूहिक क्षमता बढ़ेगी और सभी व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अपने जीवन को सफल बनायेंगे एवं स्वस्थ्य, सुखी, सरल बने रहेंगे।

कुछ धर्म, कुछ संप्रदाय कहते जरूर हैं कि उनके यहाँ जातियां नहीं है, लेकिन उनमें से कोई भी आदिवासियों या अन्य साधुओं-संतो की तरह जाति विहीन या जातियों से ऊपर नहीं है। कुछ संप्रदाय में विभाजन दूसरी तरह से है जैसे-राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षात्मक, और कुछ पूरी तरह से बढ़ ही नहीं पाये-वह ढाई हजार वर्षों मे अपना एक हजार लोगों का गांव भी नहीं बना पाये और आज भी दूसरे समाजों के कंधों पर जिंदा है और उन्हें लूट रहा हैं।

ऐसे समाज या धर्म कह सकते हैं कि उनके यहाँ जाति व्यवस्था नहीं है-लेकिन उनके कहने का कोई मतलब नहीं है। ऐसे धर्म सिर्फ व्यापारियों के हैं या थे, या यों कहें कि सामाजिक झंझटों से बचने के लिए व्यापारियों ने अपने आप को धर्म के रूप में विकसित होने ही नहीं दिया और (कोयल की तरह अपने अंडे को कौवे के घोंसले में छोड़े हुए हैं) सफाई एवं अन्य शारीरिक श्रम के कार्य दूसरे से ले रहे हैं।

आज जब हम व्यक्तिगत आय में परिवार के सदस्यों, समाज एवं सरकार के हिस्से की बात करते हैं-तब हमें व्यापारिक आय में हिस्सेदारी की बात भी करनी होगी एवं यह भी कि मुनाफा कितना तर्कसंगत है निर्माण में, बेचने में, लेन-देन में, यह जरूरी है जिससे समाज में ना उपद्रव हो और ना ही उनके रोकथाम के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पडे।

जैसा पूर्व में चर्चा हुई कि आध्यात्मिक जगत में यह आम है कि त्रेतायुग में ब्राह्मणों का काल था, एवं द्वापर युग क्षत्रियों का और कलयुग कल पुर्जे मशीन का व्यापारियों का और इसमें आज जो समय चल रहा है वह संक्रमण का समय है। ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों की आज के युग में अपने को शीर्ष पर दिखाने की कोशिश ठीक वैसी ही है जैसे-रस्सी जल जाती है लेकिन उसमें बल पड़े रहते हैं। पूरे ज्ञात जगत में (महाभारत काल में) एकमात्र उदाहरण अभिमन्यु का है जो पेट से सीख कर आया जो कहा जा सकता है कि वंशानुगत है, लेकिन वह भी पूरा नहीं सीख पाया- इसलिए सभी को यह आग्रह छोड़ना होगा कि ज्ञान, सामर्थ, वंशानुगत है और सभी को अपने रुचि एवं सामर्थ्य के अनुसार कार्य चुनने की स्वतंत्रता-वरण करने की छूट समाज में रखनी होंगी।

कार्य वरण (वरण=चुनाव) की व्यवस्था ही वर्ण व्यवस्था है और यह कार्य रूप में रहे, मूर्त रूप में रहे इसके लिए जरूरी है सभी स्तर पर शिक्षण हो और शिक्षण, परीक्षण के द्वारा सबके लिए खुले हो। आस्था के केंद्रों से समाज के कार्य संचालित हों-इसके लिए वर्ण व्यवस्था पर संवाद जरूरी होगा?

इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक जगत में यह चर्चा भी है कि संक्रमण काल में प्रथम दौर में जो गलत होंगे वह उजागर हो जाएंगे और समाप्त हो जाएंगे और जो सही होंगे वह उजागर हो सुख समृद्धि को सभी के साथ बांटने के कार्य को सरलता से कर पायेगे, और आस्था के केंद्रों को पुनः स्थापित करेंगे-जिससे समाज अच्छी तरह से चले। इस प्रश्न के उत्तर में यही कहेंगे कि यह बड़ी जटिल समस्या है, लेकिन समाधान की दिशा में समाज पहले से ही कार्यरत है, बस इसमें सहयोग करने की जरूरत है।

प्रश्न :- आपने वर्णाश्रम व्यवस्था की बात की, इस व्यवस्था में व्यक्ति के स्वयं के विकास के क्या आयाम हैं एवं इनका समाज में प्रचलित पूजा-अर्चना से भी क्या कोई संबंध है?

उत्तर :- वर्णाश्रम व्यवस्था जो व्यक्ति की उम्र के हिसाब एवं व्यक्ति की रुचि के हिसाब से वर्गीकरण है-वह वर्गीकरण उम्रगत एवं कार्यगत पूजा अर्चना के स्वाभाविक विभाजन की बात भी करता है।

उम्र के पहले पड़ाव-पच्चीस वर्ष जो विद्या-अध्ययन का है, गुरुओं की सेवा का है-में कहा गया कि-कर्म ही पूजा, कर्म ही धर्म है।

इसके बाद के पड़ाव-पच्चीस से पचास वर्ष की उम्र तक गृहस्थ जीवन का है, जहां शादी होती है और बच्चे पैदा होते है-बच्चे अच्छे हो, बच्चे भगवान जैसे हो-तब कहा गया कि साकार पूजा-मूर्ति पूजा-अच्छी है। ॐ नम: साकार (नमस्कार) शब्द गृहस्थ जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

इसके बाद के पडाव में (पचास से पचहत्तर तक) घर के बाहरी कार्य, वानप्रस्थ जीवन में जप-स्त्रोत को बेहतर बताया गया है।

इसके बाद के पड़ाव (पचहत्तर से सौ वर्ष तक)-घर से बाहर एक न्यासी का जीवन-एक अच्छा जीवन-संन्यास का जीवन होता है, इसमे निराकार (बिना-आकार-सभी जगह भगवान है-कही भी पूजा अर्चना कर सकते है) पूजा का महत्व दिया गया। समाज इसकी सीधी-सादी-अभिव्यक्ति है/या पूजा का तरीका है।

इसके बाद के उम्र का कोई विभाजन नहीं है-और यह कहा गया कि वह अब स्वयं भगवत्स्वरूप हो गये है-उनकी अब कोई तिथि नहीं है कि वह दुनिया से कब अदृश्य हो जाये-वह अतिथि हो

गये-वह देवतुल्य हो गये-ऐसे में-हम ही ब्रह्म है-हम ही आल इन आल-हमी अल्लाह है की भावना-इन अतिथियों में आ जाती है-और समाज इन्हे पूजता है-और यह जिसके घर भी जाते है वहीं कहता "अतिथि देवो भव:" - और इनका देवता की तरह स्वागत करता, पूजा करता। इस तरह से देखे तो एक छोटे से बालक से अल्लाह बनने के और फिर अल्लाह में लीन हो जाने के, विलीन हो जाने के सारे आयाम मौजूद है-इस व्यवस्था में-आत्मा-महात्मा-परमात्मा बनने और हो जाने के।

प्रश्न :- मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्थायें अपने आपको वेलफेयर स्टेट (जनहित कल्याणकारी देश) कहती है-और इसलिए करो को बढा कर रखा है। कल के दिन यदि यह करों मे विभाजन हुआ और समाज के पास भी काफी पैसा हुआ और समाज ने जो काम कहे जैसे **-खाद्यान्न सुरक्षा के लिए लंगर, एवं बाकी कार्यों को सहज में करने की बात कही है वह नहीं किये-तब आम जनता क्या करेगी-क्या जैसे आज आंदोलन होते हैं-वह करने होंगे, यह या इसमे कुछ अंतर्निहित सुरक्षा रखनी होगी जिससे कि गड़बड़ी हो ही नहीं। आपका क्या कहना है?**

उत्तर :- आज जो लोकतंत्र है वह प्रतिनिधि लोकतंत्र है, एक बार वोट दे दिया फिर एक अवधि तक भूल जाओ, फिर नियत अवधि के बाद चुनाव होंगे तब हम इन्हें बदल सकते है-इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते। वर्तमान लोकतंत्र इंग्लैंड में पिछले आठ सौ वर्षों में, अमेरिका में दो-तीन सौ वर्षों में एवं भारत में अस्सी वर्षों में इससे आगे नहीं बढ़ पाया। इस अदला-बदली में बार-बार वही चेहरा एवं पार्टियां आ जाती है-जिन्हें जनता पहले नकार चुकी है, क्योंकि विकल्प ही नहीं है। आज इस व्यवस्था के बारे में चर्चा करने की जरूरत ही इसलिए पड़ी है, यदि सब ठीक चलता तो यह बात ही नहीं होती।

आस्था के केंद्र से चलने वाली व्यवस्था में दिन-प्रतिदिन उन लोगों का सहयोग रहेगा-जो एक तरफ इनको चलाएंगे, इसके मालिक रहेंगे एवं दूसरी तरफ इस व्यवस्था के लाभार्थी भी। इस व्यवस्था में यदि गड़बड़ी हुई तो-सवेरे शाम में भी अंतर आ पायेगा एवं कोहराम मच जाएगा-

इसलिए इस भावात्मक रूप से जुड़ी हुई व्यवस्था में तभी गड़बड़ी आती है-जब लोग सुरक्षा (भौगोलिक-आंतरिक एवं बाह्य) पर ध्यान नहीं देते-या आलसी हो जाते हैं एवं बुजुर्गों का एवं साधु संतों का सम्मान बंद कर देते हैं, या साधु संत छोडकर चले जाते है-या कह सकते है जब समय पूरा हो जाता है।

उत्तर: दो बातें आती है: “यथा मुड़ें तथा ब्रह्मांडे, मुड़ें-मुड़ें मतर भिन्ना” जैसे एक सिर है वैसा ही पूरा ब्रह्मांड है, एवं प्रत्येक सिर का अलग-अलग मत है। इसलिए एकता एवं अनेकता साथ-साथ चलकर ही जीवन को चलाती है।

जहाँ तक विश्व बंधुत्व का प्रश्न है-उसके लिए ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं है सिर्फ व्यक्ति अपने जीवन में सभी संबंधों को देखें तो पायेगा कि विश्व के सभी प्राणी किसी ना किसी रूप में उसके ही बंधु बांधव हो सकते हैं-या है।
एक बच्चा जब जन्म लेता है-तब उसके भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी एवं परदादा-परदादी, परनाना-परनानी एवं इनसे जुड़े हुए सभी व्यक्ति बच्चे के किसी-न-किसी रूप में संबंधी होते हैं-एवं जब बच्चा प्रौढ़ हो जाता है-तब उसके पुत्र-पुत्री (पोत्र-पौत्री) एवं उसके पुत्र-पुत्री (प्रपौत्र-प्रपोत्री) तथा उनके सभी रिश्तेदार किसी न किसी रूप में संबंधी-जुड़े हुए व्यक्ति उस प्रौढ़ व्यक्ति के संबंधी होते हैं, इसके अतिरिक्त प्यार के रिश्ते, मन से माने हुए रिश्ते, दोस्त भी उसके संबंधी होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति जब वह पैदा होता है-तो उसको तीन पीढ़ियों के दर्शन (पिता, दादा, परदादा) आराम से हो जाते है, इसी तरह जब व्यक्ति के देह त्यागने का समय होता है तब उसको तीन पीढ़ियाँ-के दर्शन हो जाते है-पुत्र, प्रपुत्र, प्रोपोत्र यानी तीन पीढ़ियाँ पहले की एवं तीन पीढियाँ बाद की, और एक वह खुद इस तरह सात पीढ़ियों के संबंध-पिंड-कुटुंब, मित्र उसके अपने होते है।

इस श्रृंखला को देखें तो यह बहुत विस्तृत है एवं पूरी संभावना की विश्व का प्रत्येक व्यक्ति उसका संबंधी हो या उसके संबंधी से संबंध रखता हो-उसका स्वयं का बंधु-बांधव हो या उसके बंधुबाँधव का बंधु हो-और इस तरह हम पाएंगे कि पूरा विश्व ही उसका बंधु- बांधव है। इसलिए विश्व बंधुत्व की भावना एक कल्पना नहीं बल्कि एक हकीकत है। जैसे एक घर परिवार में झगड़े होते हैं ऐसे विश्व परिवार में झगड़े होना स्वाभाविक है।

चूँकि विश्व बंधुत्व की भावना विस्मृत हुई है इसलिए हमें सब अजीब लगता है-और निराशा होती है, बस स्मृति की बात है सारी ग्रंथियां अपने आप खुल जायेंगी और हम सही स्वतंत्रता को प्राप्त होंगे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर-यूरोपीय संघ, लैटिन अमेरिका के देशों, स्केंडेवियन देश, अफ्रीकन देश, यूरेशिया, अरब देशों में एवं भारतीय उपमहाद्वीप में यह प्रक्रियाये-आंतरिक रूप से चल भी रही है-जो एक तरफ वैश्विक झगड़े के मध्य एक विभिन्न प्रयास को दर्शाती है-और यह शुभ संकेत भी है-यह संकेत है कि अच्छे दिन आ सकते है। विनोबा भावे कहते हैं कि आने वाले दिनों में ग्राम-नगर-शहर एक महत्वपूर्ण इकाई होगी जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जुड़ी होगी एवं राष्ट्र महज एक कड़ी जो इसको जोड़कर रखेगी।

प्रश्न :- धर्म परिवर्तनों पर आप क्या कहते हो?

उत्तर: प्रत्येक व्यक्ति धर्म से व्यक्तिगत तौर पर जुडा होता है, धर्म व्यक्तिगत है। सामूहिकता समाज का विषय है, समाज भौगोलिकता के आधार पर, जागृती के आधार पर खडा होता है और अपनी मान्यतायें बनाता है, इसलिए जरुरी नही की एक समाज के नियम दूसरे से मिले, लेकिन आस्था आधार है जो सब मे होती है। आस्था आधार है(Faith and procreation is innate in every living)एवं अपने जैसी अगली पीढ़ी पैदा करना सभी प्राणियों में अंर्तनिहित है। यही धर्म है यही मूल मर्म है धर्म का।

आप जैसे ही किसी का धर्म परिवर्तन कराते है आप उसकी एवं अपनी आस्था को झकझोर देते हो, हिला देते हो या तोड़ ही देते हो। धर्म परिवर्तनों के बाद जो वंशानुगत तरीके से भी धर्म बढ़े है उनके वशंजो में भी आस्था डगमगायी हुयी ही रहेगी। ऐसे लोगों से धर्म नहीं संस्था चल सकती है। उन्हें अलग पहचाना जा सके अतः उन्हें यूनिफार्म (जैसे पुलिस की) ही पहनाने की कोशिश होगी जैसे दाढी, पगड़ी, अंगरखा, गाउन, पहना दिया जायें। उनमें एवं उनसे उन्माद फैलाया जा सकता है, उपद्रव कराया जा सकता है, लेकिन बिना किसी कारण के, बिना किसी फायदे नुकसान का आकलन किये इनके द्वारा कोई शुभ कार्य होना बहुत ही मुश्किल बात है।

सामान्यतः कोई धर्म परिवर्तन करना नहीं चाहता, और गलती से भी ताकत के बलबूते या प्रलोभन में फंसकर या दोनों वजहों से भी किसी दूसरे धर्म में चला जाये तो फिर वह वापिस नहीं आना चाहता और ना ही उसे लाने की व्यर्थ या समर्थ कोशिश करना चाहिए, यदि व्यक्ति में कुछ बचा भी होगा तो वह भी खत्म हो जाएगा-क्योंकि ऐसे मे आप उसकी आस्था दो बार तोड देंगे। लोग विकसित हो जाते है वह धर्म परिवर्तन नहीं करते, बल्कि वह पूरी तरह से धार्मिक हो जाते है। आक्रमणो, अत्याचारों एवं प्रलभनो के दौर मे जो धर्म परिवर्तन होता है वह या तो शीर्ष पर या समाज के निम्न स्तर पर होता है, या तो फायदा सोचकर या डर के मजबूरी में होता, मध्यम स्तर पर नहीं होता।

जब यह ऊंचे ओहदे वाले ज्ञानी, राजनेता, लड़ाके और नीचे के कामगार धर्म परिवर्तन कर लेंगे तो इनसे आप क्या अपेक्षा कर सकते है, यह कैसा व्यवहार करेंगे-जाहिर है सभ्य, सुशील, आदर पूर्ण, सम्मान जनक तो बिल्कुल नहीं।

आज जो पूरी दुनिया में विकृतीयाँ दिखाई देती है वह इसी धर्म परिवर्तन के कारण है, व्यक्तियों की हिली हुई आस्था के कारण या खत्म हुयी आस्था के जीते जागते इंसानो के कारण है। इसे फिर से मूल धर्म में वापस ले जाने से समस्या हल नहीं होगी और न ही इन्हें धर्म विहीन बनाने से बल्कि समस्या हल होगी तो एक वृहद संवाद से, एवं वातावरण को पूरी तरह सर्व समावेशित माहौल बनाने से, धर्मनिरपेक्षता से, पूरी धार्मिकता से-एकीकृत व्यवहार से।

प्रश्न :- आजकल धर्मों में प्रार्थनाओं के मामले में कुछ बहुत अजीब चीजे है इस के बारे में आपका क्या कहना है?

उत्तर: यह सही है आजकल धर्मों में मामले में बहुत कुछ अजीब बाते है, जैसे:
जैसे यदि तुम कुरान का पाठ करते हो, नमाज अदा करते हो तो बाइबिल नहीं पढ़ सकते, कवाला नही पढ़ सकते, यहुदियों के प्रार्थना स्थल नही जा सकते, यदि तुम चर्च जाते हो तो गुरुव्दारा नही जा सकते
इत्यादि। यदि तुमने कुरआन पढ़ लिया मस्जिद चले गये तो कभी कुरान पढों या न पढो लेकिन गीता पाठ नहीं कर सकते यह वैसे ही है जैसे गाना है "तुम मुझे चाहो न चाहों तो कोई बात नहीं, किसी और को चाहोगे तो दिक्कत होगी।"

और मजे की बात है की सभी धर्म कहते है की उनका अल्लाह, उनका येशू, उनका भगवान, उनके तीर्थंकर, उनके बौद्ध सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापी है, तब इनमें किसी को यह समझ नहीं आता कि पूरे ब्रह्मांड मे एक साथ दो सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी कैसे हो सकते है-और यदि उनके अल्लाह, भगवान, तीर्थंकर, येशू सर्वशक्तिमान है तब उनको इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि उन्हे कोई माने या माने, नमाज पढे ना पढ़े, प्रार्थना करे ना करे क्या ऐसा ना करने से सर्व शक्तिमान की शक्ति घट जायेगी, या उसकी दया कम हो जायेगी।

लगभग सभी कहते है कि उसका अल्लाह, भगवान कण-कण में जर्रे-जर्रे मे विराजमान है इसलिए शायद उसकी कीमत नहीं समझता, अगर समझता होता तो आप मै भी अल्लाह विराजमान होता और मुझमे भी (ऐसा कैसे हो सकता कि मेरे कण-कण मे अल्लाह हो-और दूसरे शरीर के कण-कण मे ना हो) और अगर ऐसा है तो आप भी अल्लाह का रूप है और दूसरा भी- इतनी सी बात है-और इतनी बड़ी विसंगतियाँ, कि नहीं-मेरी किताब को पढो, मेरी तरह टोपी पहनो, बुरका पहनो, दाड़ी रखों-जनेऊ पहनो या कपड़े उतार के घूमो तभी तुममें अल्लाह का, भगवान-का नूर बरसेगा। लोगो की इस समझ ने धर्म को मजाक बना कर रख दिया।

अध्यात्मिक जगत में चर्चा होती है कि जैसा कुरान में लिखा है कि अल्लाह ने एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर एवं दूत भेजे जिसमें अंतिम पैगम्बर साहब थे; तब अल्लाह ने कहा कि यदि किसी इंसान को एक लाख चौबीस हजार एक पैगम्बरों की भाषा समझ नही आती तो वह-सिरफिरा है, उसका दिमाग फिर गया है, वह काम-से फिर गया और ऐसा इंसान जानते हुए अनजान बनता है या काफिर हो जाता है, ना कि सिर्फ वह जो अंतिम पैगम्बर की भाषा नहीं समझता। फिर अध्यात्मिक जगत में कहते है कि यदि पैगम्बर साहब के आने से दुनिया ठीक हो जाती-तो वह स्वयं कभी नहीं कहते (लिखते) कि मेरे चौदह वर्ष बाद दो दूत आएंगे जो शांति स्थापित करेगें।

धर्म जो महान बनाता है-या धर्म जिसे व्यक्ति को निखारना चाहिए, महान बनाना चाहिए, आज वही इंसान को दकियानूसी, कमतर, गंदा, अविश्वाशी, गैर-भरोसेमंद बना रहा है। एक धर्म के लोगों का दूसरे धर्म के बारे में जानने से रोकना उस स्थिति से बदतर है या यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे घर में कोई स्त्री यदि किसी दूसरे पुरुष से या पुरुष किसी दूसरे स्त्री से बात कर ले, और वह शक के घेरे मे आ जायें।

जिस धर्म की भी महान बनने की इच्छा है, उसे सबके लिए अपने दरवाजे खोलने चाहिए और अप ने अनुयायियों को भी बोलना चाहिए कि वह दूसरे जगह भी देखकर आये और यदि कुछ सीखने लायक मिलता है तो सीख कर आये, महान हो तो सिर्फ तलवार, बंदूक, बम या चिल्ला कर नहीं होता वह दूसरे के परीक्षण में भी खरा उतरना चाहिए।

इसके अतिरिक्त हम यह क्यों कोशिश करते कि उसे ऐसा करना चाहिए या वह वैसा करता है तो गलत है-यदि एक धर्म हिंसा को नहीं रोकता-तो यह उसका अपना मामला है, दूसरे धर्म के लोगों को इसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपनी सुरक्षा के लिए, न्याय के लिए तैयार एवं ताकतवर रहना चाहिए, धर्म-धरा से जुड़ा हुआ, धरती कमजोरी नहीं, व्यर्थ का अहिंसा पाठ नहीं

पढ़ाती वह जीने की ताकत देती है और कभी-कभी बताने के लिए भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान भी लाती है।

प्रश्न : जैसा आपने (**बुजुर्ग - बुद्धिमानों) ने समस्या के समाधान के बारे में बताया यदि हम ना करें, तो क्या कोई और उपाय नहीं है, फिर यदि संवाद के बाद कुछ और करने का निर्णय आया तो क्या यह कार्य या अभ्यास व्यर्थ नहीं जाएगा या यह नये कार्य में अतिरिक्त रुकावट तो पैदा नहीं करेगा-इसके अतिरिक्त यदि जैसा आपने कहा कि ना करें तो समस्याओं से घिरे रहे-तब यदि आप बुज़ुर्गों के बताये हुये समाधान से इतने आश्वस्त हैं, तब क्या यह संवाद-सहमति सहयोग की प्रक्रिया का कोई औचित्य है?**

उत्तर: चाहे युद्ध अवश्य संभावी हो तब भी शांति के प्रयास जरूरी है जिससे मन में भविष्य में दुविधा नहीं रहती ना ही कोई यह कह सकता है कि पूरे प्रयास नहीं किये गये एवं समाधान या युद्ध मनमर्जी से थोप दिया गया।

आज पूरे व्यापारिक जगत में इस बात पर होड़ लगी है कि किसके पास कितना डाटा है, कितनी जानकारी है और अपने इस मकसद को पूरा करने के लिए वह तमाम देशों में विभिन्न तरह की जानकारी जुटाने के लिए वहाँ की सरकारों को सलाह देती है-
जैसे भारत मे-आधार कार्ड (जिसमे हाथों के, आखों के चित्र, लिखावट, पूरा चित्र, घर का पता–पिता पत्ति का नाम) वोटर कार्ड, राशन कार्ड, इत्यादि-होने के बावजूद सलाहें आती हो कि-एक कार्ड, एक जानकारी जैसे कि नागरिकता कार्ड (जिसमे डी.एन.ए. की जानकारी हो), जनसंख्या कार्ड इत्यादि और चाहिए-जिसके दुष्प्रयोग होने की पूरी-पूरी संभावना है।

जब कि इस प्रयोग के बजाये- यह ज्यादा अच्छा होगा कि यह व्यक्तियों जानकारी प्रत्येक समाज अपने पास रखे एवं मौजूदा 'वीट कांस्टेबल' जैसी व्यवस्था द्वारा इन्हे सुनिश्चित रखे– एवं जिला प्रशासन के साथ जरुरत पड़ने पर ही साझा करे।
पिछले पाँच छः हज़ार वर्षो के इतिहास में सामूहिक कार्यों के लिए पहले कबीले बने फिर कई कबीले मिलकर ग्राम राज्य फिर कई ग्रामों को मिला कर नगर राज्य बना, यह नगर राज्य नदियों के किनारे बने, फिर यह नगर राज्य नदियों से दूर भी तालाबों के निर्माण से भी बने-फिर राजाओं के राज्य बने और फिर भौगोलिक सीमाओं के विभाजनों से होते हुए वर्तमान स्थिति के राज्य/देश बने।

इन राज्यों के बिखरने, बंटने एवं वर्तमान स्थिति तक आने में प्रत्येक राज्य ने अपनी स्वतंत्रता एवं स्वायात्तता के लिए संघर्ष किया प्रयास किया-लेकिन वह असफल हुये। पूर्व में जो छोटे से ग्राम राज्य भी लगभग आत्म निर्भर होते थे, वह आज बड़े से बड़े राष्ट्र भी नहीं है-कोई सामान बनाता है तो कोई बाजार देता है, कोई सेवायें देता है तो कोई सुरक्षा देता है सब आत्मनिर्भर से परस्पर निर्भर हो गये। यही हाल धार्मिक मान्यताओं के मामले में है। विकास की इस दशा को देखते हुए यह स्वाभाविक है कि बहुत से राष्ट्र, धर्म अपने आप को स्वतंत्र एवं स्वायत्व बनाए हुए सार्वभौमिक बनने की कोशिश करे, और बहुत से समाज भी यह कोशिश करे कि वह ज्यादा से ज्यादा आत्मनिर्भर हो, और आवश्यकता अनुसार ही परस्पर निर्भर हो ऐसी स्थिति में इन प्रयासों के लिए खून-खराबा हो या संवाद यह दो ही रास्ते बचते है। ऐसे में जो समाधान बुजुर्गों ने समाज एवं राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं के बताये है वह व्यावहारिक लगते है।

यह समाधान तुम्हारी या किसी और की दया दृष्टि पर नहीं है बल्कि यही उपाय है, तब भी उत्सव के साथ संवाद-सहमति-सहयोग का कार्यक्रम जरूरी है क्योंकि जो वैश्विक स्थिति चल रही है जिसमें वाकई विश्व युद्ध की संभावना निकट भविष्य में व्यापारी वर्गों के आपसी टकराव के कारण, व्यापारी वर्ग के अपने हथियारों के एवं अन्य जुड़े हुये व्यवसायों के फायदे को देखते हुये एवं मुस्लिम, ईसाई, बौद्धों के आपसी अहंकार के कारण एवं यहूदियों एवं हिंदुओं के बीच में अपने पुर्नत्थान के लिये परेशान होने की वजह से दिखाई देती है, यह संवाद इस स्थिति

को टालने में या ना आने देने में सहयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त संवाद, जनमत संग्रह द्वारा प्राप्त सहमति एवं इसमें सहयोग से लोगों की भागीदारी बढ़ेगी। भगवान हमें व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से सफल करेगें।

प्रश्न :- क्या मौजूदा लोकतंत्र व्यवस्था में यह करना आसान होगा और यदि बदलाव होने हो तो वह क्या हो?

उत्तर :- मौजूदा लोकतंत्र अपने आप में सारी दुनिया में असफल साबित हुआ है, इससे स्थिति और बिगड़ती जा रही है चुनाव में नारा यह है की लोकतंत्र जनता के लिये, जनता का, जनता द्वारा शासन है, जनता सर्वोपरि है लेकिन संसद पहुंचते-पहुंचते नारा यह हो जाता है कि लोकतंत्र के चार स्तंभ है:- विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका एवं माध्यम इसके अतिरिक्त व्यवहार में दिखायी देता है कि लोकतंत्र-धनीवर्ग का धनीवर्ग के लिए धनीवर्ग द्वारा शासन या सरकारी कर्मचारियों का सरकारी कर्मचारियों के लिए सरकारी कर्मचारियों द्वारा शासन। यह विसंगतियां दूर करने की जरूरत है।

कहने को विधायक, सांसद महत्वपूर्ण है लेकिन हकीकत में कलेक्टर, कमिश्नर, पुलिस एवं न्यायालय महत्वपूर्ण है एवं विधायक व सांसद बेकार का व्यवधान, (जब विधायक एवं सांसद का यह हाल है तो फिर बाकी चुने हुए सदस्यों की कोई हैसियत ही नहीं है) । नगर प्रशासन में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि ही महत्वपूर्ण होने चाहिए । स्थानीय न्यायालय, पुलिस, समाज के अधीन एवं सेना सरकार के संरक्षण में, एवं संवैधानिक न्यायालय-समाज एवं सरकार के मिश्रित संरक्षण में।

विधायक एवं सांसद के अतिरिक्त सभी चुनाव बंद करने की जरूरत है, सांसद एवं विधायक की चुनावी प्रक्रिया तयशुदा चयन प्रक्रिया (न्यूनतम मापदंड) के बाद ही होनी चाहिए। नेता इतने इकट्ठे हो गये, समाचार माध्यम इतने हो गये की शोर ज्यादा एवं काम कम होने लगा है। यह

काम आसान नहीं है-लेकिन हमें अपने लिए एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए यह करना आवश्यक होगा।

प्रश्न: अगर नगर प्रबंधन में सांसद एवं विधायक की भूमिका होगी तब राज्य सरकारों का क्या होगा क्या इनकी जरूरत नहीं है या इसमें कुछ बदलाव होना चाहिए?

उत्तर: राज्य सरकारों की जरूरत नहीं है, मौजूदा राज्य सरकार में कुछ को एक क्षेत्रीय प्रबंधन कार्यालय की तरह रखा जा सकता है । जरुरत है नगर प्रबंधन मजबूत हो और उसकी सीधे केंद्र से संपर्क हो।

प्रश्न: आज सरकारे किसी मुद्दे पर चुनाव जीतती है और फिर असीमित ताकत इकट्ठा करके कई अंतरराष्ट्रीय समझौते कर लेती है या राष्ट्रीय धरोहर बेच देती है, इसमें केंद्र सरकार के ऊपर क्या कुछ पाबंदी होनी चाहिए?

उत्तर :- एक सीमा तक केंद्र के पास ताकत होनी चाहिए जैसे एक हजार किलो सोने के भाव तक वह निर्णय ले और उसके बाद वह समाज की रजामंदी ले। आज जो लोकतंत्र का ढांचा वह प्रतिनिधि लोकतंत्र है, इसमें सुधार की जरूरत है आर्थिक शक्ति में, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, धार्मिक निर्णयों में, अनुदान में, वोटर की उम्र में परिवर्तन की जरूरत है।

धर्म, राज्य एवं लोकतंत्र में आपसी बंटवारा एवं नियमों के पालन की एक घटना आती है- सम्राट अशोक, कलिंग युद्ध के बाद बुद्ध की शरण में गये, एक दिन उन्होंने बुद्धत्व के प्रचार प्रसार के लिए अपने हस्ताक्षर किया आदेश कोषागार को भेजा कि तीन करोड़ स्वर्ण मुद्राएं दे दी जाये। इस पर कोषागार ने लिखा, सम्राट, राज्य के नियम के हिसाब से आपके व्यक्तिगत आदेश से इतनी मुद्रा नहीं दी जा सकती इस पर सभी मंत्रियों के हस्ताक्षर आवश्यक है।

इस पर सम्राट अशोक ने सभी मंत्रियों को कहा कि इस आदेश पर तुम सभी हस्ताक्षर करो, इस पर गृह मंत्री एवं वित्त मंत्री ने कहा कि वित्त मंत्रालय के आदेश द्वारा इतनी मुद्रा नहीं दी जा

सकती इसके लिए तो एक महासंघ (सभी जिलों के प्रतिनिधि आज के संसद-विधायक मिलाकर) की अनुमति की आवश्यकता है, तब महा संसद बुलाई गयी।

महा-संसद ने विचार-विमर्श किया और कहा कि इस आदेश पर सहमति देने से पहले हमें बताया जाए कि राज्य में जो अन्य धर्म है उनके प्रचार-प्रसार के लिए कितनी मुद्रा अधिकृत की गई है? इस पर सम्राट अशोक ने कहा कि अभी आप सब को इसके लिए बुलाया गया, जब दूसरे धर्म की बात आयेगी तब आपको फिर आमंत्रित किया जायेगा, इस पर सभी प्रतिनिधियों ने कहा, कि सम्राट तब तक के लिए इस निर्णय को टाल दिया जाये। इस पर सम्राट ने कहा कि यह मेरी व्यक्तिगत इच्छा है और यदि आप नहीं मानेंगे तो मैं सम्राट पद से हट जाऊंगा, इस पर महासभा ने फिर से विचार विमर्श किया और जल्दी ही कहा कि सम्राट का यही निर्णय है तो हमें मान्य है।

कहते हैं इसके बाद अशोक के बेटे को राजा बनाया गया और धर्म के प्रचार-प्रसार की वह मुद्रा नहीं दी गयी, महासभा का कहना है कि राज्य धर्मों से ऊपर होता है एवं यह की राष्ट्र को सभी धर्मों को एक रूप से देखना चाहिए। इसके अतिरिक्त वित्तीय ताकतों का बटवारा और सीमाएं होनी चाहिए।

प्रश्न :- क्या यह सभी सिर्फ भारत के लिए है या विश्व में भी कारगर होगा?

उत्तर :- जब तथाकथित बदमाश सारे विश्व को अपना ऐशगाह बनाना चाहते हैं-तब यदि कोई सही ढांचा निर्मित होता है तो वह भी पूरे विश्व के लिए होना चाहिए-हाँ जबरदस्ती नहीं होना चाहिए कि नहीं आप अच्छे हो जाये, जैसा कि शैतान करने की कोशिश करते हैं-कि आप उनकी माने नहीं तो मार दिये जायेगे। आज दुनिया एक विश्व युद्ध की तरफ अग्रसर हो रही है, और कुछ चाहते है कि भारत में अस्थिरता रहे, भारत में जातीय दंगे, धार्मिक दंगे बने रहे, जिससे भारत मजबूरी में विश्व युद्ध में साथ में आये-इस चाल से हमें बचना होगा।

प्रश्न :- यह सब कैसे होगा?

उत्तर: जिस व्यक्ति, परिवार, समाज या सरकार में अपने आप को ठीक करने की सामर्थ्य नहीं रहती, वह बाहरी ताकतों द्वारा बदल दिया जाता है, इस बदलाव में हालत ठीक कम बरबाद ज्यादा होती है, इसलिए प्रयास खुद से खुद ठीक होने के होने चाहिए, और ऐसे में खुदा भी (भगवान भी) आशीष देते है। उदाहरण के लिए-जब गंदगी बहुत हो जाये तो सुअर, गिद्ध, बैक्टीरिया, वायरस चक्कर काटने लगते है, गंदगी जितनी ज्यादा होगी, भ्रष्टाचार जितना सूक्ष्म और गहरा होगा-बैक्टीरिया एवं वायरस उतने खतरनाक एवं सूक्ष्म होंगे-जिससें गंदगी एवं भ्रष्टाचार समाप्त हो सके। डॉक्टरों, सलाहकारों, वृध्दो अनुभवियों से सलाह मशवरा किया जा सकता है। संवाद, सहमति एवं सहयोगात्मक कार्य एक बेहतर विकल्प है, बर्बादी एवं बरबादियों मे बचने का या अपने आपस में ही लड़के खत्म हो जाने से।

कहते है-यदि हम व्यवस्था से दुखी है, परेशान है, तब हमें सुधार की कोशिश करनी चाहिए, बदमाशों का विरोध करना चाहिए, यदि वह नहीं कर सकते तो इस बारे में लिखना, बोलना चाहिए और जो व्यक्ति या समुदाय इस कार्य को कर रहा है उसे सहयोग देना चाहिए। यह सब संवादहीनता, असहमति एवं असहयोग आंदोलनों से संभव नहीं है, यह सिर्फ संवाद; संवाद पर सहमति एवं सहमति पर सहयोगात्मक कार्यों से ही संभव है।

उपरोक्त के आदेशों के अनुसार हमारे पास संवाद का रास्ता सबसे प्रमुख हो जाता है कि हम हमारी व्यक्तिगत एवं सामूहिक सफलता के लिए व्यक्ति, परिवार, समाज एवं सरकार की भूमिका पर संवाद कार्यक्रम करें एवं जो सहमति बने उस पर सहयोगात्मक कार्यों के लिए समर्पित रहें।

भगवान हमे आर्शीवाद दे भगवान सबका कल्याण करे-भगवान सभी को सुखी, प्रसन्न करे

****

परिशिष्ट -9.1

<u>भारत - क्या, क्यों कैसे, कुछ प्रश्न-उत्तर</u>

प्रश्न :- यदि भारत महान था तो बर्बाद क्यों हुआ? और यदि भारत महान है तो बर्बाद क्यों दिखता है?

उत्तर: कर्म एवं धर्म दैनिक कार्यों की एक सतत यात्रा है, इन कार्यों से जब भी मुंह मोड़ा तभी गलती हुई और परेशानी और समस्या बढ़ी। धर्म एवं कर्म से विमुख होने और उनकी पलायनवादी परिभाषा करने से समस्याएं और परेशानियाँ बढ़ती जाती है, और समयांतर में पता ही नहीं चलता कि मूल में समस्या क्या है, समस्या की जड़ क्या है?

जीवन के लिए और जीवन चलता रहे इसके लिए, प्राथमिक रूप से जरूरी है शारीरिक सुरक्षा, परिवारिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा एवं भौगोलिक सुरक्षा। इस सुरक्षा को नजरअंदाज करने से गिरावट और गुलामी का दौर शुरू होता है, और इसके साथ ही छद्म शांति का पाठ पढ़ने से गिरावट और गुलामी का दौर काफी लंबे समय तक चलता है या चल सकता है?

जब भी व्यक्ति परिवार एवं समाज अपनी जिम्मेदारियों से विमुख हुआ या अपनी जिम्मेदारियों को सरकार के ऊपर छोड़ दिया या सरकार ने शक्ति पूर्ण तरीके से या साम-दाम-दंड-भेद, छल-कपट द्वारा व्यक्ति, उनके परिवार और समाज को तोड़ दिया हो और सारी जिम्मेदारियां, सारी शक्तियां अपने पास अर्जित कर ली हो-तब व्यक्ति, उनके परिवार, समाज ही नहीं सरकार की भी दुर्दशा निश्चित होती है चाहे वह सरकार कितने ही लोक हितकारी, जनहितकारी हो या बनने की कोशिश करती हो ।

जीवन की सतत् यात्रा में शारीरिक सुरक्षा, भौगोलिक सुरक्षा (आंतरिक एवं बाह्य) के अतिरिक्त मुख्य रूप से भोजन, जल एवं पर्यावरण की सुरक्षा का महत्व है, और जीवन के पांच तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं अकाश का शरीर में एवं समाज (संसार) में अनुपात बना रहे यही मानव जीवन का मुख्य कर्म एवं धर्म है, यही एक सतत यात्रा है।

चूँकी इन पांच तत्वों का शरीर में एवं संसार में समन्वय बिगड़ा है, फलस्वरूप जीवन में दुख बढ़े हैं, सुख कम हुए हैं, समाज के सभी क्षेत्रों (सामाजिक आर्थिक धार्मिक एवं राजनैतिक) में परेशानियां बढ़ी है, हमारी आस्था डगमगयी है हमारे आस्था के केंद्रों, हमारे धर्म स्थानों की हालत खराब हुई है।

यदि इसको सामाजिक धरातल पर देखे तो गिरावट का दौर उस दिन शुरू हो गया था जिस दिन नंदी को बधिया किया गया था। नंदी को बधिया कर बैल बनाने से, नंदी गाय का श्राप भारत और दुनिया के उन सभी देशों पर लगा जहां गाय होती है, एवं उन देशों पर भी जो दूध पीते है, गाय का, नंदी का मांस खाते है। इस बधियाकरण से इन्सानों को खेती करने में आसानी तो हुई लेकिन धीरे-धीरे आदमियों की शारीरिक ताकत कम होने लगी, आदमी आराम परस्त हुआ। प्रजनन के लिए कम नंदी बचे लिहाजा आने वाली गायों की, नंदी की, बैल की जैविक विकास की जगह ह्रास हुआ और ऐसी गायों का दूध पीने से समाज में व्यभिचार बढा (जैसा अन्न वैसा मन)। भारत की बर्बादी एवं भारत के प्रभाव/संपर्क में आये तमाम क्षेत्रों की बर्बादी का -यही मूल कारण भी है ।

प्रश्न: भारत की यह बर्बादी कब तक चल सकती है, या चलेगी?

उत्तर : भारत की यह बर्बादी तब तक चलती है या चल सकती है जब तक मूल में ना लौटे और मूल में स्वाभाविक धर्म युक्त कर्म की सतत यात्रा मे फिर से प्रवृत ना हो जाये। कर्मॅ की व्यवस्था बने, श्रम का विभाजन ठीक हो, आय का विभाजन ठीक हो, अर्थ की व्यवस्था अर्थ पूर्ण हो और इन सब के मध्य न्याय बना रहे इसके लिए जरूरी होगा कि विनाशकारी बुद्धि के लोगों की कमी हो और सज्जन एवं सृजनात्मक हृदय के लोगों की बढ़ोतरी हो। जब तक नंदी का बधियाकरण बंद नहींहोगा-तब तक समाज में शक्ति नहीं आयेगी, व्यभिचार रहेगा और जब तक नंदी-गाय काव्यापार बंद नहीं होगा, तब तक यह बर्बादी चलेगी - चाहे भारत एवं भारत जैसे देश इसकेअतिरिक्त कुछ भी कर ले।

देश में सुरक्षा रहे, रोजगार मिले, न्याय रहे और इसके मध्य समन्वय एवं समरसता भी बनी रहे इसके लिए जरूरी होगा व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'एक पुनरुत्थान, एक अभयुत्थान'।

प्रार्थना है भगवान हमें शक्ति दे।

प्रश्न :- भारत को अपनी बर्बादी के दौर से बाहर आने के लिए क्या-क्या करना होगा? कौन क्या करेगा? यह सब कैसे होगा?

उत्तर: इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:

1. भारत को अपनी बर्बादी के दौर से बाहर आने के लिए एक बहुत बड़े संकल्प, श्रम और साधन की जरूरत है-एक व्यवस्थागत सुधार की जरूरत है। क्या-क्या करना है, यह सब मिलकर तय करना होगा। इन कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए, श्रम के विभाजन (बच्चे, व्ययस्क, अति व्ययस्क एवं वृद्धों के मध्य) उम्रगत, रुचिगत होना जरूरी है और इनको पर्याप्त साधन एवं संसाधन मिले एवं मिलते रहे इसके लिए आय का विभाजन जरूरी है-उदाहरण के लिए यदि कोई सौ रुपये कमाये तो इस सौ रुपये पर उसके मां-बाप, पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी, समाज - सरकार का कितना- कितना अधिकार है? ऐसे में सीधा-सीधा गणित कहता है, कि सभी का बराबर का अधिकार है और सौ रुपये को आठ भागों में बाँट देना चाहिए - पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी, माता-पिता तीन पीढ़ी एक साथ सभी का बराबर का अधिकार-और समाज एवं सरकार का भी इन्हीं के समकक्ष बराबर का अधिकार (समाज सामूहिकता का प्रतिनिधित्व और सरकार संसारिकता का प्रतिनिधित्व करती है-इसलिए इन्हें भी बराबर का अधिकार मिलता है)।

व्यक्तिगत धर्म एवं कर्म, पारिवारिक धर्म एवं कर्म, समाजिक धर्म एवं कर्म एवं सांसारिक धर्म एवं कर्म में समन्वय, समरसता एवं निरंतरता बनी रहे इस हेतु आय का विभाजन, श्रम का विभाजन, आयु एवं रुचि का ध्यान का हर जलवायु में रहे इसके लिए आवश्यक होता है की समाज में एक ऐसा ताना-बाना जिसमें व्यक्ति भी महत्वपूर्ण रहे उसकी आयु उसकी रुचि अभिरुचि का भी मान हो और सामूहिकता का भी सम्मान बना रहे (कभी सामूहिकता के नाम पर व्यक्ति का नाश (हत्या) ना हो जाये और कहीं व्यक्ति की आजादी के नाम पर सामूहिकता का सर्वनाश ना हो जाये, अर्थात मैं और हम दोनों का महत्व एवं सम्मान - समरसता एवं संसार की निरंतरता के लिए जरुरी है और इसे कम नहीं आंका जा सकता) यह जरूरी है।

इन सभी के सकुशलता के लिए जरूरी है कि न्याय की व्यवस्था भी परिवार समाज एवं सरकार के मध्य इसी तरह विभक्त रहे की पारिवारिक मामले परिवार में, सामाजिक मामले समाज में एवं संसारिक मामले सरकार द्वारा निष्पादित हो और इनके मध्य सुरक्षा एवं प्रशासनिक जिम्मेदारी भी परिवार, समाज एवं सरकार के मध्य विभक्त रहे और कोई एक-दूसरे का अतिक्रमण आपदा की स्थिति में ही करें और वह भी उदाहरण के लिए अपवाद ही हो।

2. भारत एक उपाधि है और कहते है भारत ने पूर्व में इसे अपने कार्यों द्वारा स्वयं ही अर्जित किया है। भारत को परंपरागत रूप से निम्न तरह से परिभाषित किया जाता है:
i. “भारत= भा + रत (भा= रोशनी, प्रकाश, ज्योति + रत = व्यस्त होना, संलग्न होना) - भारत= प्रकाशित, रोशन, ज्योतिर्मय करने में व्यस्त, संलग्न।
ii. भारत =भा+र+त (भा-भाव+र-रस+त-ताल = भावयुक्त, रसयुक्त एवं लययुक्त भारत) = एक ऐसा स्थान जहां भाव, रस एवं ताल जिसके जीवन में चलते रहे = संगीतमय भारत।"

भारत अपने नाम को सार्थक करे इसके लिये आवश्यक होगा कि संवाद, सहमति एवं सहयोग की एक सतत यात्रा पुनर्स्थापित हो, एवं वर्तमान में दृष्टिगत तमाम समस्याएं (जिनमें कुछ का विवरण ऊपर किया है) का समाधान हो।
समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक होगा की या तो वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक नेतृत्व आपस में मिलकर यह कार्य करें-या भारत में इन कार्यों के लिये धार्मिक, आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में नए नेतृत्व का गठन हो।
समस्याएं के समाधान के मध्य यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि परिवर्तन के दौर में कोई अफरा-तफरी ना हो और यह संक्रमण काल आराम से निकल जाये।
भगवान भारत को आशीर्वाद, ***

परिशिष्ट-9.2

<u>स्वास्थ्य के लिए कैसा, कितना एवं किस समय अन्न-जल ग्रहणीय है</u>

प्रश्न: आपने कहा की जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी तब आप हम सबको कैसा, कितना अन्न-जल एवं किस समय इसे ग्रहण करने के लिए कहेंगे?

उत्तर: यह एक व्यक्तिगत प्रश्न के साथ साथ पारिवारिक एवं सामाजिक प्रश्न भी है-क्या खाएं, क्या पियें, क्या खिलाये, क्या पिलाये? पसंद अपनी–अपनी है, कोई चाहे तो सुअर जैसा खाना खा सकता है-और कोई सुअर को भी खा सकता है। कोई चाहे खाने के साथ या खाने के बाद अपने सबसे वफादार प्राणी कुत्ते को खाना खिला सकता है और चाहे तो कुत्ते को ही खा जाये। कोई चाहे गाय, भैंस, बकरी, जिसका भी दूध पुत्रवत पिया हो उसको (गाय, भैंस, बकरी) तब भी जब वह बूढ़ी हो जाये तब भी अपने से पहले खाना दे या दूध पीने के बाद उसी गाय, भैंस, बकरी को भी खा जाये।

कोई कच्चे फलों को तोड़कर कच्चा ही खा जाये या कार्बाइड में पका कर खाये या फल पूरी पकने पर ही उस का सेवन करें, कोई ताज़ा फल, सब्जी, मांस, मछली खाये या कोई फ्रिज में रखकर महीनों बाद तक खाये, कोई ताज़ा एवं कुनकुना पानी पीये या मटके का या कोई अन्नो का सडा-गला पानी (बियर, शराब) पिये या बर्फ का। कोई खाने को दवाई समझ कर खाये या कोई दवाई को खाना समझकर पसंद अपनी-अपनी। कोई खाते समय पूरी प्रकृति के खान-पान के बारे में सोचे या खाते समय पूरी प्रकृति को अपना भोजन समझे, पसंद अपनी और परिणाम भी अपने।

इन खानपान में व्यक्ति से ज्यादा परिवार, समाज एवं सरकार की भूमिका होती है-और इसका निर्णय (खानपान की व्यवस्था) बता देगा, देश कैसा है, समाज कैसा है, परिवार कैसे है और परिवार में व्यक्ति कैसे है?

<u>इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:</u>

1. कहते हैं जैसा भोजन वैसा भजन और वैसी भावना, जैसा खाना वैसा ताना-बाना, जैसा आहार वैसा विचार, वैसा विहार, जैसी ऊर्जा (energy) वैसी गति (motion) वैसा ही इमोशन, (basically food is energy and energy in motion is emotion)। फिर कहते हैं यदि आहार शुद्ध हो तो सत्य गुण की शुद्धता आती है, सत्य गुण की शुद्धता से याददाश्त ठीक होने लगती है, याददाश्त ठीक होने से जितनी ग्रंथियां जितनी गाँठें है जीवन में वह गायब होने लगती है।

2. हालांकि ऊर्जा की जरुरत सूर्य से पूरी हो सकती है लेकिन शरीर चलाने के लिए कुछ तरल, कुछ ठोस खाना जरूरी है। आहार सिर्फ मुँह से खाया भोजन ही नहीं-आहार वह है जो हम आँखों से अंदर ग्रहण करते, कानों से श्रवण करते हैं, नासिका से सूँघते हैं, स्पर्श द्वारा महसूस करते हैं यह सब आहार में आता है। आहार कैसा है (हम क्या देखते, सुनते, सूँघते, खाते एवं स्पर्श करते), उस पर निर्भर करता है हम कैसे हैं, हमारा परिवार कैसा है-हमारा देश, समाज, संसार कैसा है।

3. इसके अतिरिक्त श्वासों की गति, लय, तीव्रता, हमें व्यवस्थित रखती है या अव्यस्थित व पागल तक कर सकती है, दिन में जागते समय एक तरह की श्वास प्रक्रिया एवं रात में सोते समय श्वास की दूसरी प्रक्रिया, इसी तरह खाने की मात्रा एवं प्रकार, दो भोजन के मध्य समय का अंतर, यह सब हमारे व्यक्तित्व में अंतर लाते है।

मानस प्रकृति के हिसाब से दिन में ज्यादा एवं रात में कम खाना, दिन में ज्यादा खाना एवं रात्रि में बहुत कम खाना एक प्रकृतिजन्य एवं स्वाभाविक व्यवहार है, इसके विपरीत सिर्फ दिन में ही खाना या सिर्फ रात्रि में ही खाना-व्यक्ति में कुछ खास गुणों को साथ लेकर आते है कुछ अतियों को लेकर आते है, जिसका ध्यान देना जरूरी है।

4. भोजन के सम्बन्ध में जीव-जगत–वृक्षों, पशुओं पक्षियों के मध्य यह व्याप्त है कि वही खाओ जो हितकारी हो (क्योकि उनके पास डॉक्टर नहीं है) और पक्षियों के मध्य यह भी कि मितव्यता से खाओ-जिससे उड़ने में आसानी होगी- ''हितभोगी-मितभोगी'', पशुओं में व्याप्त है कि पर्याप्त खाओ-

जिससे दौड़ सको, ''हितभोगी-पर्याप्त भोगी'', अजगर एवं मगर में व्याप्त है, ''हितभोगी–अतिभोगी'' एवं वृक्षों में व्याप्त है- ''हितभोगी दिनभर भोगी''।
इंसान के पास चुनाव की ज्यादा स्वतंत्रता है, लेकिन प्रकृति चलती रहे-इसमें सामंजस्य बना रहे के लिए जरूरी होगा की कुछ सार्वभौमिक नियमों का पालन किया जाये, मौसम का ध्यान रखा जाए, भौगोलिकता का भी ध्यान रखा जाए, उसके अनुरूप स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय भोज्य पदार्थों का चयन किया जाये।

अन्न एवं जल की सुलभता बनी रहे इसके लिए पारिवारिक एवं सामाजिक संग्रहण के विषय में ध्यान देना आवश्यक है, जिससे कर्फ्यू जैसी स्थिति में भूखे, प्यासे मरने की नौबत ना आ जाये। सामाजिक परम्पराओं में खाने की उपलब्धता के बारे में एक प्रार्थना आती है, "रहिमन इतना दीजिये, जा में कुटुंब समाए, मै भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जायें। क्या सही है, क्या गलत है, क्या होना चाहिए, क्या नहीं होना चाहिए-यह संवाद का विषय है-किसी के लिए कुछ खास विधियाँ महत्वपूर्ण हो सकती है, जैसे पंडितों, तांत्रिकों, मौलवियों, पादरियों के लिये-लेकिन यह सहमति का प्रश्न है कि पूरे समाज के लिए क्या हितकर है यह सहयोगात्मक कार्य का प्रश्न है।

मनुष्यों के पास अपना दिल दिमाग है, अपनी पसंद है-कि वह उपरोक्त में किस तरह रहना चाहता है-या वह भी खाना चाहता है जो हितकारी न हो, एवं स्वयं को बीमार करना चाहता हो, डॉक्टर को आराम देना चाहता हो। लेकिन मनुष्य जब अपने अलावा दूसरों के खाने को माध्यम में प्रचार-प्रसार कर खराब करने लगे तब समाज का उत्तरदायित्व है कि वह इसे ठीक करे एवं ठीक रखे । ***

समाज के द्वारा शिक्षा का प्रचालन

प्रश्न: आपने समाज के द्वारा आस्था के केंद्रों से शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय भी प्रचालित करने की बात कही, क्या सरकार द्वारा इसका प्रचालन ठीक से नहीं चल रहा है? आप ऐसा क्यों मानते हैं कि समाज द्वारा यह शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय ज्यादा कारगर तरीके से चल सकेगी?

उत्तर: आज शिक्षा के क्षेत्र में काफी रिक्त स्थान आ गया है,यदि आज नेतृत्व के व्यवहार को देखेंगे तो पायेगे कि वह सीधे बोलने कि बजाये अंगुली दिखा-दिखा कर बात करते है जो बेहद अपमानजनक है। नेता खड़े रहते है, अध्यापक खड़े रहते है जनता एवं विद्यार्थी बैठे रहते है–जो व्यवहार में बिलकुल ही उल्टा एवं अटपटा लगता है (कायदे से नेता एवं जनता, शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को इज्जत से बैठना चाहिये।

स्त्रियों को एक औजार के रूप से इस्तेमाल किया जाने लगा है। किसी को भी बर्बाद करना हो तो उसका किसी महिला के साथ संबंध को चर्चा बना देना और उस महिला या पुरुष की बाकी खूबियों को नजरअंदाज करके उसे बर्बाद कर देना-बच्चों को इंटरनेट शिक्षा देकर अश्लीलता या नशे में प्रवृत्त कर देना, यह शिक्षा के क्षेत्र मे ठीक प्रबंध नहीं है, को दर्शाता है।

समाचार पढने वाले ऐसे समाचार पढ़ते है जैसे बस प्रकृति का अंत आने वाला हो, इतने आक्रामक एवं सम्मोहक तरीके से कर्कस एवं उत्तेजनात्मक आवाज में बोलते है कि सुनने वाले को सिरदर्द होना स्वाभाविक है-इन समाचारों ने इतना भय, नफरत और घृणा फैला रखी है कि कुछ देशों में हर तीन में से एक आदमी मानसिक रोगी हो गया है। कई बार तो ऐसा लगता है कि यह भौंकने लगे है।

कुछ तो पूरे देश ही सीधे सीधे बोलने की बजाये ज़बान पर जोर देकर, ज़बान को मोड़कर अतिरिक्त प्रभाव डालने की कोशिश में, दूसरे को प्रभावित करने के चक्कर में खुद मानसिक बीमार हो बैठे है-एवं आज जितने समाचारों को प्रदान करने वाले व्यक्ति, घराने या यों कहे माफिया लगभग इन्ही देशों से है, इसलिये उस देश में भी एवं दूसरे देश में भी भय, नफरत और घृणा है ओर लोग मानसिक रोगी।

पूरा का पूरा समाज भय में जीने के लिए प्रेरित किया जाता है और इसी भय से प्रेरित समाज को लोग सभ्यता (जहाँ सभी भय से ग्रसित है) कहते है। ऐसी सभ्यतायें-बनने के पहले टूटने लगती है, क्योंकि यहाँ हर बच्चे को माँ कहती है-शैतानी करोंगे तो भूत पकड़ लेगा, पिता कहते है-पिटाई लगा दूंगा, धर्म एवं समाज कहता है-नर्क में जाओगे, और सरकार कहती है-जेल में डाल/भेज देंगे।

ऐसे में शिक्षा की स्वतंत्रता बहुत जरुरी है जो सबसे पहले नेतृत्व के लिए शिक्षण की व्यवस्था करें (भारत में विधायक, सांसदों के लिए कोई खास प्रशिक्षण की सुविधा नहीं, जब की प्रशासनिक एवं व्यापारिक अधिकारियों के लिए है) - फिर आम जनता के लिये ऐसे शिक्षण की व्यवस्था करे जो यह बताएं, यह दिखाएं कि अच्छा बोलना, अच्छा रहना क्यों अच्छा है। जहाँ यह बताया जाए कि क्यों बुरे से बदबू आती है-बर्बादी आती है, क्यों अच्छे से आनंद आता है।

जहाँ न्याय व्यवस्था एक नयापन लेकर आये एवं समाज समता के आधार पर चले। प्यार से परिवार बनता है और रहता है-प्यार से प्रकृतिस्थ बने रहते है और यह प्रकृति चलती है। भय ख़त्म हो जाता है इसलिये भय से ग्रसित सभ्यताएं भी ख़त्म हो जाती है, लेकिन प्यार चलता है प्रकृति चलती है।

उपरोक्त सोच में बदलाव के लिये शिक्षा पर बहुत ज्यादा जिम्मेवारी है-जो सिर्फ सुरक्षा से परिपूर्ण स्वतंत्र शिक्षा व्यवस्था ही दे सकती है।

इस विषय पर निम्न निवेदित है:

1. किसी को गुलाम बनाना हो तो उसकी आस्था तोड़ दो, उसका भरोसा, भरोसे लायक नहीं रहने दो। किसी समाज को गुलाम बनाना तो हथियारों से एवं युद्ध में जीतकर संभव है लेकिन किसी को गुलाम बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि उस समाज के आस्था के केंद्र तोड़ दो या उन्हें सिर्फ नमाज पढ़ने एवं भगवान के दर्शन करने भर के (लायक) केंद्र रहने दो, उनके शिक्षा के केंद्र तोड़ दो, उनकी चिकित्सा पद्धति बर्बाद कर दो एवं न्याय व्यवस्था चौपट कर दो।

किसी समाज को गुलाम बनाये रखना है तो वहां के पुस्तकालय जला दो, वहाँ के विश्वविद्यालय जमीन में मिला दो, वह समाज जिस तरह से गिरेगा कि उठने की हिम्मत ही नहीं बचेगी। लंबे समय तक गुलाम बनाना है तो फिर समाज में चाय, शराब, सिगरेट एवं अश्लील चीजों की आदत डाल दो एवं उन पर कर लगा दो, उनका एक तरफ से प्रचार करो एवं दूसरी तरफ से उन्हें गलत दिखाने के लिए सत्याग्रहों को प्रोत्साहन दो । दुनिया मे विश्व युद्ध चल रहे हो, आप शांति का पाठ, अहिंसा का पाठ पढाते जाओ, ऐसे नेताओं को प्रोत्साहित करते जाओ, जंगलों मे आग लगा दो और आप फ्रायडे फॉर फ्युचर, फ्रायडे फॉर फॉरेस्ट का पाठ पढ़ाना शुरू करवा दो और ऐसे बच्चे-बच्चियों को प्रोत्साहित करवा दो।

ऐसा करने से एक तरफ सरकार को करो से आय होगी ऐसे में वह देश अगर आजाद हो भी गये तो भी गुलाम जैसे बने रहेंगे, यह जानते हुए भी कि नशे से गलत शिक्षा-गलत स्वास्थ्य सेवाओं से, गलत न्याय व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं न्याय व नशे के व्यापार से जनता दुखी है लेकिन कर वसूली अच्छी होती है ऐसी व्यवस्था बनाये रखेंगे-और हमारे गुलाम जैसे ही रहेंगे-हमारे ही सलाहकारों से ही सलाह लेंगे-एवं हमें पैसा देते रहेंगे।

2. अगर किसी की इच्छा पूरी दुनिया पर राज करने की हो तो वह चाहेगा कि पूरी दुनिया में ऐसे ही व्यवस्था हो और उसके बाद सब के सामने दूसरे देशों के उदाहरण भी होंगे तब सब इस व्यवस्था को मान लेंगे एवं इसको चलाये रखेंगे। आज पूरी दुनिया में जब ऐसी व्यवस्था दिखाई देती है और कुछ लोग (देश नहीं) हर देश में ऐसे दिखाई देते हो जो बहुत ज्यादा साधन संपन्न हो तब ऐसा आकलन लगाना स्वाभाविक है कि कुछ लोग चाहते हैं कि पूरी दुनिया परेशान रहे, बीमार रहे, गरीब रहे, आपस में लड़ती रहे-मरती रहे और उनसे दवाई-दारू खरीदते रहे एवं उन्हें धनी व ताकतवर बनाये रखें।

यह स्थिति पूरी प्रकृति के लिए अच्छी नहीं कही जा सकती-ऐसी सोच के कारण सभी का भविष्य दाँव पर लग गया-उनका भी जो पूरी धरती पर राज करने के बारे में सोचते हैं या उस सोच का हिस्सा बनते हैं-उस सोच से फायदे लेते हैं या उस सोच का गुणगान गाते हैं या उस सोच का विरोध ना हो इसके लिए उसके गलत पक्ष पर पर्दा डालते हैं।

मौसम के परिवर्तन, बढ़ती हुयी प्राकृतिक आपदाये, अकाल, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, बीमारियां पीने के पानी की दिक्कत, शुद्ध हवा की दिक्कत यह सब स्थिति की तीव्रता से गिरावट को को दर्शाती है। ऐसी स्थिति में अगर हमें ठीक करने की ओर कदम बढ़ाना है-तो सर्वप्रथम न्याय व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था, शासन प्रशासन की व्यवस्था ठीक करनी होगी और यह ठीक रखनी होगी-और यह सारी की सारी व्यवस्था-बिना अच्छी शिक्षा के संभव नहीं है-और ना होगी।

3. कहते हैं रामायण काल में शिक्षा ऋषि-मुनियों के संरक्षण में चलती थी एवं विभिन्न राजा उन्हें सहयोग करते थे, एवं महाभारत काल में पहली बार यह राज्य के अधीन आयी-एवं पात्रों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण कारण है कि राम राज्य को बेहतर कहा जाता है। रामराज्य के समय शिक्षा एवं यज्ञ-कृतज्ञता के भाव से चलते थे, वही महाभारत काल में यह शासन के साधन, संसाधन एवं संरक्षण में चली और शिक्षण संस्थान भी युद्ध का हिस्सा बने, जो कभी भी सराहा नहीं जा सकता। आज के युग में सबसे बड़ा उदाहरण तक्षशिला विश्वविद्यालय का आता है-जिसे आक्रमण कर्ताओं से बचाने के लिए चाणक्य ने पर्याप्त प्रयास किया।

4. चाणक्य ने राज्य परिवर्तन कर दिया परिवर्तित राज्य का बहुत विस्तार किया-लेकिन तक्षशिला को उस स्तर पर नहीं रख पायें-जिस स्तर पर वह थी। चाणक्य का कहना था कि राज्य परिवर्तन आसान है-लेकिन एक विश्वविद्यालय बचाये रखना मुश्किल है, लेकिन यह स्वस्थ, सुखी एवं समर्थ राष्ट्र एवं विश्व के लिए आवश्यक है। चाणक्य एवं चाणक्य के समय के बाद आज तक तक्षशिला-विश्वविद्यालय (जो वाकई में पूरे विश्व के लोगों द्वारा उच्च शिक्षा के लिए सराहा जाता था इसलिए विश्वविद्यालय कहलाता था) अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर पाया है-एवं कालांतर में देश में गिरावट का दौर जारी रहा है एवं कुछ और विश्वविद्यालय जैसे-नालंदा आदि को भी जला दिया गया एवं इसके बाद आज तक देश उबर नहीं पाया। कुछ ज्ञानियों का कहना है कि यह शिक्षा के विद्यालय ही है-विश्वविद्यालय ही है जो देश को महान बनाते हैं एवं बनाये रखते हैं, जैसे आज ऑक्सफोर्ड एवं हावर्ड।

5. कुछ अन्य ज्ञानियों का कहना है कि जो देश ताकतवर होते हैं-उनके यहाँ ही बड़ी यूनिवर्सिटी बनती है-क्योंकि साधन-संसाधन भी वही मुहैया करा सकता है जो धनी है ताकतवर है। कुछ अन्य ज्ञानियों का कहना है कि धनी होने से यूनिवर्सिटी नहीं बनती है जैसे-आज सऊदी अरब। विश्वविद्यालय के लिए लंबी दूर की सोच की जरूरत होती है। और कुछ कहते हैं कि शुरुआत-शिक्षक से होती है और फिर शासन एवं शिक्षा एक दूसरे को बल देती है-एवं तब तक बनी रहती है जब तक शासन शिक्षकों का, अनुसंधान कर्ताओं का सम्मान करता है, उनके मार्गदर्शन को स्वीकारता है।

6. इस पूरी व्यवस्था में गिरावट का दौर तब शुरू होता है जब शासक अपने राज्य हट या अपनी राज्य की कभी ना भरने वाली भूख के वशीभूत होकर-शिक्षा को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने लगता है। शिक्षा के नाम पर व्यापारी शिक्षा या रोजगार के लिए शिक्षा को प्रोत्साहित करने लगता है। यह उत्थान एवं गिरावट जैसे भारत में हुई, में चार-पांच सौ या उससे भी ज्यादा वर्ष लग जाते हैं, इसलिए पता नहीं चलता और इसका मूल कारण शिक्षा ही है, शिक्षक ही है यह विवादित हो जाता है।

7. समाज के उत्थान, प्रकृति के संरक्षण के लिए जरूरी है कि शिक्षण समाज के संरक्षण में चले, पले एवं बढ़े जिससे न केवल मनुष्य वरन सभी जलचर, थलचर, नभचर वनस्पति प्रसन्न बने रहें एवं हमारी शाश्वतता को सुनिश्चित करें।

8. शिक्षा में विज्ञान भैरव तंत्र (तंत्र विज्ञान) सर्वोच्च विज्ञान है एवं इसके बाद खगोलीय विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, नाभिकीय विज्ञान और इसके प्रारूप जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक एवं रसायन विज्ञान मिलाकर सभी तरह के विज्ञानों की, धर्म एवं धर्म की शाखाओं की हो और जो देशी विदेशी सभी के लिए-योग्यता के आधार पर खुली एवं कृताता के आधार पर देय हो ऐसी रखनी होगी।

9. अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ अर्थपूर्ण शारीरिक श्रम की व्यवस्था उच्च शिक्षा के क्षेत्र में करनी होगी। प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य की जा सकती है-उसके बाद शिक्षा आग्रह के आधार पर एवं उच्च शिक्षा सिर्फ योग्यता के आधार पर। तमाम कॉलेज जो व्यवसायिक है या सरकारी हैं को समाज के

अधिकार क्षेत्र में लाने होंगे शिक्षण केंद्र में सरकार अपने प्रतिनिधि रख सकती है सिर्फ सुझाव एवं सहयोग के लिए लेकिन बिना किसी अतिरिक्त अधिकार के। ***

परिशष्ट-9.4

<u>स्वास्थ्य - स्व मे स्वयं की स्थिति</u>

प्रश्न :- अपने शिक्षा के बारे में विस्तार से बताया-स्वास्थ्य के बारे में भी कुछ बताये?

उत्तर :- हालत पूरी दुनिया में ऐसे है की चिकित्सकों की पढाई-एम.बी.बी.एस., एम.एस., एम.डी., डी.एन.बी. के पूरे पाठयक्रम मे कही यह नही पढाया जाता कि स्वस्थ कैसे रहना है। पूरी एनाटॉमि, फिजियोलॉजी, न्यूरोसाइन्स पढाई जाती है लेकिन यह नही पढाया जाता कि यह एकीकृत रुप से शरीर कैसे सही व्यवहार करता है-कैसे सही एवं स्वस्थ रहता है।

जब बीमारियों का प्रचार होने लगे अस्पतालों का विज्ञापन होने लगे–अस्पताल एक बड़ा व्यवसाय हो जाये जब चिकित्सक भी बीमार दिखने लगे, जब स्वस्थ रहने के लिए खर्च की बजाये बीमारियों के इलाज के लिये पैसा खर्च होने लगे, जब अधिकांश लोग या तो दुबले पतले या मोटे और थुल-थुले नज़र आने लगे तब यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नही होगी की समाज एक बीमार समाज है–एक विकृत समाज है, तब स्वास्थ्य की चर्चा जरुरी हो जाती है।

इस विषय पर निम्न निवेदित है:

1. स्व मे स्वयं की स्थिति ही स्वास्थ्य है, जो स्व मे स्थित है वह स्वस्थ है, स्व (स्वयं की-अपनी) की स्थिति से विचलन ही बीमारी है, जितना ज्यादा विचलन होगा उतनी बीमारी होगी। यही विचलन से आचरण शुद्ध नहीं रहता है या भ्रष्ट हो जाता है और भ्रष्ट आचरण से भ्रष्टाचार से, स्व की स्थिति से स्वयं की दूरी बढ़ जाती है और बीमारी आ जाती है। कुछ कहते हैं स्व की स्थिति में वापस आ जायेगे तो बीमारी भाग जायेगी और कुछ कहते हैं कि बीमारी ठीक हो जायेगी तो व्यक्ति स्वयं की स्थिति में वापस आ जायेगा।

2. क्या ऐसा संभव है, कि बीमारी ठीक कर दो तो विचलन खत्म हो जाये, व्यक्ति स्वयं की स्थिति में लौट आयेगा और स्वस्थ हो जाये। नहीं, यदि मानसिक, भावनात्मक विचलन है तो बीमारी रहेगी एक ठीक करोगे तो दूसरी आ जायेगी, दूसरी ठीक करोगे तो तीसरी आ जायेगी-एक अंतहीन प्रक्रिया के तहत बीमारियों का इलाज करते रहोगे-और नई बीमारियां आती रहेगी इसलिए जरूरी है कि हम स्वस्थ (स्व में स्थित) रहे और इस पर ध्यान दें, एवं इस पर साधन एवं संसाधन लगाये बजाये बीमारियों के इलाज के लिए-चिकित्सा विज्ञान के उपयोग-दुरुपयोग-सदुपयोग पर।

3. यदि परिवार में समाज में बहुत से लोग अस्वस्थ है तो परिवार, समाज में अशांति रहेगी ही इसलिए यह व्यक्तिगत आवश्यकता के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जरुरत भी है कि सभी व्यक्ति स्वस्थ रहे एवं अस्वस्थ होने कि दशा में-उसे बिना किसी परेशानी के, बिना पैसे के उचित-सलाह, सहयोग मिल पाये-फिर चाहे वह वर्गीकृत चिकित्सा की पद्धति-एलोपैथिक, होम्योपैथिक, रंग चिकित्सा, चुम्बकीय चिकित्सा, यूनानी, आयुर्वेदिक हो या एकीकृत चिकित्सा कि पद्धति योगासन, प्राकृतिक चिकित्सा या शुद्ध-आस्था आशीर्वाद की विधा हो। सुविधा समाज में हो ऐसी व्यवस्था जरूरी है।

4. स्वास्थ्य-स्व की स्थिति स्वास्थ्य है, वह जो स्वयं में स्थित है-स्वस्थ है (Health-Heal through the healer, those who consistently get healed through the healer and also heal the healer the nature, are healthy) वह जो शारीरिक रूप से-अन्न, जल एवं वायु के शरीर में आवागमन में,भावनात्मक रूप से संबंधों के बदलते स्वरूपों में, ज्ञान विज्ञान के प्रवाह में भी

स्थित रहता है वह स्वस्थ कहा जा सकता है-वह आनंद में हो सकता है। स्व का अध्ययन स्वाध्याय-स्वस्थ रहने कि दिशा में महत्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है। और यदि स्वाध्याय कि कमी हुयी-स्व से विचलित हुये तब यह उचित होता है कि हम स्व की स्थिति में आने के लिये-स्वस्थ होने के लिये-ज्ञानियों की मदद ले-डॉक्टरों, वैद्दो की, योगियों की, सम्मोहकों की या तांत्रिकों कि मदद ले-और फिर स्वस्थ हो जाये।

5. स्वस्थ-स्व मे स्थिति बनी रहे-इसके लिए यह जरूरी है की मनुष्य भी अन्य जानवरों, पशु पक्षियों, के तरह हित-भोगी एवं मित-भोगी (वह खाये जो हितकर है-एवं मितव्यता से खाये) की सीख अपनाये। भोजन में हितकर वह है जिसको खाते समय भी सुखद अनुभूति हो और खाने के बाद भी एवं मितव्यता वह है जिससे न आपको कमजोरी आये ना आलस, ना भारीपन और ना ही अन्न का दुरुपयोग हो।

6. चिकित्सा का व्यापार एक घृणित कार्य है-दूसरे के दर्द, दुख-परेशानी-बीमारी से लाभ लेने की मानसिकता एक बीमार मानसिकता है-एवं इस तरह के लाभ लेने वालों को भी बीमार करती है-प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से, इन्हे स्वयं को एवं इनके परिवार के सदस्यों को भी ।

आज विचलन इतना बढ गया है कि यह व्यक्तिगत स्तर से वैशविक स्तर तक परिलक्षित हो रहा है; ऐसे में क्या उपाय है जब स्वास्थ्य संगठन, वैशविक संघ, बीमारी बढाने लगे, बरबादी लाने लगे, आंतक मचाने लगे, कुछ धनाढय व्यक्तियों के संघ की दुनिया लूटने की खुली छूट दिलाने में घिनोनी भूमिका अदा करने लगे, क्या इनके सामने समपर्ण करके यमराज की गोद में अकाल ही समाते जाये? या कुछ और? दुनिया भर में बीमारी का प्रचार हो रहा हो, आर्थिक मंदी आ रही हो, काम बंद हो, ऐसे में यदि कुछ मुद्रा या धातु के दाम बढते हो तो क्या कहेंगे? क्या इनके सामनें हाथ जोडकर, सांष्टागं प्रणाम करने से कुछ हासिल होगा?, या इनकी शैतानी भरी सलाहों को दरकिनार करके, अपने आपको नियंत्रित रखते हुए, इनके दुनिया में आधिपत्य के सपनों को समाप्त करना होगा?

7. आज जब दुनियाभर में स्वास्थ्य् की चर्चा होती है, तब सिर्फ इंसानो के स्वास्थ्य या कुत्ते, गाय, घोडे के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की बात होती है-बाकि सारे अन्य पशु-पक्षियों, जलचरो एवं वनस्पतियों की चिकित्सा की चर्चा नहीं ही होती है, अंत: आने वाले समय में चिकित्सा का क्षेत्र-स्वास्थ्य की परिभाषा एवं आयाम को विस्तृत करना होगा।

स्वस्थता, अस्वस्थता-संक्रामक है-सुखद समाज के लिये सारी चिकित्सा कृतज्ञता के आधार पर देय धन एवं सामाजिक सहयोग से चलनी जरुरी है-सारी विधाये प्रचलित रहे यह जरुरी है, इस पर संवाद जरुरी है। ***

परिशष्ट-9.5

अन्न, अन्न की शुद्धता, किसान, आदिवासी, बागवान का उत्तरदायित्व

प्रश्न 3 : आपने अन्न के बारे में कहा-अन्न की शुद्धता के बारे में कहा इसमें अन्य पैदा करने वाले, अन्न को वृक्षों से लाने वाले किसान, आदिवासी, बागवान का क्या उत्तरदायित्व है। देखने में आता है कि खाद्यान्न लाने वाले किसानों, आदिवासियों की हालत बहुत दयनीय है, आपका इस बारे में क्या कहना है?

उत्तर: इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:

1). किसानों और आदिवासियों की हालत ठीक नहीं है-इसके लिये किसान, आदिवासी एवं हम सब जिम्मेदार हैं: पृथ्वी पर सैंतीस प्रतिशत जंगल होने चाहिए। धरती पर वैसे ही जंगल एवं वृक्ष होने चाहिए जैसे कि मानव शरीर मे बाल एवं रोम छिद्र होते हैं, जो आज नहीं है। सारी की सारी चीजें इसी से बिगड़ गयी।
शरीर में बालों का, रोम छिद्रों का एवं धरती पर जंगलों एवं वृक्षों का अनुपात बिगड़ने से इंसानो का शरीर बिगडा है एवं धरती का मिजाज बिगड़ा है। इस अनुपात बिगड़ने से मौसम बिगड़ा है-जिससे वातावरण मे सभी तरह के व्यवधान जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, सूखा, बेहद सर्दी, बेहद गर्मी दिखाई देने लगे-जिससे स्वाभाविक है खेती पर, जंगलों पर, किसान पर, आदिवासियों पर खराब असर तो पड़ेगा ही जो दिखायी भी देता है।

प्रकृति हमेशा खाने वालों से कई गुना भोजन देती रही है जो अब जंगलों की कमी से कम होता जा रहा है लेकिन आज भी प्रकृति तीन गुना भोजन दे रही है, यह नीयत एवं प्रबंधन की ही कमी है कि दुनिया में भुखमरी है।

2). किसानों की समस्याओं को बहुत सारे दृष्टिकोणों से देखने की आवश्यकता है : सरकारे कहती तो है कि सरकार का काम व्यापार का नहीं है, लेकिन सरकार ही सबसे ज्यादा अन्न खरीदती है-उसका मूल्य निर्धारण करती है, इस तरह किसानों एवं हम सब को प्रभावित करती है।

किसानों में व्याप्त चर्चा-कि पेड़ होंगे तो पैदावार नहीं होगी, इसलिए खेत में पेड़ नहीं होने चाहिये। सरकार ने आदिवासियों को भूमिके पट्टे दिये, उन्होंने भी जंगल काट कर खेत बना लिये। सरकार ने हरित क्रांति के दौर में भारत में तैतीस प्रतिशत जंगलों को कम करके उन्नीस प्रतिशत किया और यह भूमि खेती के लिये दी। इन सभी प्रक्रियाओं से मौसम बिगडा है और यह बेतरतीब मौसम सभी के लिए दु:खदायी साबित हुआ है।

ज्यादा पैदावार एवं त्वरित फायदे के चलते रासायनिक खाद, कीटनाशक, खरपतवार नाशको के प्रयोग–का सरकार द्वारा प्रोत्साहन, जिसमे पारंपरिक जैविक खेती का ह्रास हुआ। किसानों ने इस ज्यादा पैदावार एवं त्वरित फायदे के मंत्र को आगे बढ़ाते हुये स्टीरियोड, आक्सीटोसिन के

इंजेक्शन, अल्कोहल-एनासिन-उत्तेज़कों का छिड़काव भी शुरू कर दिया-जिससे भोज्य पदार्थ, सब्जियों-फल जहरीले होने लगे एवं खेती की जमीन एवं इसके संपर्क का जल भी जहरीला होने लगा है जिससे कैंसर जैसी बीमारी-महामारी की तरह से होने लगी है।

3). किसानों ने गाय वंश पर बहुत अत्याचार किये है जैसे बछड़ों को, भैस के पाडे को कम खाना देकर बचपन में ही मार देना, दूध देना बंद होने के बाद गाय को छोड़ देना, कृतिम गर्भाधान कराना, नकली दूध बनाना, नंदी को बधिया करना उसे बैल बनाना, किसानों एवं अन्यों को गाय वंश पर किये इस पाप का श्राप तो मिलेगा ही, जो किसानों की, समाज की खराब हालत से परिलक्षित भी होता है।

4). यदि समाज में झगड़े, लड़ाईयाँ, युद्ध की योजना बनाना हो तो वृक्षों को काट दो, खेती करो, खेत को काट दो, जंगल साफ कर दो, इन सब को वीरान, रेगिस्तान या सीमेंट कंक्रीट का जंगल हो जाने दो झगड़े, लड़ाईयाँ, युद्ध सब अपने आप हो जायेंगे (वातावरण मे गर्मी से लोगों में गर्मी बढेगी, लोगों के दिमाग गरम होंगे, जल्दी गुस्सा आयेगा-लडाई, झगडा युद्ध-स्वाभाविक रूप से हो जाएंगे)। इसके विपरीत यदि अमन-चैन लाना है तो वृक्ष लगाओ-दिल-दिमाग हरा-भरा रहेगा, लडाई, झगडा युध्द वैसे ही कम हो जायेगें-अस्पताल में हरा कपडा इसीलिए प्रयुक्त होता है।

5). वृक्षों के क्षेत्र में बोनसाई बनाने से बचना चाहिए क्योंकि प्राकृतिक नियम कहते है यदि हम किसी को छोटा करते हो, काटते हो तब कल प्रकृति भी आपको सब कुछ होते हुए भी छोटा कर सकती है या कर देती है।

6). जहाँ तक वृक्षों के लिए जगह की बात है, वह निम्न तरीके से पूरी की जा सकती है:
i. प्रत्येक कृषि भूमि में एक निश्चित प्रतिशत वृक्षों के लिए अनिवार्य किया जा सकता है जैसे पांच प्रतिशत से सैंतीस प्रतिशत तक,

ii. शहरों के करो का कुछ पैसा जंगली इलाके में, ग्रामीण इलाके में, कार्बन-ऑक्सीजन अदला-बदली के तहत देकर ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक जगहों पर पेड़ लगा कर,

iii. आज ग्रामो, नगरों एवं महानगरों में बहुत सारी जमीन लोग खरीद लेते है और उसे ऐसे ही छोड देते है, जिससे वहाँ कचरा इकठ्ठा होने लगता है एवं गंदगी फैलने लगती है, ऐसे में समाज उसका अस्थायी मालिकाना हक अपने पास लेकर वहाँ छोटे वृक्ष लगा सकताहै।

iv. अधिकांश सब्जियों, काफी अनाज की जडे एक से दो फीट से ज्यादा गहरी नहीं होती, ऐसे में उन्हे जमीन के अलावा-एक दो फिट मिठ्ठी की परत पर लगाया जा सकता है-जैसे तालाबों पर लकड़ी के फट्टे, या प्लास्टिक या धातु की नाँव पर, घरों की छतों पर, धरती को पेड की लिए खाली छोडा जा सकता है।

छतो पर पौधे लगाने के लिया हो सकता है भवन निर्माण-संरचना में परिवर्तन करना पडे। भवन निर्माण संरचना मे इस परिवर्तन से घरों के तापमान पर असर पड़ेगा जिससे गर्मियों मे बिजली की खपत भी कम होगी।

v. पूर्व में सिर्फ किसान ही कर देते थे, पिछले दो तीन सौ वर्षों से किसान एवं किसानी से जुड़े हुए सारे रोजमर्रा की जरूरतों का, मूल्य पहले सख्ती से कम करके-फिर इस कहावत से कि अगर रोजमर्रा के पदार्थ महँगे हो जायेगे तो यह किसान गरीब तो मर जायेगे की कहावत में स्थिर करके किसानों कि कमर तोड़ दी और उसे बदमाशी करने के लिए प्रोत्साहित किया। आदिवासियों, किसानों की समस्या–समाज कि समस्या है-इस पर संवाद हमारे भविष्य के लिये बहुत जरुरी है।

भारत प्रकृति प्रधान है, ऋषि एवं कृषि हमारी संस्कृति है,
प्रकृति पूजनीय है, ऋषि एवं कृषि सम्मानीय है।

जंगल, बाग-बगीचा सिर्फ सरकार का ही विषय नहीं है, यह समाज का, सामाजिक स्वस्थ, सुखी वातावरण का विषय ज्यादा है, अतः इस पर समाज को पहल करनी होगी! ***

परिशष्ट -9.6

<u>आस्था के केंद्रों द्‍वारा सफाई एवं स्वच्छता का रखरखाव</u>

प्रश्न: आपने चर्चा के दौरान आस्था के केंद्र द्‍वारा स्वच्छता की जिम्मेदारी लेने की बात कही है, आज पूरे विश्व में यूनाइटेड नेशन्स (यू.एन.ओ.) ने स्वच्छता के संबंध में नारा दिया है "Take poo to the loo" शौच को शौचालय तक ले जाये, पूरे विश्व में स्वच्छता को लेकर कई नारे भी हैं-जैसे जो गंदगी रखे वह गंदा, बदबू तो बदनसीब, खुशबू तो खुशनसीब, गंदगी में कीड़े मकोड़े रहते हैं-सुअर को मजा आता है-जो गंदगी रखता है या गंदा रहता है वह कीड़े मकोड़ों की जिंदगी जी रहा है या वह सूअर की उपस्थिति से बेखबर रहता है " इत्यादि।

कहते हैं "स्वच्छता में ही मन निर्मल रहता है एवं इसमें ईश्वर के वास करने की संभावना रहती है एवं गंदगी से मन दुर्बल होता है एवं इसमें बदमाशों के डेरा (घर) बनाने की संभावना रहती है" यह भी कहते हैं कि गंदगी रहेगी तो मच्छर मार दवाइयों के निर्माता, गंदगी से हुई बीमारी से उत्पन्न हुई बीमारी से बचाव के लिए इलाज से डॉक्टरों का फायदा एवं आमजन का नुकसान होता है।

आज जब सफाई की चर्चा चल रही है तब यह भी देखने में आता है-दवाइयों के निर्माता, समाचार माध्यम-बहुत ज्यादा कचरा फैलाने लगे है, एवं यही कचरा सामाजिक कचरे की जड़ कही जा सकती है-आप इस पूरे परिदृश्य को कैसे देखते हैं?

उत्तर: इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:

1. मन पदार्थ की गति प्रदान करता है (Mind motions the matter) "परमात्मा परम गति प्रदान करता है," हरी इच्छा ही है कि हम ऐसे ही हैं और हरि इच्छा ही होगी हम वैसे हो जायेगे। मानसिक कचरा समाचार माध्यमों से दूर किया जा सकता है लेकिन जब समाचार माध्यम ही कचरा फैलाने का काम करने लगे तब कौन बचायेगा। जब बचाने वाला डुबोने लगे, मारने लगे तब कौन बचायेगा।

कहते हैं कि समाचार नहीं है तो स्थिति ठीक है और समाचारों की यदि बारिश हो जाये 24×7 सैकड़ों चैनल समाचार देने में लगे तो स्थिति की भयावहता का अंदाजा लगाया जा सकता है समाचार माध्यमों के यहां कहावत बुरी खबर से अच्छी खबर कोई हो ही नहीं सकती और खबरें जितनी बुरी हो उतनी ही अच्छी और यदि कोई बुरी खबर नहीं है-तो बुरी खबरें बनाओ, काल्पनिक बुरी खबरें बनाओ लेकिन यदि समाचार माध्यमों के द्वारा खबरें/समाचार बेचने के लिए अनैतिक कार्य करवाना शुरू कर दिया जाये, आंदोलन करवाना शुरू कर दिया जाये, अस्थिरता लाने में पहले आग लगाने का काम फिर उस में घी डालने का काम शुरू कर दिया जाये तो यह स्थिति बहुत भयावह है एवं सारी गंदगी, सारे कचरे की जिम्मेदारी इनके मालिकों (समाचार माध्यमों के) की बनती है।

कहते हैं भूकंप सब हिला देता हैं, बाढ़ सब बहा देती है, अग्नि सब जला देती है, अकाल सब सुखा देता है, लेकिन जब इनसे भी बात ना बने तब युद्ध ही शुद्धी लाता है। स्थिति ठीक करने के लिए एक वृहद संवाद-सहमति-सहयोग की आवश्यकता है।

2. सफाई के पूरे परिदृश्य को एक नये आयाम से देखने की जरूरत है एक वृहद दृष्टि से देखने की जरूरत है-और परीक्षात्मक दृष्टि से देखने की जरूरत है कि इस सामान्य से विषय को जो प्रत्येक व्यक्ति की स्वाभाविक समझ होनी चाहिए क्यों इस स्थिति तक पहुँचा कि यूनाइटेड नेशन को इस विषय को कि 'Take poo to the loo' शौच को शौचालय तक ले जाओ, अपने लक्ष्य में रखना पड़ा एवं भारत जैसे देश में देश के सर्वोच्च पद प्रधानमंत्री द्वारा चलाये गए स्वच्छता अभियान के बावजूद स्थिति में बहुत सुधार नहीं आया हो।

3. इस पूरी स्थिति पर जब सफाई कर्मचारियों से एवं अन्य संगठन जो सफाई के व्यवसाय में संलग्न से चर्चा की तो पता चलता है कि एक ऐसा समाज है जो सफाई के कार्य में संलग्न ही नहीं है वह इसे दूसरे समाज के लोगों द्वारा कराता है-जिसके दो परिणाम हुए।

यह समाज पूरी तरह से एक धार्मिक व्यवस्था नहीं बन पाया-यह अपने को एक अलग धर्म कहता है अपने अलग मंदिर, अलग पूजा-अर्चना करता है लेकिन व्यापार के अलावा अन्य कार्यो के लिए अपने निकटवर्ती दूसरे समाज में व्यस्त लोगों की तरफ देखता है और इसे धन लेकर कराता है। जो कार्य पैसा देकर करा सके वह सम्मानीय नहीं रह पाता-वह निकृष्ट हो जाता है-उसको करने वाले निकृष्ट की श्रेणी में आने लगते हैं और पिछले पच्चीस सौ वर्षों से इस धर्म के अनुयायियों ने व्यापारी वर्ग के अलावा अन्य को-छत्रिय एवं सेवाकारों को पैसा द्वारा खरीदने वाली सेवाओं की दृष्टि से देखा है। इस धर्म के लोग ने धीरे-धीरे दुसरे समाज के व्यापारी वर्ग के यहाँ परिवारिक रोटी बेटी का संबंध भी बनाए, लेकिन दूसरे वर्गों से दूर ही रहें।

पच्चीस सौ वर्षों में यह सोच पूरी पृथ्वी में व्याप्त हो गयी कि व्यापारी सर्वश्रेष्ठ है-व्यापार श्रेष्ठ है बाकी सब-निकृष्ट है, नेष्ठ है और की सेवाओं को थोड़े या ज्यादा पैसे से खरीदा जा सकता है-उन्हें नौकरो की तरह रखा जा सकता है। समाज में इन धर्म ने प्रवचन देने में प्रवेश तो किया लेकिन यह अपने धर्म के लोगों को सार्वजनिक रूप से सुरक्षा एवं सफाई के कार्य में संलग्न होने की आवश्यकता पर कुछ नहीं कह पाये ऐसे धर्मों का क्या किया जाना चाहिये?, स्थिति ठीक करने के लिए एक वृहद संवाद-सहमति-सहयोग की आवश्यकता है, फिर चाहे यह धर्म कितना ही पुराना क्यों ना हो कितना भी पैसा वाला क्यों ना हो।

4. सफाई की जब चर्चा हो तब सामाजिक प्रचार तंत्र, सोशल मीडिया कैसा हो पर चर्चा जरूरी है?
इस बात पर चर्चा जरुरी है की बाथरूम कैसे हो, कचरा कैसे निष्कासित हो, नदियों की सफाई कैसे हो, जल, वायु, धरती, समुद्र कैसे साफ रहे। इस पर भी चर्चा जरूरी है-या सफाई के नाम पर बिना पानी की उचित व्यवस्था के दड़वानुमा बीमारू बाथरूम से काम चलेगा या हमें इस बात पर भी विचार करना होगा की बाथरूम में देशी कमोड या कुर्सीनुमा (कमोड) क्या उचित रहेगी या किसके लिये क्या उपयोग योग्य है?

सफाई के पूरे परिदृश्य को एक नये आयाम से देखने की तब ज्यादा जरूरत हो जाती है जब प्रचारतंत्र/ इन्टरनेट अच्छी बातों के साथ-साथ कचरा भी दिखाने लगे हो, संचार के नाम पर उतेज़ना भड़काने लगे हों, लोगो को एक आइटम/वस्तु समझकर उनसे कहने लगे हों की जीवन है तो उस के नमक से, उस तेल से, उस टूथपेस्ट से उस डॉक्टर से, उस अस्पताल से नहीं तो जीवन, जीवन ही नहीं है ।

प्रचारतंत्र/ इन्टरनेट की सफाई ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि सस्ते इन्टरनेट से बच्चे एवं बड़े अश्लील फिल्म देखकर सुअरों की तरह होते जा रहे है, और यह कुछ देशों को, कुछ नस्लों को गन्दा करने कि उन्हें मानसिक, भावनात्मक एवं शारीरिक रूप से बर्बाद करने की गन्दी साजिश जैसी भी नजर आती है?

5. कहते हैं की - क्षय रोग, श्वसन रोग, त्वचा रोग, कोढ़-महारोग (Leprosy) गन्दगी की अतियों के कारण ही होता हैं और यह संक्रामक रोग व्यक्ति का धर्म, जाति उम्र रंग-रूप एवं स्त्री पुरुष देखकर नहीं फैलती बल्कि उस पूरे इलाके में फैलता है जहाँ यह गंदगी होती है। ऐसे में जब गंदगी, गंदगी से उपजी बिमारियों की चर्चा हो तब यह चर्चा जरुरी हो जाती है की मूलतः समाज है क्या समाज वह है जो सबको मिलाकर एक भौगोलिक सीमा में रहने वालों से बनता है या मुस्लिम समाज, बौद्ध समाज, ईसाई समाज, आर्य समाज, समाज की सही व्याख्या है?

इन बढ़ती हुयी बिमारियों को देखते हुए हम आराम से कह सकते हैं कि सफाई-स्वच्छता कितनी जरूरी हैं, अतः यह जरुरी हो जाता है की हम इस बात परचर्चा करे की सफाई की जिमेवारी कोण लेगा, क्यों लेगा, उसका मेहनताना एवं मन सम्मान क्या होगा?

6. घर में सफाई का कार्य माता-पिता, बुजुर्ग एवं घर की महिला सदस्य देखती है-चूँकी समाज में सफाई के कार्य में संलग्न लोगों को हेय दृष्टि से या उतना सम्मान नहीं दिया जाता है जितना-पैसा कमाने वाले को-प्रवचन देने वालों को इसलिए घरों में पैसे कमाने वालों की इज्जत बढ़ी, माता-पिता, महिलाओं की इज्जत कम हुई एवं यह सभी समाज एवं सभी धर्मों में हुयी।

7. एक धार्मिक ग्रंथ में आता है मल विसर्जन के लिए जाना हो तो एक कुदाल ले जाना, एवं एक गड्ढा खोदना एवं मल विसर्जन के बाद उस गड्ढे को मिट्टी से भर कर आना। बिल्ली को देखेंगे तो आमतौर पर वह ऐसा ही करती है,समझ में नहीं आता इस सीख को क्यों नजर अंदाज कर दिया गया। पानी नहीं है तब भी डिब्बा नुमा कमरे में मल विसर्जन जिसमें काफी पानी न होने से दम घुटता हो-एवं कुर्सीनुमा कमोड में बैठने से बीमारियां बढ़ती हो, का आग्रह क्यों करना, वह भी प्रधानमंत्री स्तर से-समझ के पूरे है। सेप्टिक टैंक का चलन हटा के, सीवर में बहाना और सीवर को नदी-रिवर (river) में मिलाने से घातक परिणाम आये हैं।

8. आज जो दिन में एक बार कचरा उठाने की (जैविक, प्लास्टिक, अन्य) व्यवस्था है-वह जैविक कचरे का अंबार लगा देता है-और उसे बैक्टीरिया-वायरस खत्म करते है-और कई बार ऐसे वायरस

बीमारी फैलाते है, जबकि गांव में ऐसा नहीं है क्योंकि खाद्य का बचा हुआ हिस्सा तुरंत गाय, कुत्ते, बिल्लियों को खिला दिया जाता है। यदि गाँव के समकक्ष व्यवस्था बनानी है तो शहरों मे भी तीन बार कचरा उठाने की व्यवस्था होनी चाहिए सवेरे, नाश्ते के बाद, दोपहर एवं रात्रि के भोजन के बाद, तभी हम कचरे से एवं कचरे से फैलने वाली बीमारियों से छुटकारा पा सकते है।

9. जहाँ तक प्लास्टिक कचरे की बात वैश्विक स्तर पर सामने आ रही है-यदि हम वास्तव मे इसके समाधान की ओर प्रयास करेंगे तो इससे समाज में रोजगार भी बढेगे-जैसे लगभग अधिकांश स्त्रियाँ एवं पुरूष घर से जाते हैं तो एक बैग लेकर निकलते हैं-ऐसे में वह अपने साथ पानी पीने का ग्लास रखकर चले-तब समाज में रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड एवं बाज़ारों में पानी पिलाने के लिये लाखों व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा एवं प्लास्टिक की बोतल से मुक्ति मिलेगी-दूसरे इसी तरह के और उदाहरण दोने, पत्तल, कुल्हड़ के उपयोग से हो सकते है। वैसे प्लास्टिक एक अच्छा उत्पाद है इसकी अनावश्यक बुराई व्यर्थ है, जरूरी है प्लास्टिक के अंधाधुंन्ध उपयोग से बचने की, इसकी सफाई की एवं जो अवशिष्ट हो जाये उससे सड़क बनाने की। जरुरत है ईधन के सम्यक प्रयोग की।

10. सफाई के ठीक से ना होने के कारणों में एक राजनैतिक भी है, पार्षद बनाना, नगर पालिका, नगर पंचायत, एवं नगर निगम का रखना, फिर इन सबको पालने के लिए-कुछ काम तो होना चाहिए, इसी सोच ने सफाई का बेडा गर्क (खराब) कर रखा है-अन्यथा-धार्मिक संगठन, यह काम बखूबी से कर सकते है।

सफाई एवं सफाई में संलग्न व्यक्तियों को सम्मान देने की जरूरत है जो इसे हेय दृष्टि से देखता उसे दंड देने की भी जरूरत है। सफाई के लिए जिम्मेदारी उठाने के लिए अग्रसर होना होगा, जिससे सब ठीक हो जायेगा। ***

परिशष्ट- 9.7

<u>समाज में सभी को काम/रोजगार देने की व्यवस्था</u>

प्रश्न: आज समाज में बच्चों के पास रोजगार नहीं है और बुजुर्ग भी घरों में खालीपन के शिकार है? यह कैसे पटरी पर आयेगा, अर्थात रोजगार कैसे मिलेंगे?

उत्तर :- 1) रोजगार के संबंध में एक कहानी आती है-एक व्यक्ति देशाटन पर था, एक दिन भ्रमण करते हुए उसे प्यास लगी और उसने पास में ही हरे भरे खेत के मध्य एक चलता हुआ रहँट (पर्शियन व्हील) देखा, उस रहँट के पास जाने पर देखा कि एक बुजुर्ग बैठे हैं और दो नौजवान रहँट चला रहे हैं-महान व्यक्ति को आश्चर्य हुआ-महान व्यक्ति ने बुजुर्ग व्यक्ति से इजाजत लेकर पानी पिया और कहा कि मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ, इस पर बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा अभी थोड़ी देर में हमारे खाने एवं विश्राम का समय होगा तब पूछना।
थोड़ी देर में दोनों नौजवान ने अपना कार्य पूर्ण किया और बुजुर्ग व्यक्ति से कहा पिताजी अब हम घर जा रहे हैं, शाम को आयेगे। दोनों नौजवानों के जाने के बाद बुजुर्ग व्यक्ति ने महान व्यक्ति से कहा कि अब आप जो मर्जी हो पूछ सकते हो।

महान व्यक्ति ने कहा, आज के जमाने में कुआं और रहँट देखकर आश्चर्य हुआ था, और यह दोनों जवान चला रहे हैं तब भी अजीब लगा और अब और भी अजीब लग रहा कि रहँट पर जुते हुए जवान बच्चे आपके अपने हैं! क्या इस क्षेत्र में इतना पिछड़ापन है, कि लोगों को यह भी नहीं पता कि रहँट में बैल, गधे, खच्चर, भैंसों को जोता जाता है?, और आज तो तमाम तकनीकें भी बाजार में उपलब्ध है-पनबिजली से लेकर सूर्य से चलने वाले पंप तक, आपका क्या कहना है?

बुजुर्ग व्यक्ति ने महान व्यक्ति से कहा कि मुझे आपको देखकर अंदाजा लग रहा था कि आप इतना ही आम एवं बेहूदा प्रश्न पूछने वाले हैं, इसलिए मैंने सोचा कि आपका धैर्य भी देख ले एवं बच्चे चले जाए तब आपसे बात करेंगे।

यह बात सुनकर महान व्यक्ति को थोड़ा क्रोध आया, लेकिन तब भी शांत चित्त से उसने कहा कि आप अपने ही बच्चों को बंधुँआ मजदूरों की तरह इस्तेमाल कर रहे हो जो सर्वथा गलत है और कानून विरोधी भी?

इस पर बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा कि आपको क्या लगता है इतना हरा भरा खेत वैसे ही हो जाता है, यह दोनों नौजवान बच्चे अच्छी तरह से पढ़े लिखे हैं और खाली बैठे थे, कोई काम इन्हें नहीं मिला, तब हमने आपस में निर्णय लिया कि **जब तक इस जवान ऊर्जा के निष्कासन की कोई उपयुक्त व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक अपने ही खेत पर जो भी कार्य होगा** वह करेंगे, और तब से बच्चे अपनी मर्जी से आते हैं जो भी खेत में काम है वह करते हैं।

<u>उपरोक्त के अतिरिक्त बुजुर्ग सज्जन ने वार्तालाप में निम्न कहा:</u>

1. बच्चों का कहना है कि यदि हम यह काम नहीं करेंगे तो फिर ठीक रहने के लिए व्यायामशाला (जिम) जाना होगा, खाली बैठेंगे तो दिन भर टेलीविजन देखेंगे, मोबाइल से खेलेंगे, मोटरसाइकिल से मटरगश्ती करेंगे, इस सब (वर्कआउट) से तो अच्छा हैं अपना ही कोई शारीरिक श्रम (वर्क-इन) का कोई उत्पादक कार्य कर लो। खाली रहेंगे तो दिमाग खाली रहेगा, ऐसे में शरीर और यह दिमाग ही बोझ बन जाता है, बेकार के ख्याल ही ज्यादा आएंगे और इस सोच के साथ बच्चों ने काफी मशीनों को त्याग कर जितना संभव होता है अपने हाथ से काम करते हैं और नहीं हो पाता है तो अपने जैसे दूसरे व्यक्ति का सहयोग लेते हैं, उन्हें रोजगार देते हैं या बदले में उनके यहां काम कर देते हैं।

i. बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा आजकल के बच्चे एवं युवा नशाखोरी, अश्लील चित्र दर्शन एवं प्रदर्शन में लगे हुये है, आज हर बच्चों को मोटरसाइकिल, कारें चाहिए, प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे बीमारियां

बढ़ती जा रही है यह सब सूचनाओं की भरमार लेकिन सही सलाह, सही मार्गदर्शन एवं रोजगार के ना होने के कारण है। रोजगार के ना होने के कारण ही युवा ऐसे हो गये, एक बार रोजगार मिलेगा, तब धीरे-धीरे समाज उन्हें ठीक कर लेगा। बच्चों को आस्था के केंद्रों पर उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण, खाद्यान्न सुरक्षा एवं रोजगार के द्वारा बच्चों को भविष्य की सही दिशा एवं उनमें स्वविवेक जागे इसकी सही दिशा दी जा सकती है।

ii. नशा, शादी-ब्याह समाज का विषय है, समाज इनसे निपट लेगा, सरकार को बस इसमें अंतर्राष्ट्रीय घुसपैठ को रोकने का काम करना चाहिए, प्रयास करना चाहिए, और वह भी ना कर सके तो समाज को अपनी अक्षमता जाहिर करना चाहिए, जिससे समाज ऐसी कंपनियां, ऐसी विदेशी या देसी उत्पादों का, अखबारों का, न्यूज़ चैनलों, का बहिष्कार कर सके। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अधिनियम-अश्लीलता, अभद्रता, नशाखोरी के लिए नहीं होता।

iii. वाहनों का बढ़ना, तेल की खपत ज्यादा होना, बैंकों का व्यवसाय बढ़ना, जनता की गरीबी, भुखमरी, कर्जदारी की निशानी है सिर्फ प्रदूषण ही समस्या नहीं। इसमें सबसे पहले वाहन के लिए कर्ज, उन्हें चलाने के लिए भत्ता का बंद करना, फिर उन व्यापारियों के मुनाफे या कर अदायगी के अनुपात में ही वह कार रखे वह उचित प्रतीत होता है नहीं तो लगता है कि खाते में कुछ गड़बड़ी की जा रही है।वायु प्रदूषण कम करने के लिए एडिटिव मिश्रित, डीजल, पेट्रोल एवं साधारण डीजल, पेट्रोल एक दर पर मिलना चाहिए (इसमें कर विभाग के व्यर्थ के तर्क को दरकिनार करने की जरूरत है)।

iv. साइकिल एक अच्छा विकल्प है, अच्छी एवं ज्यादा कारगर साइकिलों को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त खेती में पारंपरिक तरीके अपनाये जाये, ना कि जेनेटिकली परिवर्तित बीज।

v. हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, एवं पीली क्रांति से वनों व वनोपज को एवं हमारी वर्तमान पीढ़ी को बहुत नुकसान हुआ है-इसे ठीक करना जरूरी है और फिर वन है तो हम हैं, जल है तो कल है-यह जेहन में रखना जरूरी है।

2). जहाँ तक जवानों को रोजगार की बात है तो वह बहुतायत से उपलब्ध है, समस्या बस यह है कि वर्तमान में सरकार ने यह गलत ख्याल पाल रखी है और जनता के बीच प्रचारित कर रखी है कि रोजगार सरकार की जिम्मेदारी है।

i. रोजगार देना सरकार की जिम्मेवारी है ही नहीं, हाँ सरकार को जितने व्यक्ति चाहिए वह समाज से ले सकता है-और सरकार को इतना ध्यान रखना होगा कि सरकारी क्षेत्र में सुविधाएं, सामाजिक क्षेत्र से बहुत अंतर में ना हो, जैसे कि दोनों की न्यूनतम एवं दोनों की अधिकतम में एक अनुपात पंद्रह (1:15) तक का ही फासला हो, और आज अगर यह अंतर है तो एक को कम और दूसरे को बढ़ाकर दोनों ओर से ठीक करना होगा।

ii. जब पैसे का चलन नहीं था, या बहुत कम था तब सभी काम करते थे, सबको खाना, कपड़ा, रहने की जगह, नशे का सामान एवं मनोरंजन की व्यवस्था सब कुछ मिल जाता था-यह वह व्यवस्था है जिसको लोग उपभोग (Consumption economy) की अर्थ व्यवस्था या आत्मनिर्भर व्यवस्था कहते है। यह बेचने वाली या निर्यात वाली अर्थव्यवस्था (export economy) मे बेहतर मानी जाती है।

iii. इसके अतिरिक्त-आज की स्थिति को ख्याल में रखे तो अधिसंख्य रोजगार पर्यावरण संबंधी कार्यों, जैसे-जंगल लगाना, पेड़ लगाना, तालाब खोदना, नये ग्राम बनाना, खेलकूद का स्थान बनाना एवं इसके संरक्षण व रखरखाव में एवं इसके अतिरिक्त सुरक्षा में (स्त्रियां आंतरिक सुरक्षा में पुरुष बाहय सुरक्षा में) उपलब्ध है, यह इतने रोजगार हैं कि कोई यह नहीं कह पाएगा कि रोजगार नहीं है।

iv. इसके अतिरिक्त पढ़े लिखे के लिए अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में, कि इतनी संभावना है कि करते करते थक जाये तब भी पूरा नहीं होगा, क्योंकि देश में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषाओं की कमी नहीं है।

v. आंतरिक सुरक्षा-बाहय सुरक्षा, खाने-पीने, ऊर्जा, साफ-सफाई, ग्राम एवं नगर पुर्ननिर्माण, संरक्षण व रखरखाव, मनोरंजन, कला एवं पर्यटन के क्षेत्र में तो कार्य अनवरत चलता ही रहता है और चलता ही रहेगा।

vi. बुजुर्गों का खालीपन तो समाज की समस्या है ही और जहाँ तक व्यस्त रहने का प्रश्न है, उसके लिए कुछ बिजली से चलने वाली मशीनों का त्याग करना पड़ेगा और उसके बाद यह सभी कार्य हाथ-पैर से करने शुरू करना होंगे, जैसे हाथ से चलने वाली आटाचक्की, चरखा, हैंडलूम, सिलबट्टा,

खलबट्टा का चलन बढ़ाना एवं मटके, कुल्हड़, पत्तल दोनों का प्रयोग बढ़ाना पड़ेगा यह सब कार्य बुजुर्गों द्वारा किये जा सकते हैं समय काटने के लिए और जवानों द्वारा रोजगार के लिए।

3).रोजगार-धनोपार्जन के लिये दैनिक कार्य के संबंध में निम्न बातों पर वृहद संवाद की जरूरत है। रोजगार कौन देगा, किसे देगा, रोजगार कहाँ से आयेंगे, रोजगार कब देगा या रोजगार कब करना चाहिए, और रोजगार क्यों करना चाहिए इसके अतिरिक्त यह भी का विषय है कि रोजगार ना मिले और पैसा मिल जाये या रोजगार ऐसा हो जिसमें परिवार समाज एवं सरकार का भविष्य दांव पर लग जाये-यानी कि रोजगार नीतिगत न हो अन्याय पूर्ण, प्रकृति विरूद्ध हो बीमारी, बदमाशी, बहसीपन, बेहोशीपन या बर्बादी लाने वाला हो?

i. रोजगार के संबंध में धर्मशास्त्र क्या कहते हैं, नीति शास्त्र, संस्कृति एवं संविधान क्या कहते हैं?

ii. रोजगार के लिए शिक्षा कैसी हो, पढ़े-लिखे और कम पढ़े-लिखे में एवं मेहनती व्यक्ति के बीच वेतनमान का अंतर कितना हो-और वेतन या धनोपार्जन के बाद आय में किसका हिस्सा कितना है, यानी कि माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी, दादा-दादी, भाई-बहन, धर्म-समाज एवं सरकारी कर का कितना हिस्सा होना चाहिए, और यह विभाजन ठीक रहे इसकी जिम्मेदारी किसकी होनी चाहिए?

iii. रोजगार में कितना काम, काम के बीच कितना आराम, अगर काम स्वास्थ्य खराब करें तो क्या करें?

iv. शासकीय नौकरी कितने उम्र से शुरू होकर कितने उम्र तक चले?

v. शासकीय नौकरी में पेंशन क्यों हो, और कितनी हो, पेंशन देने से परिवार एवं समाज पर क्या होंगे?

vi. सीवर की सफाई में किसी की मौत किस मायने में कम है एक सिपाही की मौत या सीमा पर जवान की मौत से?

vii. क्या स्त्री और पुरुष के रोजगारों के प्रकारों में, एवं उनके मेहनताने में अंतर होना चाहिए, यदि हाँ तो वह क्यों और कितना होना चाहिए?

viii. आखिर में रोजगार स्वस्थ्य, सुखी, व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन के लिए ही तो है, तब यह देखना जरुरी नहीं की काम करते वक्त क्या रोजगार स्वतंत्रता प्रदान करता है या नहीं?

ix. रोजगार करते समय हमारा दृष्टिकोण और हमारी दृष्टि कैसी रहती है क्या यह पहलू भी वैश्विक रोजगारी-बेरोजगारी के बारे में महत्वपूर्ण है, क्या इसे अनदेखा किया जा सकता है?

4). रोजगार पर वृहद संवाद में वैश्विक स्थिति का ध्यान रखना क्या आवश्यक होगा?
i. इंग्लैंड में अधिकारिक रूप से बारह प्रतिशत जनता अकेलेपन का शिकार है, उनके पास पैसा है, लेकिन काम नहीं है, कोई बात करने वाला नहीं है लिहाजा उन्हें बीमारियां बढ़ रही है और इसलिए वहाँ उनकी समस्याओं के लिए एक अलग मंत्रालय खोला गया है मिनिस्ट्री ऑफ लोनलीनेस। (Ministry of Loneliness)

ii. चीन में जनसंख्या पर काबू पाने एवं सब को रोजगार देने के लिए एक बच्चे (हम दो हमारा एक) का नियम बनाया गया, जनसंख्या नियंत्रित हुई, रोजगार भी मिला, लेकिन आज के युवा को भाई-बहन, भाई-भाई, बहन-बहन, चाचा-चाची, मामा-मौसी, बुआ का रिश्ता क्या है का अनुभव नहीं है। चीन ने रोजगार देने के लिए एक बड़ी कीमत चुकाई है, क्या इस कीमत पर रोजगार ठीक रहेगा?

iii. अमेरिका एवं यूरोप के अनेक अनेक देशों में कुल आबादी का एक बड़ा हिस्सा मोटापे एवं नींद ना आने की बीमारी का शिकार है क्या हमें ऐसा विकास/विनाश चाहिए?

iv. भारत में रोजगार के संबंध में (जिसमे गुलामी के दौर और चंपारण का जिक्र भी आता है)
पहले कहते थे: उत्तम खेती, मध्यम बान-निकृष्ट चाकरी, भीख निदान,

गुलामी के दौर में कहावत हुयी (कहते हैं जब मेहनत का पैसा मिलता ही नहीं हो)
खन्ती, खुरपी खो डाली, खेती करी उसने झख मारी,

और आज लगता है: उत्तम उधार (भीख), मध्यम नौकरी-निकृष्ट व्यापार, खेती निदान/मज़बूरी,
इतना अंतर आया है पिछले दो तीन सौ वर्षों में ।

प्रश्न: पूरी दुनियाँ में आदिवासियों का इलाका रोजगार के संबंध में कोई बात ही नही करता था, लेकिन अब जब जंगल कट गये या जंगल काट कर खेत बन गये है, तब यह आदिवासी भी रोजगार के संबंध मे बाते करने लगे है, इस बारे में आपका क्या कहना है?

उत्तर: इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:

i. अधिकांश खनिज उत्खनन, प्रसंस्करण, इसका प्रोत्साहन त्वरित फायदों के लिए लंबे समय का घाटा है एवं इस पर अंतरराष्ट्रीय सोच बदलने की जरूरत है।

ii. आज की समस्या-पर्यावरण की सबसे बड़ी दिखाई देती है, जो जंगलों के पुनर्जीवन से एवं पेड़ लगाने से ही संभवत दूर हो पाये। आदिवासियों को मुख्यधारा में लाने के नारे, प्रलोभन एवं आरक्षण देने के बजाये, आदिवासियों को उन्हीं की धारा में मजबूती प्रदान करने की है, वन अधिनियम एवं वन विभाग वनों के दुश्मन साबित हुए, इन्हें बंद करने/खत्म करने की जरूरत है। पेड़ लगाना एवं उसे ही काटना, छाँटना व्यक्ति विशेष पर ही छोड़ना ठीक रहेगा। जमीन की कमी नहीं; सही प्रबंधन की कमी है।

इन सभी बाँतो पर संवाद से पर्याप्त मात्रा में रोजगार उपलब्ध होंगे एवं बने रहेंगे।***

परिशष्ट-9.8

<u>न्याय व्यवस्था - विकृति में समज को नयापन देने की व्यवस्था</u>

प्रश्न: कृपया आप हमें न्याय, न्याय व्यवस्था के बारे में बताये क्योंकि कहते हैं कि न्याय ही नयापन लाता है, पुराने को भूलने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है, प्रायश्चित को स्थान देता है, क्षमा को स्थान देता है एवं दंड का प्रावधान भी दिखाने के लिए अंतिम उपाय के रूप में रखता है-जिससे जीवन चलता रहे–सुख, समृद्धि प्रकृति में बनी रहे, इसके अतिरिक्त धर्म एवं धर्म की सभी शाखाओं एवं संप्रदायों में भी न्याय की प्रधानता को दर्शाया गया है?

उत्तर :- जैसे माँ घर में बच्चों के झगड़े सुलटाते रहती है, वैसे ही आंतरिक न्याय, परिवार एवं समाज का कार्य है, एवं अंतर्राष्ट्रीय एवं संवैधानिक विवाद में न्याय सरकार का काम है। संविधान में लिखित सारे न्याय को देना सरकार का कार्य नहीं है, इससे घर, परिवार और समाज के अंदरूनी कार्य करने में दिक्कत हुई है और होती है।

इस सन्दर्भ में निम्न प्रेषित है:

एक पुरानी कहानी आती है-एक व्यक्ति अपने पुत्र के साथ एक दुकान पर सामान खरीदने जाता है, व्यापारी हर वस्तु का दाम ज्यादा लेता है-जिस पर उसका पुत्र विरोध दर्ज कराता है लेकिन उसका पिता उसे चुप कराता है, पैसा देता और सामान लेकर घर में आ जाता है और पुत्र को समझाता है कि देखो यदि व्यापारी अपने सामान का तय कीमत से ज्यादा पैसा हर खरीददार से नहीं लेगा तो उसके पास धन कैसे इकट्ठा होगा? और तुम्हें तो पता है कि तुम्हारे पिता चोरी डकैती का काम करते हैं, ऐसे में जब हम उसके यहां चोरी डकैती करने जायेगे तब वह धन इकट्ठा नहीं करेगा तो हमें क्या मिलेगा? कुछ दिनों बाद व्यापारी के यहां चोरी हो जाती है।

चोरी होने के बहुत दिनों बाद बाप-बेटा फिर उस दुकान पर सामान खरीदने जाते हैं, और पाते हैं कि व्यापारी फिर से धनी हो जाता है, अब वह तयशुदा पैसे से पहले के मुकाबले और भी ज्यादा पैसे लेने लगा था। घर पर आकर बेटे ने पूछा कि यह इतने कम समय में फिर से धनी कैसे हो गया और हम चोरी के बाद भी बहुत अच्छी हालत में नहीं है, एवं अब व्यापारी पहले से भी ज्यादा बेईमानी करने लगा है।

कुछ दिनों बाद व्यापारी के यहां फिर चोरी हो जाती है इस बार चोर पाता है कि व्यापारी ने थोड़ी सुरक्षा बढ़ा दी है, धन को जमीन में दबा दिया एवं पैसों के साथ साथ सोना चांदी भी खरीद लिया गया है।

इसके बाद व्यापारी फिर व्यापार में लग जाता है लूटे हुए धन की भरपाई एवं अतिरिक्त धन की व्यवस्था एवं धन की सुरक्षा में बढ़ाए गए खर्च की भरपाई के लिए ग्राहकों से लूटने की नई-नई तकनीकें लेकर आता है, आकर्षक योजनाएं लाता है, प्रचार प्रसार कराता है, व्यापारी को ड़र बढ़ने लगता है तो व्यापारी सुरक्षा में भी ज्यादा खर्च करने लगता है और ज्यादा खर्च करने के कारण मुनाफा बढ़ाने लगता है।

इधर चोर के बच्चे ने अपने पिता से कहा कि व्यापारी अब तो खुला लूटने लगा जनता भी उससे परेशान होने लगी, और उसने सुरक्षा भी काफी बढ़ा दिया है, अब क्या करेंगे? कुछ दिनों बाद व्यापारी के यहां बड़ी हुई सुरक्षा के कारण लूटपाट की मामूली घटना होती है।

व्यापारी ने चोरी के बारे में नगर में बताया और कुछ दिनों बाद चोर साहब नगर के जवानों द्वारा पकड़े जाते हैं एवं न्याय के लिए नगर के एक पुराने साधु के पास ले जाए जाते हैं।

साधु ने कहा कि चोर कहे जाने वाले व्यक्ति को इज्जत के साथ निगरानी में रखो और मुझे कुछ दिन का समय दो जिससे मैं तथ्यों से अवगत हो जाऊं, गुप्त जानकारियाँ इकठ्ठा कर लूँ, समाज में लोगों से मिल लूँ एवं विचार विमर्श कर लूँ। करीब एक सप्ताह बाद साधु ने चोर, व्यापारी, गांव के वरिष्ठ नागरिकों एवं जिन जवानों ने चोर कहे जाने वाले व्यक्ति को पकड़ा था सभी को बुलाया और पूछना शुरू किया:

साधु : व्यापारी आपके यहां चोरी हुई है?

व्यापारी : हां,

साधु : चोरी में गए सामान, धन का ब्यौरा दो?

व्यापारी : जी,

साधु : क्या आपके यहां पहली बार चोरी हुई है?

व्यापारी : नहीं-नहीं पहले भी हुई है, लेकिन पहले चोरी की सूचना नगर में नहीं दी थी बस घर पर सुरक्षा बढ़ा दी थी,

साधु : उन सभी चोरी का ब्यौरा दो, सुरक्षा पर खर्च का ब्यौरा दो?

व्यापारी : जी,

साधु : चोरी में पकड़े गए व्यक्ति से, आप पर चोरी का इल्जाम लगा है, क्या आप स्वीकार करते हैं?

व्यक्ति : जी,

साधु : क्या आपने इसके पहले भी चोरी की?

चोर : जी,

साधु : प्रत्येक चोरी में प्राप्त हुए धन एवं सामान का ब्यौरो दो?

चोर : जी,

साधु: वरिष्ठ नागरिकों से, आपके नगर में चोरी हुई और पहले भी हुई है, आपने इस संदर्भ में क्या किया?

वरिष्ठ नागरिक: चोरी की चर्चा पहले भी हुई थी लेकिन सूचना पहले ही बार दी गई इसलिए इस बारे में प्रयास पहली बार किया गया,

साधु: नगर के जवानों से, आपको चोर को पकड़ने में कोई दिक्कत तो नहीं हुई इनके यहां से चोरी का क्या सामान मिला?

जवान: नहीं, इनके यहां से चोरी का कोई सामान नहीं मिला, इनके घर में आम घरों में जितना सामान होता है उतना ही दिखा, इनके घर वालों ने बताया कि चोरी के पैसे से इन्होंने अपने दोस्तों के साथ उत्सव मनाया, कुछ पैसा जरूरतमंदो में बाँट दिया एवं कुछ धार्मिक स्थान पर लोगों के खाने की व्यवस्था में गुप्त दान दिया।

साधु: नगर के वरिष्ठ व्यक्तियों से, क्या आपको लगता है कि चोर के यहां चोरी का कोई धन नहीं मिला होगा, और यह कि चोर सामाजिक कार्यों में धन खर्च करता है?

वरिष्ठ नागरिक: हमारे युवा सच बोलते हैं जहां तक इन सज्जन जो आज चोरी के इल्जाम में यहां खड़े हैं का प्रश्न है यह वाकई में जरूरतमंदों की मदद करते देखे गए हैं एवं यह भी कि धार्मिक स्थान पर चोरी की घटना के बाद काफी गुप्त दान आया था।

साधु : चोर से, तुम चोरी क्यों करते हो, सामान्य जन की तरह मेहनत मजदूरी क्यों नहीं करते।

चोर : चोरी मेरी हो इन व्यापारी बंधु की, जो लोगों से यह तय-शुदा कीमत से ज्यादा पैसा लेकर करते हैं, में कम मेहनत नहीं लगती, आप इन व्यापारी बंधु से भी पूछ सकते हैं, बस फर्क इतना है कि यह खुली रोशनी में थोड़ी-थोड़ी सबके धन की चोरी या कहें लूट मचाते हैं इसलिए शायद इज्जत दार कहलाते हैं, एवं में एक मुश्त ज्यादा पैसे की एक कुछ खास जगहों से जहां लूट का पैसा रखा है एवं

रात में करता हूं, इसके अतिरिक्त मेरे काम में खतरा ज्यादा है, जहां तक चोरी करने का प्रश्न है, तब मैं बचपन से देखते आया हूं कि यह मेहनत मजदूरों को कम पैसा देते, सामान बेचकर ज्यादा पैसा वापस ले लेते हैं, सामान का पैसा अपने पास इकट्ठा कर लेते हैं, जिससे समाज गरीब बना रहता है, तब से मुझे इन पर बहुत क्रोध आता है, मुझ में दिन दहाड़े लूटने की शक्ति कम थी एवं मैं अकेला था इसलिए मैंने रात को चोरी का रास्ता चुना और इस से प्राप्त धन को समाज में गुप्त दान द्वारा खर्च करना शुरू किया।

साधु : चोर से तुम्हें कुछ और कहना है?
चोर : यह व्यापारी सबकी थोड़े-थोड़े धन की चोरी करके ही बड़े बने हैं, लेकिन यह आसानी से खड़े हैं और यह नगर के वरिष्ठ व्यक्ति भी लूट की व्यवस्था रोकने में नाकाम रहे, समाज में धन के विभाजन को चुस्त-दुरुस्त नहीं रख पाए और यह सब मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देख रहे हैं, जो कभी-कभी ही चोरी करता है और उसके बाद वह धन बांट देता है।

साधु : नगर प्रबंधकों से, क्या आपको ज्ञात है कि यह व्यापारी बंधु तयशुदा कीमत से ज्यादा वसूलते हैं और यह कि यह प्रक्रिया कब से चल रही है?
व्यापारी : साधु से, इस प्रश्न का मेरे यहां हुई चोरी से कोई संबंध नहीं है, चोर सामने खड़ा है उसने चोरी कबूल कर ली है, आप उसे कठोर से कठोर दंड दीजिये, जिससे समाज में भय व्याप्त रहे, कोई दूसरा चोर इस तरह की चोरी करने की हिम्मत ना करें?

साधु : व्यापारी से, संबंध है एवं गहरा संबंध है, मुझे प्रश्न पूछने दो एवं कोई बीच में बाधा ना दे,
नगर प्रबंधक : यह पक्का है कि यह व्यापारी बंधु तयशुदा कीमत से ज्यादा वसूलते हैं और इनके व्यापार करने की शुरुआती दौर के बाद इनके द्वारा ज्यादा पैसा वसूलने की प्रक्रिया जारी है।

साधु : नगर प्रबंधकों से, आपके क्षेत्र में खुलेआम लूट चल रही है, आपने इसे रोकने के लिए क्या कदम उठाये?

नगर प्रबंधक : सुनते आए हैं कि, बहुत पहले कहते थे कि ज्ञान-ध्यान सही है, अध्ययन-अनुसंधान ही शक्ति है, और ध्यान सही है, ज्ञान सही है, ज्ञानी सही है, उसके बाद जमाना आया जिसमें कहा जाने लगा कि शक्ति ही शक्ति है, ताकत ही सही है एवं आज के युग में कहा जाता है, मुनाफा सही है एवं धोखा देना ताकत है, इसलिए समझ नहीं आता कि व्यापारी को क्या कहें और किस आधार पर कहें,

काफी जगहों पर तो शिक्षा, स्वास्थ्य का व्यापार चलता है, लोग तो इस चोरी का मुकदमा भी मुफ्त नहीं करते, चोर एवं व्यापारी दोनों को इसके लिए पैसे खर्च करने पड़ते है, लोग तो दूसरों के दुख में, पीड़ा में, सुख एवं पैसे लेने लगे हैं, समझ नहीं आता क्या कहे, कम से कम यह व्यापारी दूसरे के अज्ञान,अस्वस्थता का फायदा तो नहीं उठाता?

साधु : नगर के जवानों से, आप नगर के भविष्य हो, आपको इस चोर, व्यापारी, इनकिं कर्तव्य विमूढ़ वरिष्ठ एवं तथाकथित इज्जतदार नगर प्रबंधकों के बारे में क्या कहना है?

जवान : हालाकिं यह दोनों हमारे ही नगर के हैं, लेकिन यह दोनों मुख्य रूप से एवं नगर प्रबंधन से जुड़े हुए सभी सदस्य आज की स्थिति के लिए जिम्मेदार है, जिसका खामियाजा हम युवाओं को भी बेरोजगारी के रूप में झेलना पड़ता है।

साधु : व्यापारी से, क्या तुम अपने व्यापार में तयशुदा कीमत से ज्यादा पैसे लेते हो, क्या अलग-अलग ग्राहक से अलग-अलग तरह का मुनाफा लेते हो और यदि ऐसा है तो अतिरिक्त कमाए हुए पैसे का क्या करते हो?

व्यापारी : इस प्रश्न का मेरे यहां चोरी से, कोई ताल्लुकात नहीं है, जिसके लिए हम यहां एकत्रित हुए हैं।

साधु : ताल्लुक है, अगर अतिरिक्त पैसा नहीं होता तो यह चोर आता भी तो, इसे धन कैसे मिलता? इसलिए यह जानना बहुत जरूरी है कि तुम्हारे पास यह धन कैसे इकठ्ठा हुआ, क्या तुम किसानों एवं आदिवासियों को उनके उत्पाद का भी कम मूल्य देते हो?

व्यापारी : नहीं इस जानकारी का कि मेरे पास धन कैसे इकट्ठा हुआ इस चोरी के मुकदमे से कोई मतलब नहीं है, मुझे न्याय दीजिए यह चोर है, इसने चोरी कबूल भी कर ली है इसे सजा दीजिए बस आपका काम इतना ही है।

साधु : जवानों से, इन्हें जिसने चोरी की है एवं इन व्यापारी को जब तक यह व्यापारी जानकारी देने के लिए हां ना कहें, अपनी निगरानी में रखो।

व्यापारी : यह सुनकर व्यापारी घबराए हुये बोला कि यह सही है, कि मैं तयशुदा कीमत से ज्यादा पैसा लेता हूं, अलग ग्राहक से अलग-अलग मुनाफा/कीमत लेता हूं, लेकिन यह तो व्यापार है, कीमत या मुनाफा तो बाजार निर्धारित करता है और यह समाज के क्रय विक्रय के समय एवं आवक-जावक पर निर्भर करती है एवं ग्राहक जो हमेशा खरीदता है, ज्यादा खरीदता है, या नया खरीददार आता है उसे हम कम दाम में बेचते हैं, इसके अतिरिक्त मेरा यही कहना है कि मेरे पास जो पैसा है वह मैंने अपनी मेहनत एवं अकल से कमाया है, यह मेरा ही है किसी दूसरे को देने के लिए मैं मेहनत नहीं करता, कहते हैं साम्यवाद में स्वार्थ सिद्धि नहीं थी इसलिए वह असफल हुई और पूंजीवाद रहा इसके अतिरिक्त मेरे पास दूसरे न्यायालय में भी जाने का रास्ता है।

साधु : सब की बात सुनने के बाद जवानों से, तुम्हें क्या लगता है कि चोरी में चोर के अतिरिक्त आप सभी किसी ना किसी रूप से भागीदार हो एवं क्या सभी को कुछ कम या ज्यादा दंड मिलना जरूरी है, अंत में सभी से एक फिर पूछना चाहूंगा कि किसी को कुछ और कहना है तो कह दे।

सभी एक साथ : पर्याप्त है एवं जवानों ने कहा जैसा आप उचित समझे।

साधु : अब आप सभी ध्यान से सुने समाज के लिए जरूरी है कि :-

1) ऐसी व्यवस्था हो, जिससे यह चोर चोरी करने लायक ना रहे एवं यह व्यापारी तय मुनाफा से ज्यादा धन इकट्ठा करने के बारे में ना सोचें, वैसे तो न्याय व्यवस्था के तहत इस चोर के एवं व्यापारी के हाथ काँट देनें चाहिए, लेकिन यदि इन्हें अपाहिज करेंगे तो इन्हें जिंदगी भर बिठाकर खिलाना पड़ेगा।

2) चोरी के सबूत चोर के एवं व्यापारी के दोनों के हैं।

3) नगर प्रबंधन में सामंजस्य, संवाद की कमी है जिससे वह समाज को सही दिशा-निर्देश एवं सामाजिक सुरक्षा तथा व्यवस्था देने में असफल सिद्ध हुआ है।

4) जवान दिशा विहीन है एवं यह चिंता की बात है।

5) किसानों एवं आदिवासियों से लूट या उनका उत्पाद कम मूल्य पर खरीदनें की, निम्न आय वर्ग से ज्यादा मुनाफा लेंने की एवं उच्च वर्ग को रियायत देने की घटनाएं दिखाई देती है अथवा आर्थिक रूप से समाज में काफी विषमता है, यह अच्छा है कि इस मामले में यह पहला एवं अंतिम न्यायालय आप सभी ने स्वीकारा एवं हम सब ने अपनी बात सीधे-सीधे बिना किसी मध्यस्थता के बिना किसी दखलंदाजी के कही, समाज के लिए न्याय है न्याय के लिए समाज नहीं।

6) अर्थशास्त्र सिर्फ मांग एवं आपूर्ति नहीं है, अर्थशास्त्र पूरी पृथ्वी का, अर्थ-पैसा कमाने का एवं पैसे कमाने के तरीके एवं उसके मायने उसके मूल्यों का शास्त्र है, जो किसी वस्तु या सेवा का मूल्य निर्धारित करती है मूल्यहीन या मूल्यवान बनाती है या अमूल्य बनाती है।

7) साम्यवाद के असफल होने में स्वार्थ सिद्धि की पूर्ति ना होना एक कारण रहा, लेकिन साम्यवाद देश का नेतृत्व एवं वहां की जनता भी यही मानती रही एवं आज भी यही मानती है कि जीवन में पैसा ही मूल्यवान है, जब कि जीवन को मूल्यवान बनाने में पैसा एक माध्यम है, स्वार्थ-स्व+अर्थ एक छोटा विषय नहीं है, इसमें परिवार समाज एवं संसार सभी समा सकते हैं।

8) आज के युग में सभी की सभी आर्थिक परिभाषाएं-आपसी लेन देन से लेकर सबसे नवीन नियोक्लासिकल इकोनामिक थ्योरी तक असफल सिद्ध हुई है, जरूरत है इस विषय पर अनुसंधान करने की।

9) समाज में न्याय व्यवस्था एवं शासन प्रशासन की व्यवस्था गड़बड़ाई हुई जो चिंता का विषय है, जरूरत है समाज की बातें समाज ही तय करें एवं नियंत्रित करें इस विषय पर भी अनुसंधान की आवश्यकता है।

10) न्याय का काम बदला लेना नहीं है, ना ही डर पैदा करना, बल्कि नयापन देने का है, न्याय अगर डर पैदा करेगा तो समाज के सभी अंग डरपोक हो जाएंगे, डरपोकों से समाज कैसे चलेगा?

11) न्याय जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी देना जरूरी है, उसके लिए गुप्तचर की मदद, समाज के वरिष्ठ नागरिक जो अन्य आश्रमो में है से सलाह मशविरा, जूरी पंच बहुत आवश्यक है एवं न्याय हमेशा मुफ्त या सहज होना चाहिए। आदिवासी समाज में आज भी आप देख सकते हैं कि जिन दिनों मुखियाँ न्याय करता है, उस दौरान किसी भी पक्ष के यहां खाना, पानी, पैसा कुछ भी ग्रहण नहीं करता।

12) अब अंतिम बात यह है की यह चोर चार महीने तक नगर के जवानों के साथ चौकीदारी का काम करेगा, दूसरा नगर में कितने लोग ऐसे हैं जो इस व्यापारी की तरह व्यवहार करते हैं उनकी सूची नगर प्रबंधन को सौंपेगा। दों माह के अंदर नगर प्रबंधन, चोर द्वारा दी गई सूची पर संवाद करेंगे एवं संबंधित व्यक्तियों से सुधरने का आग्रह करेंगे, हम आप सभी मिलकर शारीरिक श्रम एवं व्यापारी के पिछले पाँच वर्षों में जो अतिरिक्त धन कमाया है वह मिलाकर एक नए सरोवर का निर्माण करेंगे, क्योंकि इस क्षेत्र में पानी की बहुत दिक्कत है, जवानों की जिम्मेदारी है कि व्यापारी, व्यापारी का परिवार, चोर के परिवार की सुरक्षा बनी रहे यह न्याय नगर प्रबंधन की सहूलियत से एक महीने के अंदर शुरू किया जा सकता है।

न्याय व्यवस्था के बारे में उपरोक्त दृष्टांत भर है इस विषय पर गंभीर चर्चा जरूरी है।***

परिशिष्ट-9.9

समाज में अश्लील व्यवहार एवं बलात्कारों में बृद्धि

प्रश्न: आज लड़कियों, बच्चों एवं स्त्रियों के साथ अश्लील व्यवहार बढ़ गया है इसके साथ-साथ बुजुर्गों का भी सम्मान कम हुआ है, आज के समाज में यह एक बहुत बड़े दाग के रूप में उभर रहा है, व्यक्तियों के बीच, स्त्री-पुरुषों के मध्य-क्षमताओं को लेकर भी भेद की स्त्रियां कमजोर है, कामोत्तेजक है, दया के पात्र हैं, या फिर बाधा है-पुरुषों एवं समाज के विकास के मार्ग मे। और कहीं-कहीं इसके विपरीत की स्त्रियों पूजनीय है ज्यादा व्यापक पैमाने पर दिखाई देने लगा है-प्रसारित होने लगा है-ऐसे में समाज का आधा हिस्सा या इससे ज्यादा अलग अलग करके देखा जायेगा, व्यावहारित किया जायेगा-तब स्वस्थ, सुखी परिवार, समाज कैसे संभव है?

उत्तर: आज जैसी स्थिति स्त्रियों के साथ, बच्चों के साथ, बुजुर्गों के साथ है, एवं प्रचारित की जा रही है, एवं वास्तव में हममें से प्रत्येक लड़का-लड़की, स्त्री-पुरुष, माता-पिता वेचारे नजर आते हैं एक-दूसरे के दोषी नजर आते है और ऐसी स्थिति में यकीनन व्यक्ति, परिवार, समाज और इससे बनने वाली सरकार एवं तथाकथित सभी धर्म के मानने वाले, अनुयायी स्वस्थ, सुखी नहीं कहे जा सकते, पवित्र तो बहुत दूर की बात है। अब अगर कहे की समस्या है, तो समस्या के कारण भी होंगे-और कारण है तो निवारण होंगे, निवारण है तो उनको यथार्थ में लाने से समस्या का निराकरण हो ही जायेगा।

एक घटना आती है जिसमे एक सर्वे के तहत-एक व्यक्ति भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र, बस्तर एवं छोटा नागपुर के आदिवासियों के पास यह प्रश्न लेकर गये की, इस क्षेत्र में कितने बलात्कार होते हैं? दोनों के मध्य हुआ वार्तालाप निम्न है:
प्रश्न (सर्वेयर):- इस क्षेत्र में कितने बलात्कार होते हैं?

उत्तर (आदिवासी) :- यह बलात्कार क्या होता है?

सर्वेयर :- बलात्कार-बलात्कार होता है।

आदिवासी :- मतलब बलपूर्वक कोई गलत कार्य जैसे किसी की जमीन हड़प लेना, किसी का खाना, धन इत्यादि छीन लेना।

सर्वेयर :- नहीं-नहीं यह नहीं, जबरदस्ती सेक्स करना।

आदिवासी :- जबरदस्ती सेक्स, यह क्यों? क्या आपके क्षेत्र में आराम से सेक्स संभव नहीं है।

सर्वेयर: आपसे पूछा है कि आपके यहाँ कितने जबरदस्ती के सेक्स की घटनाएं होती है।

आदिवासी: में वही तो कह रहा हूँ कि जबरदस्ती क्यों, क्या इसके लिए भी जबरदस्ती की जाती है?

सर्वेयर: नहीं, नहीं आराम से उपलब्धता तो है लेकिन तब भी कुछ घटनाएं जबरदस्ती की आती है?

आदिवासी: अच्छा, अच्छा तो क्या आपके यहाँ पुरुषों एवं स्त्रियो की संख्या का अनुपात ठीक नहीं है, अच्छा तो यह बताइये की कौन जबरदस्ती करता है पुरुष या स्त्रियाँ?

सर्वेयर: नहीं, नहीं पुरुषों एवं स्त्रियों का अनुपात में थोड़ा अंतर है लेकिन यह कारण नहीं है बलात्कार का, इसके अतिरिक्त पुरुष ही जबरदस्ती करता है स्त्रियों को जबरदस्ती करते नहीं सुना, वह कैसे करेगी? स्त्रियाँ तो पुरुषों से कमजोर होती है।

आदिवासी: सामान्यतः अगर सौ लड़कियां पैदा होती है तो एक सौ ग्यारह लड़के पैदा होते हैं-जो बारह तेरह की उम्र तक बराबर हो जाते हैं, सौ लड़कियां और सौ लड़के। समान्तयः लड़कियां ज्यादा ताकतवर कही जाती है इसलिए वह सौ में सौ बच जाती है और लड़के कमजोर, इसलिए लड़कों में कुछ बचपन में मर जाते हैं और किशोरावस्था तक लड़के लड़कियां बराबर हो जाती है। जीवन शक्ति के हिसाब से तो स्त्रियां ही ज्यादा ताकतवर होती है-तब आप जो कह रहे हैं कि स्त्रियां कमजोर होती है, और पुरुष ताकतवर है यह उचित प्रतीत नहीं होती।

क्या आपके समाज में स्त्रियों को कमजोर माना जाता है, या कमजोर बनाया जाता है, वैसे तो लड़का लड़की में भेद, एक स्त्री पुरुष में भेद, कम समझ का या अज्ञानता का एवं प्रकृति पर अविश्वास का द्योतक है-क्या आपके यहां ऐसी सोच विद्यमान है कि लड़कियां लड़कों से कमतर हैं?

सर्वेयर: आप जो कह रहे हैं उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि भगवान भी पुरुष दिखाई देते हैं जैसे गौतम बुद्ध, महावीर जैन, जीसस एवं उनके दूतों में भी पैगंबरओं में भी किसी स्त्री को नहीं सुना जैसे पैगंबर साहब और तमाम देशों में उनके अपने बुध्द, गुरु इत्यादि तब यह तो स्वाभाविक है कि प्रकृति ने पुरुषों को ज्यादा शक्ति दी है।

आदिवासी: आप जो कह रहे हैं हैं वह तो दिखाई देता है, क्या यही आपके समाज में विकृति का कारण तो नहीं है-जब आपके यहाँ धर्मगत भी ऐसी सोच है तब तो समस्या होगी ही। वैसे यहूदियों में तो सूर्य की, अग्नि की पूजा करते हैं-हिंदुओं में तो सीताराम, राधाकृष्ण, गौरीशंकर, लक्ष्मी नारायण की पूजा होती है, यहां तो स्त्रियों का नाम पहले आता है, क्या इन समाजों में भी यह व्याप्त है कि स्त्रियां कमजोर है, क्या इन धर्म को मानने वाले समाजों में भी ऐसी सोच है कि स्त्रियां कमजोर है?

सर्वेयर: नहीं-नहीं आप गलत अर्थ निकाल लिये। बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम को मानने वाले दोनों ही स्त्री-पुरुष है जैसे यहूदियों, पारसियों एवं हिंदुओं में है। लेकिन क्या है कि धर्म के प्रचार में, मिशन का काम पुरुष बाह्यगामी होने के कारण आसानी से कर सकता है और स्त्रियों को थोड़ी दिक्कत होती है, यह धर्म की ही बात नहीं है आप बहुत से सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों में भी देख सकते हैं कि या तो पुरुष प्रमुख/मुख्य है या स्त्री, स्त्री-पुरुष दोनों नहीं है-पूरा परिवार नहीं है।

आदिवासी :- धर्म का प्रचार क्यों करना, धर्म के प्रचार को एक मिशन, एक उद्देश्य क्यों बनाना, प्रचार करने से तो गलत चीज भी सही प्रतीत होती है, और सामान्यतः तो गलत चीज को या चीजों को जबरदस्ती थोपने, या बेचने के लिए ही प्रचार किया जाता है या जरूरी हो जाता है। क्या यही प्रचार-प्रसार तो जिम्मेदार नहीं है यह दिखाने के लिए कि स्त्रियाँ पुरुषों से कमजोर होती हैं, इसलिए वह बलात्कार की योग्य है, दया की पात्र है?

आपने कहा कि कुछ सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन भी जिनमें सिर्फ पुरुष ही हैं तब तो यह बात राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से भी आप स्थापित कर रहे हैं कि स्त्रियां कमजोर होती है, मार्ग में बाधक होती है एवं बच्चे होने से उद्देश्य की पूर्ति में-मिशन के कार्य में बाधा होती हैं-तब ऐसे में आपके समाज में बाधा आना स्वाभाविक है।
जब कोई व्यक्ति नैसर्गिक कार्य में बाधा डालता है तो विकृति आती है। जब आपका समाज ही सेक्स को जो रोक ले वह महान बन जाये, इस बात को स्वीकारने लगेगा तो पूरे समाज में दिक्कत आयेगी ही, जब चीजें समान रूप से बाधित होती है तो असामान्य रास्ता खोजती है-क्या यही कारण तो नहीं आपके समाज में बलात्कार का एवं इससे जुड़ी हुई घटनाओं का।

आपके आस्था के केंद्रो पर जो अश्लील घटनाएं हो जाती है, वह इसी रोक, वह इसी सोच का नतीजा है। तर्क तो कहता है कि सार्वजनिक जीवन में वही (स्त्री या-पुरुष) भाग ले, जिसकी सेक्स की, पैसे की भूख खत्म हो गयी है, जो शादी-शुदा हो और जिसनें जीवन देखा हो। जीवन भर ब्रम्हचारी उन माता-पिता का, प्रकृति का असम्मान है जिन्होंने इन तथाकथित ब्रह्मचारियों को पैदा किया है और ब्रह्मचारी बनाने की प्रथा-व्यवस्था को प्रोत्साहित किया है। यह प्रथा अच्छी नहीं कही जा सकती-कोई विरला-कोई निराला ही हो सकता है जिसमें स्वत: ब्रह्मचर्य हो।

जीवन भर सेक्स से दूर रखना किसी को नंदी से बैल बनाने की प्रक्रिया कहा जा सकता है-जिसका परिणाम घातक होता है-गुलामी इसकी अगली कड़ी होती है। इसको दूसरे शब्दों में कहे कि यदि भगवान की इच्छा इन्हे सेक्स से दूर रखने की होती है तब वह इन तथाकथित मानसिक पागलपन या ताकत की वजह से बनाए हुए ब्रह्मचारियों को पहले ही से तृतीय वर्ग (ब्रम्हनाल) का बनाती-जो अपने आप में भगवान के प्यारे होते है-वह इन्हे स्त्री या पुरुष नही बनाती।

सर्वेयर :- आपकी बात ठीक लगती है-आपके हिसाब से हमारे समाज में बलात्कार की घटनाओं पर कैसे रोक लगेगी या कैसे बंद होगी?
आदिवासी :- आसान है, हमारे आदिवासी समाज में कोई गलत घटना होती है-तो शिकायतकर्ता समाज के बुजुर्ग के पास जाता है, फिर बहुत सारे बैठते हैं-सबकी सुनते हैं आपस में चर्चा करते हैं-फिर

समझाना हुआ समझाया, सजा देनी हुयी सजा दी, एक सप्ताह में शिकायतकर्ता की शिकायत दूर हो जाती है-और सजायाफ्ता भी सजा से सुधर जाता है, बहुत बड़ी सजा या समाज बाहर करने की घटना या सजा के रूप में मौत सामान्यतः नहीं ही होती है। आप न्याय व्यवस्था से चीजें ठीक कर सकने की शुरुआत कर सकते हैं।

सर्वेयर :- हमारे समाज में तो न्याय में बहुत समय लगता है।
आदिवासी :- तब आपके समाज का भगवान ही मालिक है-आप जाओ यह सर्वे छोड़ो अपने समाज को ठीक करो चर्चा करो एवं नतीजे पर कार्य करो। कार्य करोगे तो संभव है आप भी आदिवासियों की तरह प्रसन्न रह सकते हो-भगवान आपको हिम्मत दे। ***

परिशष्ट-9.10

<u>ऊर्जा की उपलब्धता</u>

प्रश्न: आपने समाज के चालन-प्रचालन के संबंध में बहुत सारे विषयों पर सारगर्भित बातें कही लेकिन हम सभी यह महसूस करते हैं कि इन सभी के चालन के लिए ऊर्जा की आवश्यकता प्राथमिक है, कहते हैं विकास उतना ही होता है जितनी ऊर्जा है, या जिस पैमाने से ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ती है देश एवं दुनिया में उतना ही विकास होता है, आपका क्या कहना है?

उत्तर: भारत में (एवं पूरी दुनिया में भी) ऊर्जा के अतिरेक को बहते हुए जल कलश के रूप में पूजा है एवं ऊर्जा के अपव्यय को कोसा है और ऊर्जा के सम्यक उपयोग या सहयोग को सराहा है। (Optimum use and minimum waste) - दिये गये ऊर्जा के स्त्रोत का अधिकतम इस्तेमाल एवं न्यूनतम अपव्यय-भारत जैसे देशों का मूल मंत्र रहा, ना कि ऊर्जा की बचत (Energy saved is energy produced) ही ऊर्जा की पैदावार है।

आज ऊर्जा सुरक्षा के नाम पर पेट्रोलियम पदार्थो के उपयोग एवं बिजली के उपभोग से एक ऐसी स्थिति खड़ी हो गई है कि अगर चार-पाँच सौ करोड़ इंसानो को भी प्रभावित करना है, परेशान करना है या ख़त्म ही करना है तो बिजली एवं पेट्रोलियम पदार्थो की आपूर्ति को लंबे समय के लिए बाधित कर दो।

बिजली एवं पेट्रोलियम पदार्थो के बढते प्रयोग से धरती के अंदर एवं बाहर का तापमान बढा है, इस बढ़ती ऊर्जा के वातानुकूलन प्रभाव द्वारा कही अत्यन्त गर्मी तो कही भीषण सर्दी एवं कहीं बर्फवारी

बढी है, इसके अतिरिक्त भूकंपो, तूफानों, बे-मौसम वर्षा, पहाड़ खिसकने एवं जमीन धँसने की घटनाएँ भी बढती जा रही हो तब, ऐसे में इस बात के प्रयास जरुरी है की उर्जा के क्षेत्र मे गतिशील एवं लयबध्द संतुलन कैसे बना रहे?

ऐसे में हम कह सह सकते हैं की भारत के वैज्ञानिक परमहंस तिवारी (tewari.org) द्‌वारा अन्वेषित तिवारी रिएक्शन लेस जनरेटर के व्यापक प्रयोग एवं उपयोग से (ऊर्जा संतुलन में) जरूर मदद मिलेगी?

इस विषय पर निम्न प्रस्तुत है :-

1). भारत एवं भारत जैसे जलवायु के अधिकांश देश जंगलों से हमेशा आच्छादित रहे हैं, जलाने के लिए लकड़ी हमेशा इतनी रही है कि ऊर्जा के बारे में विचार ही नहीं आया। ऊर्जा की चर्चा तो वहाँ थी जहाँ रेगिस्तान है (सूर्य की गर्मी है इसके कारण-दिन में रेत की गर्मी और रात्रि में सर्दी) या जहाँ बर्फ है और वर्ष के अधिकांश दिनों में जीना मुश्किल हो अगर ऊर्जा ना हो।

बिजली एवं पेट्रोल की खोज के पहले पूरी धरती पर इंसानों की आबादी का एक अधिकतम स्तर था, लेकिन आज जब रेगिस्तान में, बर्फीले इलाके में, बिना प्राकृतिक हवा, रोशनी के,डब्बे जैसे कमरे में (घरों में) रहना संभव हुआ इंसानों की जनसंख्या मक्खी-मच्छर जैसे पनपने लगी है एवं इस पनपती हुई इंसानों की आबादी ने कृत्रिम उर्जा पेट्रोल एवं बिजली की आवश्यकता को और बढ़ा दिया है-और एक-दूसरे को ताकत देते हुए जनसंख्या एवं ऊर्जा (बिजली एवं पेट्रोल) की आवश्यकता बढ़ी जा रही है। आज हर वनस्पति से पेट्रोल-डीजल एवं हर संभव तरीके से (हवा, पानी, सूर्य की रोशनी, कोयला, नाभिकीय) से विद्‌युत बनाने की कोशिश चल रही है या चलती हुई-दिखाई दे रही है।

इसी के साथ विकास की दौड़ में, ऊर्जा के क्षेत्र में ऐसे उत्पादों की आवश्यकता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है-जो कम समय में बहुत अधिक ऊर्जा प्रदान करें-जैसे तरल हाइड्रोजन, कार्बन

डाइऑक्साइड, नाभिकीय अस्त्र-शस्त्र, बारूद और इसके साथ ही ऐसी विधियाँ जो इन्हें तरल रखने के लिए शीतलन (क्रायोजेनिक) के रूप में आवश्यक हो।

2). उपरोक्त वास्तविकता का एक पक्ष है जो प्रस्तुत किया जाता है एवं किया जा रहा है। वास्तविकता का दूसरा पक्ष यह है कि ऊर्जा का विकास जिस दर या अनुपात में हो रहा है-हमारा सामूहिक विनाश उसी दर याअनुपात में बढ़ रहा है-हो रहा है।

ऊर्जा के स्रोतों को खोजने मे, आवश्यकताओं के प्रचार-प्रसार मे, सत्ता के गलियारों में अपने सलाहकारों की नियुक्ति कराकर उनके द्वारा विकास का एक आकर्षक मॉडल प्रस्तुत करवाना जैसे प्रत्येक अमेरिकन का सपना एक घर, एक कार, एक गन-बंदूक, एक घर हो, और प्रत्येक अमेरिकन के घर में एसी, एयर कंडीशनर हो, अच्छा टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, डिशवॉशर, वाईफाई एवं एक अच्छी कार हो, यदि यह सब है तो घर घर है नहीं तो घर बेघर है सा बेकार है ।

ऐसा ही भारत जैसे देशों में एक सपने को प्रचारित कराया गया की एक देश तभी उन्नत कहलायेगा जब उसके यहां पर्याप्त बिजली, पर्याप्त परिवहन एवं पर्याप्त सड़क हो एवं पर्याप्त का पैमाना विकास की दर के हिसाब से बड़े। जहाँ गावों में हर घर में ट्रैक्टर और मोटर साइकिल हो तभी वहां का किसान, किसान कहलायेगा नहीं तो वह मजबूर है एवं सिर्फ मजदूर है । दुनिया में सब मोबाइल से एवं सब के पास मोबाइल हो यदि यह विकास का पैमाना रहेगा तब एक अंतहीन दौड़ में दौड़ते-दौड़ते इंसान एक चींटी की तरह ही अंत को प्राप्त होगा, जो चलते- चलते ही मर जाती है।

इस अंतहीन एवं फैलते हुये विकास में ऊर्जा की खपत एवं इससे उत्पन्न ऊष्मा इतनी बढ़ गयी है कि पूरी धरती गरम हो गई है, हिमालय एवं आर्कटिक में बर्फ पिघलने लगी है एवं पर्यावरण परिवर्तित होने लगा है। प्रकृति में जल-वायु-अग्नि, खाली स्थान एवं भौतिक के अनुपातिक संबंधों में उतार-चढ़ाव की गति तीव्र होने से सभी प्राणियों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है, वनस्पतियां बर्बाद हो रही हैं और जंगल सुकड़ रहे हैं जिसके कारण जल जमीन एवं वायु में प्रदूषण परिलक्षित हो रहा है।

3). ऊर्जा के व्यापार में संलग्न संस्थाये ने इतना धन एवं अपना स्वयं का तन-मन इसके लिए समर्पण कर रखा है कि ऊर्जा के उपयोग में कमी या कमी की आशंका से ही उनका दिल घबरा जाता है। ऐसे में कोयले से चलने वाली विद्युत इकाइयों, इन विद्युत इकाइयों को बनाने वाले (टरबाइन, जनरेटर, बायलर) उपकरणों को बनाने वाली संस्थाये, इसमें लगने वाले कोयले की खदानों के मालिक, कोयले के उत्खनन में लगने वाले उपकरणों को बनाने वाली कंपनियां, कोयले की विद्युत इकाइयों से निकलने वाली राख, राख से बनने वाले सीमेंट बनाने के कारखाने, इस कारखाने को बनाने वाली कंपनियाँ, बिजली के पारेषण करने की कंपनियाँ एवं बिजली से चलने वाली मशीनों एवं उन मशीनों को बनाने वाली मशीनों के कंपनियो एवं उनसे जुड़े कर्मचारी व मालिक-मालकिन का ऐसा मकड़ी जाल फैला हुआ है कि बाहर खड़े हुए आम आदमी को समझ ही नहीं आता कि इसका क्या करें, एवं मकड़जाल के अंदर के लोगों को डर लगता है कि यह मकड़जाल है तो नौकरी सुरक्षित, धंधा सुरक्षित है, यह सुरक्षित है तो हमारी मालकियत सुरक्षित है।

जैसे कोयले से बिजली की श्रृंखला है वैसे ही, हवा से बिजली, तेल से बिजली, पानी से, परमाणु से बिजली बनाने वाली संस्थाओं का जाल फैला हुआ है। इन सभी कंपनियों का अलग-अलग भी समूह है और सभी कंपनियों का मिला जुला भी एक मंच हैं जो कतई यह बर्दाश्त नहीं करता कि कोई उनके मार्ग में रुकावट आये फिर चाहे वह सबसे ताकतवर लोकतांत्रिक देश का राष्ट्रपति हो वहाँ कि सीनेट हो या वह सबसे बड़े लोकतंत्र का प्रधानमंत्री हो और वहाँ की संसद ही क्यों न हो-यदि ऐसा होता है तब वह इन्हें बदलने के लिए प्रचार तंत्र द्वारा गड़बड़ियां फैलाकर एवं विरोधी दलों को अपना प्रचार प्रसार करने के लिए धन देकर अपने प्रयासों को बल देते हैं।

ऊर्जा के क्षेत्र में जुडी हुयी बहुराष्ट्रीय कंपनी आतंक फैलाने के लिए-धर्म के नाम पर, क्षेत्रीयता के नाम पर, धन दे कर बहुत से देशों मे अस्थिरता भी लाती है जिससे वहाँ खनिज दोहन आराम से किया जा सके।

सामान्यतः सत्तारूढ़ तत्कालीन राजनीतिक दल समझौता कर ही लेता है और बदलने का अवसर पाँच दस वर्ष तक नहीं आता। बाकि छोटे देश तो पहले ही ताश के पत्तों की तरह ढह गये हैं -एवं इन ऊर्जा

के मालिकों के रहमो-कर्म पर चल रहे हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति, परिवार एवं समाज ही स्थिति ठीक कर सकता है, सरकारों के बस में नहीं है।

4). सूर्य धरती पर लगातार ऊर्जा दे रहा है जो बिजली के रूप में देखे तो लाखों मेगावाट या करोड़ किलोवाट में है-यह ऊर्जा मिट्टी-पानी को भी गर्म करती है। सिर्फ वनस्पति पेड़-पौधे ही ऐसे हैं जो इस ऊर्जा को सोख लेते हैं-एवं पानी तथा गर्म गैस कार्बन डाइऑक्साइड से मिलकर अपना भोजन बनाती है-प्राणी जगत को भोजन प्रदान करती है तथा हरियाली के द्वारा पृथ्वी का तापमान ठीक रखती है।

कहते है-कि व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक, मानसिक एवं भावनात्मक उर्जा की जरुरत यदि हम प्रति व्यक्ति बारह तरह के वृक्ष एवं व्यक्तियों के समूह के लिए प्रति सात एकड़ में एक पीपल, एक बरगद एवं एक नीम का पेड़ लगाकर पूरी कर सकते है। ऐसा करने से रोजगार की समस्या से निजात पाने में भी सहयोग मिलेगा।

इसके अतिरिक्त एक बहुत ही सामान्य आकलन से यह कहा जा सकता है-जितने जगह में सोलर पैनल लगे हैं-वहाँ पेड़ लगा दो एवं दस वर्ष में देखोगे तो सोलर पैनल से पैदा हुई ऊर्जा निश्चित रूप से पेड़ों द्वारा प्रदत्त लकड़ियों को जलाने से निकली ऊर्जा से कम ही होती है। लकड़ी का चूल्हा एवं कोयले की सिगड़ी सदियों से सभी का सहारा रही है-वह कैसे अस्वास्थ्यकर हो सकती है।

5). हमारे स्वस्थ-सुखद जीवन के लिए यह जरूरी है सिर्फ सरकार के भरोसे ही ना बैठे, सरकारों को भी सकारात्मकरवैया अपनाने के लिए कहें एवं स्वयं प्रकृति परस्त रवैया अपनाकर शुरू करें जैसे:

i. जहाँ तक संभव हो अपने हाथ-पैर एवं दिल-दिमाग लगाकर काम करें(बिजली एवं पेट्रोल का प्रयोग कम करे) जैसे अपना खाना, फसल बिना मशीन के पैदा करें-बिना मशीन के उन्हें साफ करेंएवं खाने योग्य बनाये-फिर अपने द्वारा लगाए गए वृक्षों से प्राप्त सूखी लकड़ियों की आग से पकाएं एवं आरामदायक स्थिति में अपने हाथ से ही खाये (भारतीय परिपेक्ष में कहे तो खेती, खुरपी, चट्टी-चर्खा,

चौका-चूल्हा, चौपाल पर चिलम एवं चिलम पर चर्चा) जिससे एक और खालीपन की शिकायत नहीं रहेगी, दूसरीओर ठीक रहने के लिए जबरदस्ती की दौड़, पार्क में घूमना, मशीनों के साथ कुश्ती करने की जरूरत नहीं रहेगी, स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक खाना मिलेगा एवं पैसे की आवश्यकता कम हो जायेगी और चाहे तो इससे पैसा भी कमा लो या दूसरे की मदद भी कर दे।

ii. सरकार सिर्फ इतना करें कि व्यक्ति, परिवार एवं समाज के कार्य में बाधा न बने, सहयोग दे सके तो और भी अच्छा, जैसे समाज में कोयले की आपूर्ति उसी कीमत पर कराये जिस कीमत पर कोयले से चलने वाले विद्युत कंपनियाँ खरीदती है। इसके अतिरिक्त समाज के ऊपर विकास के नाम से विनाश की वस्तुएं ना ही थोपें, ना ही अपनी ओर से प्रचारित करें, प्रोत्साहित करें एवं संरक्षित करें- क्योंकि यदि स्थिति ठीक होनी है तो गलत कार्य करने वालों का विनाश एवं सज्जनों का उत्थान आवश्यक है।

iii. कुछ का कहना है कि पानी के बड़े बांध बनाने से पहाड़ खिसकने की घटनाएं, केरल में आयी बाढ़ जैसा खतरा, बड़े-बड़े हवा के टरबाइन से ध्वनि प्रदूषण एवं पशु-पक्षियों, मछलियों को दिक्कत है, तो फिर यह ऊर्जा क्यों चाहिए-इतना बड़ा सूर्य चमक तो रहा है-इसके इर्द-गिर्द जीवनशैली बनाने में क्या दिक्कत है?

कहते हैं गुरुत्वाकर्षण बल नीचे खींचता है एवं ऊर्जा आकर्षण बल ऊपर खींचता है। ऊर्जा कमहोगी तो जमीन में मिल जाएंगे ऊर्जा ज्यादा होगी तो जमीन से छूट जाएंगे अतः भगवानसे प्रार्थना है कि पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण एवं आकर्षण बल में सामंजस्य बना रहे। ***

परिशिष्ट-9.11

<u>बीमा एवं नैगमिक सामाजिक जिम्मेदारी (C.S.R)</u>

प्रश्न: बीमा नैगमिक सामाजिक जिम्मेदारी (Corporate Social Responsibility-C.S.R.) के बारे में आपका क्या कहना है?

उत्तर: उपरोक्त प्रश्न के सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रस्तुत है

1). एक प्रतिष्ठान है जो डायनामाइट बनाती है जिससे बम बनते है जो आतंक फैलाने में, कभी कभी उत्सवों मे भी अतिरिक्त आवाज करने के लिए एवं मूलत: शांति बनाये रखने के लिये पुलिस एवं सेना द्वारा रखा जाता है, उपयोग में लाया जाता है इसके अतिरिक्त इसका उपयोग युद्ध में विरोधी सेनाओं को मारने के लिये भी किया जाता है। यह आतंकवादियों द्वारा भी उपयोग मे लाया जाता है।

2. डायनामाइट का प्रयोग कहते है आठवीं शताब्दी मे चीन मे होता था, लेकिन आज के जगत में इसका आविष्कार अल्फ्रेड नोबेल ने किया था। यह वही अल्फ्रेड नोबेल है, कह सकते है जो युद्ध में

मौत को अंजाम देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। और यह वही अल्फ्रेड नोबेल है जिसके डायनामाइट की कमाई के सिर्फ ब्याज से ही आज दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार नोबेल पुरस्कार दिया जाता है। सबसे मजे की बात है यह पुरस्कार तमाम विषयों जैसे भौतिकी, रसायन, चिकित्सा, अर्थशास्त्र में मूल अनुसंधान के साथ-साथ सबसे अच्छे लेखन एवं शांति के लिये भी दिया जाता है। शांति का नोबेल पुरस्कार अधिकांशतया: उन्ही राष्ट्राध्यक्षों-या उन देशों के व्यक्तियों को ही दिये गये है, जो या तो सबसे ज्यादा डायनामाइट इस्तेमाल करते है या जहाँ सबसे ज्यादा डायनामाइट इस्तेमाल होता है।

अल्फ्रेड नोबेल के बारे मे एक किस्सा आता है, की जब वह बीमार थे तो एक बार अखबार में खबर छपी की-मौत के सौदागर की मौत, दुनिया को मौत की नींद मे सुलाने वाला मारा गया, और कहते हैं कि सम्राट अशोक की तरह ही अल्फ्रेड नोबेल का हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने अपनी कमाई से नोबेल पुरस्कार देना शुरू किया जो उनके देहावसान के बाद भी उनके सम्मान में आज भी जारी है।

इस प्रतिष्ठान ने (जो कि इस बात के लिए भी बदनाम हुआ है कि अपने व्यवसाय को जीवित रखने एवं विस्तारित करने के लिए युद्ध एवं विश्व युद्ध का भी आयोजन-प्रायोजन अपने गुप्त प्रतिनिधियों के द्वारा दोनों तरफ के राष्ट्रों एवं सेनाओं को प्रोत्साहित करके उन्हें व्यक्तिगत फायदा देकर कराती है) अपनी फ़ैक्ट्री में पिछले कुछ वर्षों से किसी भी कामगार का बीमा नहीं कराया है।

इस कंपनी के प्रतिनिधि कहते हैं कि प्रारंभ में डायनामाइट बनाते-बनाते वह फट जाता था, जिसके फटने से बहुत से कामगार मर जाते थे, और बम फटने से इमारत या फॅक्टरी की बाहरी दीवार गिर गयी तो फैक्ट्री मे कार्यरत कर्मचारियों के अतिरिक्त बाहरी आदमी भी मर जाते थे। सारा क्षेत्र धमाकों की ध्वनि से परेशान तो रहता ही था।

2) कुछ दूसरे प्रतिनिधि जो बीमा का कार्य करते है, कहते है की बीमा की शुरुवात लगभग इसी समय में ही हुयी-और यह नारा आया-जिंदगी के बाद भी, कंपनी अपने कामगारों का ख्याल रखतीहै। एवं इसी समय नैगमिक, सामाजिक जिम्मेदारी (Corporate Social Responsibility-C.S.R.) का

चलन शुरू हुआ। बीमा एवं सी.एस.आर. सिर्फ उतने ही पुराने है जितना डायमाइट का व्यवसाय और लगभग एक जैसे ही है।

3) डायनामाइट लगाने वाली कंपनी के प्रतिनिधि बताते है की उत्पादन की इस प्रक्रिया जिसमे उत्पादन के दौरान ही डायनामाइट फट जाये, लोग मर जाये, धमाकों से दुखी हो जाये आसपास के लोगों ने इस फैक्ट्री मे काम करना ही बंद कर दिया, जिसके फलस्वरूप कंपनी के प्रबंधन को मजबूरन दो निर्णय लेने पडे - i) कर्मचारियों के मरने पर काफी मुआवजा दिया जाए, उनका व्यक्तिगत बीमा कराया जाए, उनका एवं उनके परिवार के भी अन्य तरह के ख्याल रखें जायें, ii) उत्पादन की प्रक्रिया को ठीक किया जाये उसे बेहतर बनाया जाये।

यह कंपनी अपने उत्पादन की प्रक्रिया में सुधार, अपने कामगारों को सुरक्षित काम करने की शिक्षा-दीक्षा देकर, अपनी फैक्ट्री के आसपास सुरक्षित ढांचागत व्यवस्था बनाकर आज इस मुकाम पर आ गयी है की, इस फॅक्टरी में पिछले बहुत वर्षों से शून्य दुर्घटना दर्ज की गयी और इसे देखते हुए कंपनी ने निर्णय लिया की कंपनी बीमा नहीं करायेगी और यदि दुर्घटना हुई भी तो उतनी राशि सभी संबंधित व्यक्तियों या उनके परिवारों को दे देगी, जितना बीमा कंपनी देती है। कंपनी के प्रतिनिधि बताते है की पिछले कुछ दशकों के रेकॉर्ड के आकलन से यह स्पष्ट है की बीमा कराने में ज्यादा पैसा लगता है-सुरक्षित रहने, सुरक्षित रखने मे कम पैसा लगता है।

4) बीमा कराना, डर की, असुरक्षा की निशानी है-बीमा कराके धन राशि खर्च करना या कराना डर, असुरक्षा की भावना बढ़ाना एवं कंपनी, परिवार, समाज या सरकार में कुशलता या दक्षता ना होने का प्रमाण देना जैसा है। सुरक्षा पर खर्च करना लोगों को शिक्षित, दीक्षित करना, प्यार एवं अपनेपन की भावना बढ़ाना है, खुद की, परिवार की, समाज एवं सरकार की समृद्धि बढ़ाना है।

बीमा कंपनियों का क्या-वह पहले जनता को ड़रायेंगी, बहकायेंगी, फुसलायेंगी, प्रलोभन भरा नारा देंगी- "जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी", हम साहस (दुस्साहस) मे सुरक्षा देते है-हम बीमा करते है, और फिर उस पैसे को अन्य व्यापारियों मे, शानो शौकत मे या भोग-विलास मे लगायेंगी और कुछ दिन बात नारा देंगी, बिल्कुल धर्म ग्रंथो की तरह "क्या लेकर आये हो, क्या लेकर जाओगे"।

आज डायनामाइट बनाने वाली यह कंपनी सुरक्षा (एवं बीमा के बारे मे भी) सुरक्षा के मामले में दुनिया मे एवं भारत में भी बहुत सारी कंपनियों मे जिसमे देश की नवरत्न एवं महारत्न कंपनी भी शामिल है, को आधिकारिक रूप से सलाह देने का काम भी करती है।

सभी तरह के बीमा की जरूरत तभी तक है, जब तक हम बेवकूफ हैं। हम पूरी तरह से समझदार नहीं हो सकते हैं इसलिए बीमा की जरूरत तो रहेगी, कितनी, यह हमारे ऊपर है। सभी राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक इसके अतिरिक्त गरीबों का, नेताओं का कोई बीमा कंपनी बीमा नहीं करती-उनका बीमा तो भगवान ही करते हैं-इसलिए बीमा संवाद का विषय है कितना कब, कहां, किससे और कब नहीं, और कितनी सुरक्षा एवं सुरक्षित माहौल-कितना प्रयास-कितना साहस और कितना इन सब पर खर्च। ***

परिशष्ट-9.12

समाज में नागरिकता-कौन अपना, कौन पराया

प्रश्न: आज जो समाज में नागरिकता-कौन अपना, कौन पराया, किसको अपनाना है, किसको भगाना है, कहाँ भगाये, भगा ना सके तो कहाँ रखे यह चर्चा छिड़ी हुई है, इसमें आप का क्या कहना है?

उत्तर: उपरोक्त प्रश्न के सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रस्तुत है (उदाहरण के तौर पर भारत में प्रचलित विभिन्न आयामों को लिया है): यह राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आज एक गंभीर एवं नयी समस्या के रूप में उभरा है। इस प्रश्न को तीन-चार तलों पर लेने की आवश्यकता है, भारत की स्थिति, विज्ञान एवं धर्म की स्थिति, भौगोलिक एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति।

1. भारत एक भौगोलिक स्थिति भी है और एक आध्यात्मिक एवं धार्मिक स्थिति भी है, भारत आज भी पूरी दुनिया में एक मात्र स्थान है जो सही मायने में धर्मनिरपेक्ष-ना ही किसी धर्म के सापेक्ष, ना ही अधर्मी और ना ही धर्म से रहित है। दुनिया के अधिकांश देश या तो किसी ना किसी धर्म की पट्टी लगाए रखते हैं या वह सेकुलर है जो पैसे के लेन देन का महत्व देती है।

2. दुनिया में आदिवासी बहुत कम बचे हैं जो प्रकृति के रोजमर्रा की जिंदगी को, पहाड़ों, नदियों, सूर्य, चंद्र को अपना भगवान मानते हैं। ऐसी स्थिति में भारत की महत्वपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका बनती है। नागरिकता, अतिथियों और दूसरे देशों में सताए हुए इंसानों, अत्याचारियों, उत्पातियों के संबंध में भारत का निर्णय महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसे में बिना दूरगामी स्थिति का आकलन किए, भूतकाल की घटनाओं, दुर्घटनाओं के आधार पर लिया निर्णय या वर्तमान की परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए लिया गया कोई भी निर्णय, ना भारत की स्थिति को स्पष्ट करेगा और ना ही भारत को सुदृण करेगा।

पूरी दुनिया पर यदि आज अमेरिका की साख है तो कभी यह सोवियत संघ एवं अमेरिका की रही, कभी यह इंग्लैंड, स्पेन, पुर्तगाल की रही, कभी यह मिश्र, रोम की, तो कभी अफ्रीका, लैटिन अमेरिका की और कभी यह चीन की या भारत की, अत: यह समझने का कोई कारण नहीं बनता की कोई प्रजाति ज्यादा कमजोर है या कोई देश के नागरिक ज्यादा ताकतवर है और बुद्धिमान, सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि यह समय समय की बात है-या कुछ राष्ट्र अपने ताकत के नशे में निरंकुश हो गए हैं और उन्हें जनता ने हटा दिया, या किसी राष्ट्र ने सुरक्षा की अतियों में अहिंसा का मार्ग अपना लिया, राजपाट भोगने से ऊबने के कारण साधु संतों की तरह दान पाने की आशा में भिखारी की तरह जीवन बिताना शुरू किया और अपने राज्य के नागरिक को अपने अनुयायियों को बर्बाद, भिखारी एवं गुलाम हो जाने दिया।

इन सारी परिस्थितियों ऐतिहासिक तथ्यों-वर्तमान में देश की हालत पूरी दुनिया में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिवेश की स्थिति तथा भारत जो अपने नाम भारत-(भा+रत) प्रकाशित करने में, रोशन करने में संलग्न रहने वाला भी जाना जाता है को ध्यान में रखते हुए,

नागरिकता से जुड़े हुए हर मुद्दे पर निर्णय ले एवं उसे क्रियान्वयन करें यही भारत की गरिमा बढ़ाएगा, भारत को फिर से स्थापित करेगा।

2. नागरिकता का प्रश्न पूरा का पूरा धार्मिक संबंधों, देश की धार्मिक मान्यताओं, परंपराओं, गिरावट, उत्थान से जुड़ा हुआ है तब यह आवश्यक है कि हम धार्मिक संवाद की प्रथम दृष्टया की अहमियत को समझें एवं व्यापक पैमाने पर देश के हर कोने में धार्मिक संवाद करवायें।
वर्तमान इतिहास के पच्चीस सौ वर्षों में बहुत कोशिश हुई कि कुछ धर्मों को (मूलत: उन धर्मों को जिनसे बाकी धर्म उपजे हैं) मिटा दिया जाए, लेकिन ऐसी कोशिशें ना आज तक सफल हुई है और सिवाय धर्म की पुर्न:परिभाषा के अलावा किसी और मार्ग से इनसे निपटा जा सकता है।
ऐसे संवाद में हो सकता है, शुरुआत में गहमा-गहमी हो, सभी अपने आप को श्रेष्ठ साबित करें, अपरिवर्तनीय बताएं, दूसरे को कमजोर, निकृष्ट साबित करें, लेकिन कुछ दिनों बाद यही संवाद सहमति का रूप लेगा, कुछ परिवर्तनों के लिए-कुछ एकीकरण के रास्ते के लिए, और कुछ सहयोगात्मक कार्यो के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

3. राष्ट्रीय स्तर पर यह जरूरी है कि सुरक्षा का वातावरण बना रहे ना केवल पुलिस, सेना, प्रशासन एवं न्याय व्यवस्था के डर से बल्कि व्यक्ति एवं समाज की सामर्थ्य के बल पर जिसके लिए आवश्यक होगा कि सामाजिक स्तर पर अस्त्र-शस्त्र रखे जाये, (व्यक्तिगत नहीं जैसा कुछ देशों में है) यह अस्त्र-शस्त्र भी शुरुआत में हो सकता है कुछ दिक्कत दे लेकिन लंबी दूरी के लिए यह एक आवश्यक कदम है। यह अस्त्र-शस्त्र धार्मिक स्थलों पर धर्म निरपेक्ष भाव से सभी की शिक्षा दीक्षा (सुरक्षा के क्षेत्र) में उपलब्ध कराए जा सकते हैं, यह कदम देश के लिए एक अतिरिक्त एवं सहज अर्ध सेना का काम देगा जो आपदा प्रबंधन में भी काम कर सकती है।

4. पिछले बहुत वर्षों से भारत-अप्रवासी भारतीय एवं भारतीय मूल के लोगों को बुलाकर (एन. आर.आई. एवं पी.आई.ओ.) उनका स्वागत कर रहा है, ऐसे में बड़ा अजीब लगता है कि हम जो अपने आप भारत में चल कर आ रहे हैं उन्हें तवज्जो नहीं दे रहे हैं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश,

श्रीलंका, बर्मा-म्यांमार, मालदीव से आया हर इंसान अप्रवासी भारतीय भी है (सन उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले सब एक थे) और मूल भारतीय तो है ही, ऐसे सभी इंसानों को नागरिकता देने के बारे में सोचने का भी प्रश्न नहीं है, कोई इंसान अपने माता-पिता के घर में कैसे पराया हो सकता है चाहे वह अपना अलग घर ही क्यों ना बना चुका हो।

5. इस नागरिकता देने धार्मिक संवाद कराने के साथ-साथ भारत को अपने से अलग हुए (विभाजित नहीं) राष्ट्रों से एकीकरण के प्रयास शुरू करने होंगे।

6. भारत को अपनी नीति किसी दूसरे राष्ट्र के आंतरिक मामले में दखल अंदाजी ना देने के सिद्धांत का पुर्नावलोकन करना होगा, क्योंकि बहुत सारे पलायन, नरसंहार, अत्याचार, पड़ोसी देशों में हो तो उसका परिणाम हमें भी भुगतना पड़ता है इसके साथ यह मानवीय व्यवहार भी नहीं है। कई देशों के साथ दोहरी नागरिकता के बारे में विचार जरूरी होगा, जो वहाँ के साथ हमारे संबंधों पर निर्भर होगा।

7. दुनिया में आज बहुत सारी कवायद एक नए एवं व्यापक विश्व युद्ध की चल रही है, जिसमें हो सकता है कि भारत से आशा हो कि वह पहले दो विश्व युद्धों की तरह अपने जवानों को भेजें जो किसी एक जाति विशेष या धर्म विशेष (जैसे द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदी) को खत्म करने में अपना सहयोग दें, ऐसे में यह कोशिश की हर नागरिक का डी.एन.ए. एवं आर.एन.ए. का रिकॉर्ड रहे, किसी भी एक समूह के लिए ही घातक नहीं होगा बल्कि एक सौ तीस करोड़ आबादी के पूरे राष्ट्र के लिए सर्वनाश का विषय होगा, अतः ऐसे किसी भी नागरिकता रजिस्टर से बचना होगा, आधार कार्ड पर्याप्त है और इसके अतिरिक्त बहुत सारी सामाजिक व्यवस्थाएं तो है ही।

8. आज जो भी भारत में आ गया, हम समझे वह चला जाएगा, जहां से वह आया वह राष्ट्र उसे आदर सत्कार या वैसे ही ले लेगा यह अजीब लगता है, ऐसी सोच के साथ कोई भी शरणार्थी शिविर व्यर्थ की कवायद, फालतू का खर्चा है, एवं निर्णयों को टालने वाला ही होगा जिससे बचना एक समझदारी वाला कदम होगा।

9. रोजगार देना सरकार का कार्य नहीं है सरकार नागरिकता के विषय पर सीधे-सीधे समाज से सहयोग की अपील कर सकता है इसके साथ-साथ मशीनों को कम करके समाज की भूमिका बदलकर बहुत संख्या में रोजगार पैदा किए जा सकते हैं।

10. भारत को अपने सारे नियमों का पुनरावलोकन करना होगा क्योंकि आज भी कानून व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, माध्यमों की स्वतंत्रता, न्यायिक व्यवस्था भारतीय नहीं लगती-और यह सरकारों की सामाजिक एवं मानसिक गुलामी को प्रदर्शित करती है और यह उपनिवेशवाद की जगह 'नए उपनिवेशवाद, से लुटने-कुटने, पिटने का रास्ता बनाए हुए हैं बजाय लूटने-कूटने एवं पीटने के जो दोनों ही ठीक नहीं है। सुदूर देशों से आए हुए शरणार्थियों के लिये भी नियमों को लचीला बनाना होगा क्योंकि वह आपके यहाँ आपका अपना बनने आ रहे है।

उपरोक्त विचारार्थ निवेदित है। ***

परिशिष्ट-9.13

गाय एवं नंदी की दशा हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करती है

प्रश्न: गाय एवं नंदी की वर्तमान दयनीय दशा देखकर हमें इस वात पर बहुत आश्चर्य होता है की गाय-नंदी लोगों के लिए पूज्यनीय भी कही जाती है, इस बाबत आपका क्या कहना है?

उत्तर:- उपरोक्त प्रश्न के सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. विश्व में काफी लोग शिव मंदिर में नंदी की पूजा करते हैं। नंदी को शिव की सवारी कहते हैं। सर्वप्रथम दुर्वासा ऋषि ने नंदी की सहचरी गाय को माँ कहा और तब से आज तक भारत एवं विश्व में परंपरागत रूप से गाय को माँ ही समझते हैं मानते हैं, जानते हैं ।

नंदी-सांड की ताकत आज भी स्पेन में, कुछ जगह तमिलनाडु में जहां सांडो की लड़ाई होती है, से अंदाजा लगाया जा सकता है, कहते हैं यह शेर से भी लड़ने में कतराते नहीं है। आज ना शेर बचे हैं, ना ही नंदी और ना ही जंगल, अतः इसका आकलन करना मुश्किल है। कहते हैं पहले नंदी ही खेती में सहयोग देते थे, गाय का दूध जैसे सारे प्राणी जगत में उसके बच्चे ही पीते हैं वैसे ही गाय का दूध गाय के बछड़े पिया करते थे।

कभी-कभार कोई माँ अपने अतिरिक्त दूसरे किसी और के बच्चे को पाल लेती है, ऐसे ही गाय के दूध से इंसान के बच्चे पल जाया करते थे और इंसान के बच्चे जिसकी माँ या माँ का दूध असमय खत्म हो जाता था, के जीवन की बढ़ोतरी में कोई अंतर नहीं आता था इसलिए ऐसे बच्चों के लिए वह गाय माँ ही होती थी या है और होगी एवं परिवार के अन्य सदस्यों के लिए इस बच्चे की माँ की तरह, आदरणीय रहती थी, पूजनीय रहती थी।

देश एवं दुनिया के उन इलाकों में जहां रेगिस्तान है, जहां बर्फ और जहां पहाड़ी है वहां गाए एवं नंदी के रहने लायक जलवायु वातावरण ही नहीं है, ऐसे स्थान पर जहाँ गाय एवं नंदी नहीं रह सकते हैं वहाँ उनकी मनुष्य के जीवन में सहभागिता का प्रश्न ही नहीं उठता। जैसे गाय का वैसे ऊंट का, शेर का सभी के लिए रहने के स्थान है और वहीं उनका सम्मान है, दूसरे स्थान पर वह एक कौतूहल का विषय हो सकते हैं, या चिड़िया घर में रखने की वस्तु।
पिछले बीस वर्षों के अपने भ्रमण में देश में एक ही जगह छोटा-नागपुर के मध्य आदिवासियों के बीच ऐसी मिली जहां गाय का सम्मान इसलिए होता है कि उसका बछड़ा खेती करता है, वहां गाय का दूध बछड़े को ज्यादा पीने देते हैं। वह कहते हैं की यदि बछड़ा मां (गाय) का दूध नहीं पीयेगा तब उसमें ताकत कैसे आएगी और फिर वह बड़े होकर खेत में अन्य जानवर से अपनी सुरक्षा कैसे करेगा एवं खेती में सहयोग कैसे देगा।

इस इलाके में कुछ ऐसी भी जगह है, जहां के आदिवासी नंदी को नंदी ही रहने देते हैं उन्हें बधिया कर बैल नहीं बनाते वह कहते हैं यह परिवार का हिस्सा है इससे हमें डर नहीं है बल्कि वक्त आने पर छोटे-मोटे जंगली जानवर से हमारी सुरक्षा भी करता है, वह यह भी कहते हैं कि इसे अगर बधिया कर बैल बना देंगे तब यह काम तो कर लेगा लेकिन अपनी एवं हमारी सुरक्षा नहीं कर पायेगा। नंदी को बधिया करने के बाद, बैल बना नंदी एवं बाकी गाय बछड़े उदास रहते हैं, पूरे घर एवं कुनबे का माहौल कुछ अजीब सा रहता है। उन इलाकों में जहां नंदी को बधिया बना देते हैं वहां एक अजीब सा विकर्षण रहता है, क्रोध एवं असहायता का गुस्सा होता है। पता नहीं लोग इतने क्रूर कैसे हो जाते हैं ऐसे लोगों को प्रकृति का बहुत श्राप तो लगेगा ही।

<u>इस सम्बन्ध में अन्य बातें निम्न है:</u>

i. लोग जब कमजोर हो जाते हैं तब उन्हें नंदी से डर लगने लगता है, जब वह पलायन वादी हो जाते हैं और छद्म शांति की बात कहने लगते हैं और शांति का पाठ लोगों को पढ़ाना शुरू करते हैं। इसका परिणाम यह होता है की ऐसे पलायनवादी व्यक्ति दूसरों को शारीरिक एवं गुलाम बनाने की प्रक्रिया में अग्रसर होने लगते है, क्योंकि जब कोई भी शारीरिक रूप से बधिया एवं मानसिक रूप से गुलाम हो जायेगा तब उसे कहीं भी हांका जा सकता है, उससे कोई भी काम लिया जा सकता है । मानसिक गुलामीएक नपुंसकता की तरह होती है जो वास्तव में तो गुलामी नहीं लगती लेकिन शारीरिकगुलामी से ज्यादा खतरनाक होती है, तुम मेरी मानो, मेरे जैसे हो जाओ, तुम शांति की बात करो, दुनिया में शांति रहे, शेर भी शांत रहे, नंदी भी शांत रहे, यह बहुत लुभावना लगता है, लेकिन इसने ही दुनिया को बर्बाद किया है,तुम बौद्ध हो जाओ,मुसलमान हो जाओ, तुम ईसाई हो जाओ, तुम हिन्दू हो जाओ, यह सब क्या है?

यह चलन जब से शुरू हुआ लगभग पच्चीस सौ वर्ष पहले तभी से नंदी को बधिया किया जाना, स्त्रियों को पुरुषों से अलग करना, स्त्रियों की तुलना गाए से की जाती थी और पुरुषकी तुलना पहले जो नंदी से होती थी वह बैल से होने लगी। गाय वंश के प्रजनन के लिएकुछ नंदी रखे गए और बाकी सब को

बैल बना दिया गया। इस तरह समाज में कुछ पुरुषों को सैनिक,योद्धा बने रहने दिया, बाकियो को शांति का पाठ पढ़ा कर मानसिक गुलाम बनाकर ठीक उसी तरह इस्तेमाल किया जाने लगा जैसेबैलों को, समाज में, व्यभिचार, नपुंसकता,कदाचार, अनाचार एवं भ्रष्टाचार इसका स्वाभाविक परिणाम है।

भारत में सबसे पहले मानसिक गुलाम बनाकर धर्म काप्रचार किया गया जिसे राज्यों का आश्रय भी मिला,बाद में यह बलपूर्वक हुआ, शारीरिक गुलाम बनाकर मानसिंक गुलामबनाया गया एवं धर्म का (उपयोग वाद का) प्रचार प्रसार किया गया।

ii. जब से चाय-कॉफी में दूध मिलाने का चलन चला है तब से गायों की संख्या में बढ़ोतरी और नंदी की संख्या में, बैलों की संख्या में कमी आयी है। और जब से चाय-कॉफी के साथ ट्रैक्टर का भी चलन बड़ा है तब से बछड़े को जन्म के कुछ दिन बाद ही जब गाय संभल जाती है तब भूख से ही मार दिया जाता है।

गायों में कृत्रिम गर्भाधान, दूध निकालने के इंजेक्शन एवं मशीनों के प्रयोग से गाय के लिए खूब सारी घास को पैदा करने के लिए रासायनिक खाद व कीटनाशकों के प्रयोग से जहां एक और दूध में कीटनाशक एवं बाद में दूध को फटने से बचाने के लिए कास्टिक सोडा को मिलाने के कारण कैंसर एवं दूसरी बीमारियों की शिकायतें बढ़ी है, वहीं इन रासायनिक एवं इंजेक्शन के कारण गायं जहरीली होनी लगी, जिससे गाय के मरने के बाद इन्हे गिद्ध द्वारा खाये जाने से गिद्ध की पूरी प्रजाति ही लगभग लुप्तप्राय हो गई।

सामान्य स्थिति में एक सामान्य गाय-अपने जीवन में चार बार प्रजनन करती है, और एक प्रजनन से दूसरे प्रजनन के मध्य उतना अंतर होता है जितने समय वह दूध देती है-जो करीब तीन से पाँच वर्ष का होता है, लेकिन आज दूध की आवश्यकता बढ़ने से प्रजनन का अंतर कृत्रिम गर्भ द्वारा एक से दो वर्ष कर दिया गया है-जिससे गाय जल्दी-जल्दी प्रजनन करती है जिस कारण वह जल्दी बूढ़ी हो जाती है, और सडको पर खुली छोड दी जाती है। जिसे कोई मुफ्त में या सस्ते दामों में खरीदकर गाय के ऑटोमेटिक प्लांट में कटने के लिए भेज देता है।

मशीन से दूध निकालने में कई बार दूध के साथ (यदि दूध कम हुआ तो खून भी निकल आता है-ऐसे में गाय और उसका दूध पीने वाला दोनों का बीमार होना स्वाभाविक है, मेड काऊ (Mad cow direase) गायों के पागलपन की बीमारी इसी वजह से फैली थी।

iii. गाय के संबंध में भारतीय सुप्रीम कोर्ट का दो हजार पाँच का निर्णय एवं आदेश देखने योग्य है, जो गाय प्रेमियों एवं कसाइयों के मध्य चले उन्नीस सौ अठान्वे के एक प्रकरण में दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को व्यक्तियों ने, समाजो ने एवं सरकार ने कितनी इज्जत दी यह तो पंद्रह वर्षों मे आंकड़ों से परिलक्षित हो जाता है, लेकिन यह निर्णय उन लोगों के लिए जरूरी है, जो आज भी इस प्रकरण में धर्म को लायेंगे, विदेशी मुद्रा, उपयोगवाद के लाली पॉप की चर्चा करेंगे। और गाय को उपयोगी बतायेंगे।

iv. पिछले एक सौ पचास वर्षों में गाय के मांस का सेवन बड़ा है इसका विदेशी व्यापार बड़ा है। पिछले सत्तर वर्षों में सरकार कोई भी आई हो हर वर्ष गाय के मांस का निर्यात बढ़ा है। साधु संत एवं धार्मिक संगठन सिर्फ बात करना बंद करें और इस बात पर ध्यान दें कि जितनी गायें दिखायी देती है-उतने सांड़ दिखायी नहीं देते, तो वह कहाँ जाते हैं? कत्ल खाने में गाय पहुंचती कैसे हैं कोई कत्लखाना गाय पालता तो नहीं, तब जाहिर है लोग गायों को बूढी होने पर छोड़ देते होंगे और कत्ल खाने के व्यापारी इन्हें हांक कर ले जाते होंगे और बेचते होंगे।

v. चाय कॉफी के सेवन के कारण चीनी, चाय पत्ती, कॉफी, दूध के लिए गाय और गाय के लिए चारेे के कारण जंगल कटे हैं, मौसम बिगड़ा है, बाढ़, सूखा, पहाड़ खिसकना बे-मौसम की बारिश जैसे अभिशाप बड़े हैं। गाय एवं गोवंश पर अत्याचार सारी सीमाओं को लांघ गए हैं और इस पाप में लगभग पूरी मानव जाति शामिल है और भारत की भूमि विशेष रूपसे भागीदार है और अपराधी है।

vi. भविष्य पर एक नजर डालते हैं तो आज इंसानों में कृत्रिम गर्भाधान शुरू हो गया है जेनेटिक्स एवं क्लोनिंग द्वारा सब्जियों फलों का आकार बड़ा ही दिया गया है, ऐसे में अगर कल के दिन इंसानों में

अगर आज के इंसानों से दोगुने आकार के इंसान हो जायें तब वह कहेंगे कि इतने सारे पुरुषों की क्या आवश्यकता है, कुछ पुरुष ही काफी है प्रजनन के लिए, और कृत्रिम गर्भाधान से हो ही जाएगा और इसके अलावा भविष्य में इस क्षेत्र में कुछ और भी हरकत हो सकता है ऐसे में पूरे वैज्ञानिक विकास पर कृत्रिम गर्भाधान पर दूध के उपयोग पर संवाद जरूरी है, हमारे लिए नहीं तो आने वाली संतानों के सुखद भविष्य के लिए।

vii. भारत में कहते है १८५७ की क्रांति के पीछे मंशा कुछ भी रही हो लेकिन कहा जाता है कि हिन्दू सैनिकों के बीच यह बात फैलाई गयी, एवं मुस्लिमो के बीच यह कि कारतूसों में गाय-तथा सुअर की चर्बी /खाल होती है। गाय की चर्बी की जिस बात को लेकर एक क्रांति हो सकती है-सभी को आश्चर्य नहीं होता है कि आज वह गाय के मांस का दुनिया में सबसे बड़ा उत्पादक/निर्यातक है। कहते है-१८९४ में दयानंद सरस्वती के नेतृत्व में गो हत्या को लेकर हिन्दु मुस्लिम एक थे, उसके बाद अंग्रेजो ने यह सुनिश्चित करवाया कि यह तो मुस्लिम कसाई ही हो-और यह प्रचारित करवाया कि यह तो मुस्लिम है जो गाय को काट रहे है, और हिन्दु मुस्लिम में विरोध बढाया-और गो माँस का व्यापार बढ़वाया।

1. हमारे सामूहिक विचार विमर्श एवं परिस्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक कार्यों के सम्बन्ध में निम्न प्रेषित है:

i. दूध की चाय कॉफी का चलन सामाजिक राष्ट्रीय कार्यालय एवं स्थानों पर बंद हो। समाज में दूध के चाय काफी का प्रचार बंद हो, काली चाय /कॉफी, नींबू वाली चाय चल सकती है, इस पर संवाद ही नहीं सहयोगात्मक कार्य भी हमारे वर्तमान एवं भविष्य के लिए अनिवार्य होगा, कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन अतः हमें अपना अन्य शुद्ध रखना होगा तभी हमारा मन ठीक रहेगा।

ii. बैल बनाने की प्रक्रिया बंद हो। कृत्रिम गर्भाधान बंद हो। जो गाय पालने की इच्छा रखते हो वह नंदी भी पाले। गो-पालन व्यवसाय के रूप में बंद हो, ना ही इसके लिए लोन ना ही कोई सहायता राशि।

iii. पंचगव्य : एक समुदाय कहता है-गाय के पंचगव्य से (गोबर, गोमूत्र, दूध, दही एवं घी)-बहुत उपयोगी है-इसमें बहुत सी चिकित्सीय गुण है। वही दूसरा समुदाय कहता है-अरे गाय के पंचगव्य तो उपयोगी है ही-इसके अतिरिक्त उसके दूसरे पंचगव्य (मांस, खाल, हड्डियां, खुर, सींग) इसमें बहुत जैवकीय गुण है। प्रथम समुदाय गाय को बांध कर जीते जी दुख देता है और दुसरा मारते समय, नंदी को भूख से मारता है। यह समुदाय नंदी की बात नही करता।

iv. एक समुदाय कहता है-गाय को मारना पाप है, जिसको पालते है उसको मारते नहीं (अपने पालन को कौन मारता है) उसका मांस नहीं खाते। दूसरा समुदाय कहता है-हम गाय का मांस खाते है इसलिए हम गाय पालते नही। तीसरा समुदाय कहता है-हम ना गाय को पालते है ना हम गाय का मांस खाते है हम सिर्फ ऑटोमेटिक प्लांट में गाय को काटते हैं, पैक कराते हैं और बेच देते है। इन तीनो समाजों में कौन ज्यादा पाखंडी है कहना मुश्किल है?

v. नकेल (नाक में रस्सी बांधना) इतनी ताकतवर इतनी छोटी होती कि यदि गाय की जगह इंसान हो तो वह जीते जी मृत्यु की कामना करें। गायों को इन तथाकथित गाय पालने वाले गाय प्रेमियों ने तथाकथित गाय का मांस खाने वालों से ज्यादा दिक्कत दी है।

यदि किसी इंसान (मुझे ही क्यों न) को बांध कर रखे, खाने के लिए मेरी मर्जी का खाना न दे, मेरे परिजनों से मुझे मिलने न दे, बच्चों को बधिया कर दे, तब ऐसे में जो मुझे मारेगा वह मेरी मुक्ति ही करेगा, फिर वह मेरे मरने के बाद मेरा अंतिम संस्कार (गाय का माँ की तरह) करे या मेरा मांस खाये, खाल खींचे, हड्डियों का चूरा बनाये मुझे क्या फर्क पड़ता है।

गाय की हम इज्जत करते है, उसे माँ समझते है तो गाय वंश को इन तथाकथित गाय मांस खाने वाले, काटने वाले शैतानो से ही नहीं इन तथाकथित गाय पालने वाले, गाय प्रेमियों से भी मुक्ति चाहिए।

vi. दूध जब से बिकने की वस्तू हुई तब से गाय उपयोगी हो गयी, कोई माने या न माने गायों की या किसी की दशा या दुर्दशा तभी शुरू होती है जब वह- बिकने की वस्तु हो जाती है-जैसे गाय, भैंस, बकरी अन्य जानवर गुलाम, ज्ञान-विज्ञान। जब समाज में इतना कुछ बिक जाता हो-वहाँ लोगों का यह बोलना स्वाभाविक है कि हर चीज बिकती है खरीदार चाहिए। खरीदार को पता होना चाहिए कि वह वस्तु-इंसान या जानवर कहाँ मिलता है। ऐसे में जो यह कहते है कि हर चीज नही बिकती-वह दुखी रहते है, अपमानित होते है या मार दिये जाते है।

vii. तथाकथित गाय प्रेमियों पालने वाले और गाय मांस को खाने वालों में बहुत से समानता दिखती है। गाय पालने वाला कहता है-गाय बहुत उपयोगी है, इसलिए हमने गाय को माँ कहा है, गाय के पंचगव्य से (मूत्र, गोबर, दूध, दही व घी) मनुष्य का कल्याण होता है।

गाय मांस खाने वाले ऐसा कुछ नहीं कहता, वह सिर्फ गाय पालने वालों को दूध वाली चाय/ कॉफी की आदत डलवाना है, गाय पालने के लिए लोन दिलवाता है-और प्रचार करवाता है। गाय पालो खुब गाय पालो, यदि तुम गाय नहीं पालोगे तो हमे मांस खाने को कैसे मिलेगा, खाल कैसे मिलेगी, हड्डियों का चूरा कैसे मिलेगा। मांस खाने वाले खुद बिना दूध की चाय पीते है। गाय का मांस खाने वाला ज्यादा चतुर/बदमाश नजर आता है, गाय प्रेमी परिश्रम करता है, परेशान रहता है, कोई अहिंसक ऑटोमेटिक प्लांट से मांस तैयार करता है और वह आराम से इन सब की मेहनत को गाय मांस के रूप में खाता है।

गाय प्रेमी शान के साथ कहता है कि देश मे इतना दूध उत्पादन होता है, गाय के दूध की नदियां बहाने की बात करता है, और वहाँ कोई आटोमेटिक प्लांट वाला गाय का मांस खाने वालों के लिए गाय के खून की नदिया बहाता है।

viii. गाय के विषय में यह बात भी सोचने वाली है कि अगर गाय न कटी होती नंदी बचपन में ही नाही मारे गये होते तो उन गायों, नदियों का क्या होता-जिन्होने दूध देना बंद कर दिया।

तब देश में कितनी गाय होती-उनके खाने का क्या होगा? यह प्रश्न विचारणीय है, जब आज के दिन में गांवों से लेकर दिल्ली तक में गाय कचरा-खाती दिखती है। कोई मौसम हो-सर्दी, गर्मी, वर्षा वह खुले में दिखाई देती है। क्या यह समाज का विषय नहीं है।

ix. भारत में कहते है भोले की फौज करेगी मौज, यह तभी संभव है जब नंदी उनके साथ पलेगा, स्त्रिया तभी सुरक्षित रहेगी एवं इज्जत पायेगी जब गाये इज्जतदार व्यवहार पायेगी और बच्चे भी ताकतवर होंगे जब गाय के बच्चे भी ताकतवर होंगे।

किसी का हिस्सा छीन कर कोई लम्बे समय ताकतवर नही रह सकता उसका बरबाद होना पक्का है-शुरुवात हमें ही करनी है-एक सुखद वातावरण बनाने की। बढो का सम्मान, की छोटा को प्यार, कमजोरो की देखभाल यही सही है।
मनुष्य के पाँच माँ बाप कहे जाते है –
1. जन्म देने वाले माता-पिता 2. धरती माता-आकाश पिता, 3. गंगा माँ (नदियाँ)-समुद्र पिता 4. गाय-माँ-नंदी पिता, 5. मातृभाषा-तरंगे (vibration)-शब्द ब्रह्म पिता

x. प्रकृति आगे चले, माता-पिता का सम्मान, एवं आशीर्वाद बना रहे यह तभी संभव है-यही व्यक्ति का कर्म है-धर्म है स्थानीय से सभी स्तर पर, यही शाश्वत कर्म है- सनातन कर्म है यही धर्म सनातन है।

गाय एक पूरी-की पूरी संस्कृति है, जैसी स्थिती गाय-नंदी के होगी-वैसी है स्थिती पूरे मानव समाज की होगी, जो व्यक्ति, परिवार, समाज स्थिती ठीक करने के बारे में सोचता है-संलग्न है-उसे यह ध्यान रखना उचित रहेगा। कि कैसे जिन्हें वह पूजता है-उनका लोग अपमान करते है, उसके साथ अत्याचार करते है और फिर उसे मारकर खा भी जाते है वह भी धार्मिक अनुयायियों के सहयोग से।

गाय माँ एवं नंदी, शिव के गण को नाराज करके हम ठीक नहीं रह सकते यह धार्मिक वक्तव्य हो सकता है लेकिन जंगलों में बैठे बुजुर्गवार यही कहते हैं। ***

परिशिष्ट-9.14

<u>समाज एवं राष्ट्र का मुखिया कैसा होना चाहिए</u>

प्रश्न: कृपया हमें समाज एवं राष्ट्र के मुखिया के बारे में बताएं कि वह कैसा होना चाहिये,क्या उसका चुनाव होना चाहिए या चयन होना चाहिए। वह कौन सी संस्था हो सकती है और उन संस्थाओं में वह कौन से व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हो सकते है, जो मुखिया को चुन सके या चयन कर सके और मुखिया को विकसित कर सके, एवं मुखिया की अहमियत के बारे में भी बताएं एवं यह भी की समाज में सर्वानुमति से काम नहीं चल सकता है, जिससे मुखिया की आवश्यकता ही ना रहे?

उत्तर: 1. कहते है वह मुखिया सर्वश्रेष्ठ है जिसके पास शैतान एवं संत दोनों शरण पाते हो, जिसकी बात शैतान एवं संत दोनों मानते हो और शैतान एवं संत दोनों ही इसकी प्रशंसा करते हो, पूजा व आराधना करते हो। [धार्मिक क्षेत्र में आता है की शिव की पूजा शुक्राचार्य जी (वह धर्म एवं अनुयायी जो शुक्रवार को महत्व देते है के मुख्य गुरु) एवं बृहस्पति (जो सनातनी परंपरा को मानते है एवं शिव को भी पूजते है) दोनों ही करते है, कहतें है शिव के कहने से ही दोनों पक्ष मंथन के लिए तैयार होते है]।

2. वह मुखिया श्रेष्ठ है जो माँ की तरह प्यार दुलार ख्याल रखें एवं पिता की तरह रक्षा करे, -वह जो माँ एवं पिता का सम्मिलित रुप हो ऐसे अर्धनारीश्वर की कल्पना एक मुखिया के रूप में इस समझ के कारण भी आती है।

3. वह मुखिया अच्छा है जो शरीर में मुख की तरह हो "मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान मे एक, पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक"। मुखिया शरीर मे मुख की तरह होना चाहिए, जो खाता पीता तो स्वयं है लेकिन पूरे शरीर को विवेक के साथ पालता-पोसता है, ऐसे ही मुखिया समाज के लिए होना चाहिए।

4. कुछ कहते है की मुखिया एक संस्था होती है, जिसका एक चेहरा होता है, जो महात्माओं द्वारा आशीष दिया हुआ होता है, गुरुओं द्वारा शिक्षित, दीक्षित एवं परीक्षित किया हुआ होता है, हर क्षेत्र के महारथियों द्वारा संभाला हुआ, ज्ञानियों एवं विज्ञानियों द्वारा सहयोगित, समर्थकों द्वारा आगे बढ़ाया हुआ एवं आमजन द्वारा माना एवं पुनः: प्रेषित किया जाता है।

इसमे यदि आम जन एवं उनके आस-पास की आबोहवा ठीक है तो कहाँ जा सकता है की मुखिया ठीक है और यदि आम जन एवं आबोहवा (सारी संस्थाएं, जल, जमीन, जंगल, आदिवासी एवं भौगोलिक क्षेत्र के जलचर, थलचर और नभचर) ठीक नहीं है, तो कहा जा सकता है की सिर्फ मुखिया ही नहीं मुखिया के साथ चुनाव एवं चयन की संस्थाएं भी ठीक नही।

कुछ कहते है जैसा दिल होगा धीरे-धीरे चेहरा भी वैसा हो जायेगा, जैसा दिमाग होगा वैसा शरीर हो जायेगा। कुछ कहते है जैसी व्यवस्था होगी वैसे ही संस्थायें होगी और जैसी संस्था होगी उसके अनुसार उसके मुखिया होंगे और यह मुखिया व्यक्तिगत कारणों से थोड़े अच्छे या थोडे खराब की श्रेणी में आ जायेंगे।

5. कुछ ज्ञानीजन यह भी कहते हैं कि मुखिया एवं मुखिया को विकसित, व्यवस्थित करने वाली सारी संस्थाएं एवं संस्थागत सदस्य को नीतिगत होना चाहिए और उसे वैसे ही चालित-प्रचलित होना चाहिए जैसे विदुर ने कहा और फिर बहुत से महान व्यक्तियों जैसे प्लेटो-सुकरात, कन्फ्यूशियस-लाओत्से, पायथागोरस एवं चाणक्य ने भी अपने-अपने अनुभव से कहा, लिखा एवं आचरित किया।

6. कुछ ज्ञानी यह भी कहते हैं कि मुखिया कोई भी हो अच्छा हो ही नहीं सकता क्योंकि उसे बहुत को दंड भी देना होता है ऐसा व्यक्ति जो दंड दे वह कैसे अच्छा हो सकता है?, कुछ कहते हैं कि किसी भी गधे-घोड़े को मुखिया के आसन पर बिठा दो वह काम कर लेगा -वह कहते हैं वास्तव में तो कुर्सी ही इंसान को बनाती है, वरना इंसान क्या है?

7. बहुत से विद्वान कहते है मुखिया वही जो ग्रंथो के हिसाब से आचरण करे और उसी अनुसार व्यवस्था बनाये एवं उसी अनुसार उसे प्रचालित करे।

कई ज्ञानी कहते हैं "भय बिन प्रीत ना होय गोसाई" बिना भय के प्रीत हो ही नहीं सकती, भय आवश्यक है, जनता में भय रहता है तभी वह अंकुश में, अनुशासन में रहती है यही भय जब परस्पर हो जाता है, जब सभी एक दुसरे से भय रखते है तो वह सभ्यता बन जाती है। कुछ कहते शासक का निरंकुश होना आवश्यक है, क्योंकि शासन से डर तभी लगेगा, और ऐसा मुखिया जिससे उसके राज्य के सभी प्राणी डरते हो, यदि वह धन दौलत जनता को मुहैया करा दे तब उसकी जय जयकार जैसी होने लगती है, चाहे वह धन दौलत दूसरे राज्यों से लूट कर या उनका खून चूस कर, उन्हें बेवकूफ बनाकर, ही क्यों ना लायी गयी हो। ऐसे राज्यों में न्यायालयों में राजकीय पक्ष का पेशकर्ता कहता है की आरोपी को सख्त से सख्त दंड दो जिससे समाज में यह सूचना जायें और कोई दूसरा व्यक्ति इस तरह का जुल्म करने की हिम्मत ना जुटा पाये, सभी व्यक्ति इतना डर जायें।

8. कुछ और है जो कहते हैं कि जन्म से स्वाभाविक मुखिया बनने के गुणों को लिए हुए संगीतमय वातावरण में पला बढ़ा, गुरुओं से परंपरागत रूप से शिक्षित, दीक्षित एवं परीक्षित किया हुआ एवं संत महात्माओं, फकीरो के पास रह कर विशेष रूप से प्रकृति के ज्ञान को समेटे हुए जब बुजुर्गों के आशीर्वाद से आच्छादित कोई व्यक्ति आसक्ती के बिना मुखिया के आसन पर बैठकर जो भी कार्य तटस्थ भाव से करता है वह श्रेष्ठ मुखिया की श्रेणी में आ सकता है।

ऐसा मुखिया बुद्धिमानों का सम्मान करता है, कमजोर को सहारा देता है, सज्जन प्रकृति के लोगों को बढने का अवसर देता है, दुष्ट बुद्धि के लोगों का विनाश करता है, व्यक्ति से ज्यादा संस्थागत कार्य पर ध्यान देते हुए खुद कम से कम काम करता हुआ सर्वानुमति को प्राप्त होता है और सभी मानव जनो के साथ आराम से रहता है, ऐसे रहता है जैसे की समाज में मुखिया है ही नहीं।

9. मुखिया का, राष्ट्र का एवं संस्थाओं का धर्मनिरपेक्ष होना जरूरी है। मुखिया, राष्ट्र एवं संस्थायें धार्मिक नहीं हो सकती, उसका सिर्फ पैसे का वास्ता नहीं हो सकता, ना ही वह किसी के सापेक्ष हो सकता है, कि वह एक तरह के त्योहार उत्सव में जाए, उन्हे मनाये और दूसरे तरह के त्योहार और उत्सव ना मनाये और ना वहाँ जाये, मुखिया, राष्ट्र एवं संस्थाओं को निरपेक्ष होना पड़ता है उसे पूरी तरह धार्मिक एवं पूरी तरह निरपेक्ष होना पड़ता है।

मुखिया की अपनी व्यक्तिगत मान्यतायें और उसकी अपनी प्रार्थनायें निजी होनी चाहिए। सामाजिक तौर में सभी की प्रार्थना महत्वपूर्ण है, इसलिए मुखिया, संस्थान एवं राज्य, देश धर्मनिरपेक्ष ही होने चाहिए - हिंदू, मुस्लिम, ईसाई इत्यादि किस्म के मुखिया, समाज, संस्थान, राज्य, देश एवं दुनिया को खराब ही नही बरबाद कर देते है।

10. यह हमारे संवाद, संवाद पूर्ण सहमति एवं सम्मतिपूर्ण सहयोगात्मक कार्यों पर निर्भर करेगा कि हम सभ्यता बनाते है जो भय खत्म होते ही बिखर के टूट जाती है या सभी मानव, जाती, प्रजाति के समता पर आधारित समाज बनाते हैं और संस्थाओं की पुनः जागृत करते हैं और उन्हीं संस्थाओं के द्वारा अपना मुखिया चुनते हैं। और सनातनी वैश्विक व्यवस्था बनाते है। ***

उपरोक्त प्रस्तुत है,
भगवान हमें आशीर्वाद दें,

बंदना चौधरी

*****